# BIBLIOTHECA INDICA;

A

## COLLECTION OF ORIENTAL WORKS

PUBLISHED UNDER THE PATRONAGE OF THE

Hon. Court of Directors of the East India Company.

AND THE SUPERINTENDENCE OF THE

ASIATIC SOCIETY OF BENGAL.

No. 147.

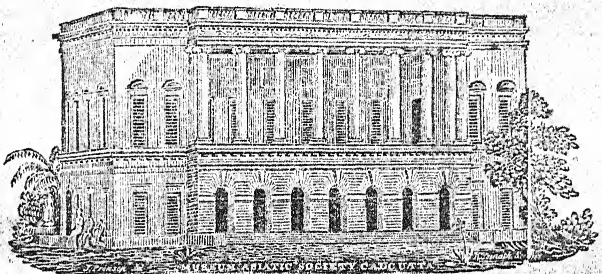

# तैत्तिरीय-ब्राह्मणं।

## कृष्णयजुर्वेदीयं।

सायनाचार्य्यकृत-वेदार्थप्रकाशाख्य-भाष्यसहितं।

कतिपयपण्डितानां साहाय्यमवलम्ब्य

श्री-राजेन्द्रलाल-मित्रेण परिशोधितं।

---

# THE TAITTIRÍYA BRÁHMAṆA

OF THE

## BLACK YAJUR VEDA,

WITH THE

COMMENTARY OF SÁYANÁCHÁRYA,

EDITED BY

RÁJENDRALÁLA MITRA,

WITH THE ASSISTANCE OF SEVERAL LEARNED PAṆDITAS.

FASCICULUS III.

CALCUTTA:

PRINTED BY C. B. LEWIS, AT THE BAPTIST MISSION PRESS.

1859.

*Price 10 Annas per number; 1 shilling 8d., in England.*

ओ३म्

# ॥ ब्राह्मणसर्वस्व ॥

भाग ३ ] उत्तिष्ठतजाग्रतप्राप्यवरान्निबोधत [ अङ्क १

यत्रब्रह्मविदोयान्ति दीक्षयातपसासह ।
ब्रह्मा मा तत्र नयतु ब्रह्माब्रह्मदधातु मे ॥

ब्रा० स० भा०२ अं०१२ से आगे कर्मकाण्ड विषय ।

अनुव्रतःपितुःपुत्रो मात्राभवतुसंमनाः ।
जायापत्येमधुमतीं वाचंवदतुशन्तिवाम् ॥१॥
माभ्राताभ्रातरंद्विक्षन्मास्वसारमुतस्वसा ।
सम्यञ्चःसव्रताभूत्वा वाचंवदतभद्रया ॥२॥
येनदेवानवियन्ति नोचविद्विषतेमिथः ।
तत्कृण्मोब्रह्मवोगृहे संज्ञानंपुरुषेभ्यः ॥३॥

भावार्थः—अथर्व सं० कां० ३ अनुवा० ६ सू० ३० में लिखा है कि पुत्र पिता की आज्ञा में चलने वाला और माता में भक्ति रखने वाला हो। पत्नी अपने पति के साथ मीठी कोमल शान्तियुक्त नम्रता से भरी हुई वाणी बोले जैसे कोई साधारण पुरुष राजा के सामने बोलता है। स्त्री अपने पति को ही राजा मानती हुई व्यवहार करे। भाई भाई से और बहन बहन से द्वेष न करे। संसारी व्यवहार और धर्म सम्बन्धी काम परस्पर मेल रख सम्मति लेकर करते हुए आपस में सब लोग कल्याण करने वाली धर्मयुक्त वाणी को बोलें ॥

# तैत्तिरीय-ब्राह्मण-तृतीयकाण्डस्य सूचीपत्रम् ।

## प्रथमप्रपाठके नक्षत्रेष्टयः ।

### १ अनुवाके देवनक्षत्रयाज्यानुवाक्याकथनम् ।


| | | विषयः । | पृष्ठे । |
|---|---|---|---|
| १ | मन्त्रे | प्रथमदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या.. .. .. .. | २९४ |
| २ | ,, | उक्तनक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. .. | २९५ |
| ३ | ,, | द्वितीयदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या .. .. .. | २९५ |
| ४ | ,, | एतन्नक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. .. | २९६ |
| ५ | ,, | तृतीयदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या .. .. .. | २९६ |
| ६ | ,, | उक्तनक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. .. | २९६ |
| ७ | ,, | चतुर्थदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या .. .. .. | २९७ |
| ८ | ,, | उक्तनक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. .. | २९७ |
| ९ | ,, | पञ्चमदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या .. .. .. | २९८ |
| १० | ,, | एतन्नक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. .. | २९८ |
| ११ | ,, | षष्ठदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या .. .. .. .. | २९८ |
| १२ | ,, | उक्तनक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. .. | २९९ |
| १३ | ,, | सप्तमदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या.. .. .. .. | २९९ |
| १४ | ,, | उक्तनक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. .. | २९९ |
| १५ | ,, | अष्टमदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या .. .. .. | ३०० |
| १६ | ,, | एतन्नक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. .. | ३०० |

| विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|
| १७ मन्त्रे नवमदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या.. .. .. .. | २०० |
| १८ ,, उक्तनक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. .. | २०१ |
| १९ ,, दशमदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या .. .. .. | २०१ |
| २० ,, प्रस्ताविननक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. | २०२ |
| २१ ,, एकादशदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या .. .. .. | २०२ |
| २२ ,, एतन्नक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. .. | २०३ |
| २३ ,, द्वादशदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या .. .. .. | २०३ |
| २४ ,, उक्तनक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. .. | २०४ |
| २५ ,, त्रयोदशदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या .. .. .. | २०४ |
| २६ ,, प्रस्ताविननक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. | २०४ |
| २७ ,, चतुर्दशदेवनक्षत्रीयपुरोऽनुवाक्या .. .. .. | २०५ |
| २८ ,, उक्तनक्षत्रीययाज्या.. .. .. .. .. .. | २०५ |
| २९ ,, पौर्णमासीदेवतापुरोऽनुवाक्या.. .. .. .. | २०६ |
| ३० ,, उक्तदेवतायाज्या .. .. .. .. .. .. | २०६ |


---

## २ अनुवाके यमनक्षत्रेष्टिगतयाज्यानुवाक्योक्तिः।


| | |
|---|---|
| १ मन्त्रे प्रथमयमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या .. .. .. | २०७ |
| २ ,, उक्तेष्टिप्रयोज्या याज्या .. .. .. .. .. | २०७ |
| ३ ,, द्वितीययमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या .. .. .. | २०७ |
| ४ ,, प्रस्ताविनेष्टियाज्या.. .. .. .. .. .. | २०८ |
| ५ ,, तृतीययमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या.. .. .. .. | २०८ |
| ६ ,, एतदिष्टिगतयाज्या.. .. .. .. .. .. | २०९ |
| ७ ,, चतुर्थयमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या.. .. .. .. | २०९ |
| ८ ,, उक्तेष्टियाज्या .. .. .. .. .. .. | २०९ |
| ९ ,, पञ्चमयमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या.. .. .. .. | २१० |

| | | विषयः। | पृष्ठं। |
|---|---|---|---|
| १० | मन्त्रे | प्रस्तावितेष्टियाज्या | ३१० |
| ११ | ,, | षष्ठयमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या | ३११ |
| १२ | ,, | उक्तेष्टिप्रयोज्या याज्या | ३११ |
| १३ | ,, | सप्तमयमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या | ३११ |
| १४ | ,, | प्रस्तावितेष्टिगतयाज्या | ३१२ |
| १५ | ,, | अष्टमयमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या | ३१२ |
| १६ | ,, | उक्तेष्टियाज्या | ३१३ |
| १७ | ,, | नवमयमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या | ३१३ |
| १८ | ,, | प्रस्तावितेष्टियाज्या | ३१३ |
| १९ | ,, | दशमयमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या | ३१४ |
| २० | ,, | उक्तेष्टियाज्या | ३१४ |
| २१ | ,, | एकादशयमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या | ३१५ |
| २२ | ,, | प्रस्तावितेष्टियाज्या | ३१५ |
| २३ | ,, | द्वादशयमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या | ३१६ |
| २४ | ,, | एतन्नक्षत्रेष्टियाज्या | ३१६ |
| २५ | ,, | त्रयोदशयमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या | ३१६ |
| २६ | ,, | उक्तनक्षत्रेष्टिगतयाज्या | ३१७ |
| २७ | ,, | चतुर्दशयमनक्षत्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या | ३१७ |
| २८ | ,, | एतन्नक्षत्रेष्टियाज्या | ३१८ |
| २९ | ,, | अमावास्यादेवतेष्टिगतयाज्यानुवाक्याप्रतीके | ३१८ |


---

## २ अनुवाके चान्द्रमसादीष्टियाज्यानुवाक्याकथनम्।


| | | | |
|---|---|---|---|
| १,२ | मन्त्रयोश्चान्द्रमसेष्टियाज्यानुवाक्याप्रतीके | | ३१८ |
| ३ | मन्त्रे | अहोरात्रेष्टिपुरोऽनुवाक्या | ३१९ |
| ४ | ,, | उक्तेष्टियाज्या | ३१९ |

| विषयः । | | | पृष्ठे । |
|---|---|---|---|
| ५ | मन्त्रे | उषोदेवताकयागीयपुरोऽनुवाक्या .. .. | ३१९ |
| ६ | ,, | उक्तयागीययाज्या .. .. .. .. .. | ३२० |
| ७ | ,, | नक्षत्रचरुपुरोऽनुवाक्या .. .. .. .. | ३२० |
| ८ | ,, | उक्तयागीययाज्या .. .. .. .. .. | ३२१ |
| ९,१० | मन्त्रयोः | सौर्य्यचरुगतयाज्यानुवाक्याप्रतीके .. .. | ३२१ |
| ११,१२ | ,, | आदित्यचरुगतयाज्यानुवाक्याप्रतीके .. .. | ३२१ |
| १३,१४ | ,, | वैष्णवचरुयागीययाज्यानुवाक्याप्रतीके.. .. | ३२१ |
| १५,१६ | ,, | आग्नेयकर्म्मगतयाज्यानुवाक्याप्रतीके .. .. | ३२२ |
| १७,१८ | ,, | आनुमतिचरुविषयकयाज्यानुवाक्याप्रतीके .. | ३२२ |
| १९,२० | ,, | सर्व्वस्विष्टिगतस्विष्टकृत्संयाज्याप्रतीके .. | ३२२ |


## ४ अनुवाके देवनक्षत्रेष्टिविधानम् ।


| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | मन्त्रे | प्रथमनक्षत्रेष्टिविधानार्था स्तुतिः.... .. .. | ३२२ |
| २ | ,, | प्रथमनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. .. | ३२३ |
| ३ | ,, | प्रधानहोमादूर्द्ध्वमुपहोमविधानम् .. .. .. | ३२३ |
| ४ | ,, | द्वितीयनक्षत्रेष्टिविधानार्था स्तुतिः.. .. .. .. | ३२४ |
| ५ | ,, | द्वितीयनक्षत्रेष्टिविधानम् .. .. .. .. | ३२५ |
| ६ | ,, | द्वितीयनक्षत्रेष्ट्युपहोमविधिः .. .. .. .. | ३२५ |
| ७ | ,, | तृतीयनक्षत्रेष्टिकथनम् .. .. .. .. .. | ३२५ |
| ८ | ,, | चतुर्थनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. .. | ३२६ |
| ९ | ,, | पञ्चमनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. .. | ३२६ |
| १० | ,, | षष्ठनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. .. | ३२७ |
| ११ | ,, | सप्तमनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. .. | ३२७ |
| १२ | ,, | अष्टमनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. .. | ३२८ |
| १३ | ,, | नवमनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. .. | ३२८ |

| विषयः। | | | पृष्ठं। |
|---|---|---|---|
| १४ | मन्त्रे | दशमनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. .. .. | ३२८ |
| १५ | ,, | एकादशनक्षत्रेष्टिः.. .. .. .. .. .. | ३२९ |
| १६ | ,, | द्वादशनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. .. | ३२९ |
| १७ | ,, | त्रयोदशनक्षत्रेष्टिः.. .. .. .. .. .. | ३३० |
| १८ | ,, | चतुर्दशनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. .. | ३३० |
| १९ | ,, | पौर्णमासीदेवतेष्टिः .. .. .. .. .. | ३३० |


---

## ५ अनुवाके यमनक्षत्रेष्टिविधिः।


| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | मन्त्रे | प्रथमयमनक्षत्रेष्टिः.. .. .. .. .. .. | ३३१ |
| २ | ,, | द्वितीययमनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. | ३३२ |
| ३ | ,, | तृतीययमनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. | ३३२ |
| ४ | ,, | चतुर्थयमनक्षत्रेष्टिः.. .. .. .. .. .. | ३३२ |
| ५ | ,, | पञ्चमयमनक्षत्रेष्टिः.. .. .. .. .. .. | ३३३ |
| ६ | ,, | षष्ठयमनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. .. | ३३३ |
| ७ | ,, | सप्तमयमनक्षत्रेष्टिः.. .. .. .. .. .. | ३३४ |
| ८ | “ | अष्टमयमनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. | ३३४ |
| ९ | ,, | नवमयमनक्षत्रेष्टिः.. .. .. .. .. .. | ३३५ |
| १० | ,, | दशमयमनक्षत्रेष्टिः.. .. .. .. .. .. | ३३५ |
| ११ | ,, | एकादशयमनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. | ३३६ |
| १२ | ,, | द्वादशयमनक्षत्रेष्टिः.. .. .. .. .. .. | ३३६ |
| १३ | ,, | त्रयोदशयमनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. | ३३६ |
| १४ | ,, | चतुर्दशयमनक्षत्रेष्टिः .. .. .. .. .. | ३३७ |
| १५ | ,, | अमावास्यादेवतेष्टिविधिः .. .. .. .. | ३३७ |


---

### ६ अनुवाके चन्द्रमायुष्यादिप्रापकेष्टिविधिः ।


| विषयः । | पृष्ठं । |
|---|---|
| १ मन्त्रे चन्द्रेष्टिविधिः .. .. .. .. .. .. | ३३८ |
| २ ,, अहोरात्रेष्टिविधिः .. .. .. .. .. | ३३९ |
| ३ ,, औषसेष्टिः .. .. .. .. .. .. .. | ३३९ |
| ४ ,, नक्षत्रदेवतेष्टिः .. .. .. .. .. .. | ३४० |
| ५ ,, सूर्य्येष्टिविधानम् .. .. .. .. .. .. | ३४१ |
| ६ ,, अदितीष्टिकथनम् .. .. .. .. .. .. | ३४१ |
| ७ ,, विष्णुयागविधानम् .. .. .. .. .. .. | ३४२ |


---

## द्वितीयप्रपाठके दर्शयागविधिः ।

### १ अनुवाके वत्सापाकरणम् ।


| | |
|---|---|
| १ मन्त्रे पलाशशाखाप्रशंसा (तृतीयस्यामित्यादिना) (संहिताभाष्ये १४ पृष्ठे) .. .. .. .. .. | २५ |
| २ ,, पलाशशाखया वत्सापाकरणम् ( ब्रह्म वै पर्णं इत्यादिना) (सं०१४).. .. .. .. .. | २५ |
| ३ ,, गोप्रस्थानीयशाखाविनियोगः ( गायत्री वै पर्णं इत्यादिना ) (सं०१५).. .. .. .. .. | २५ |
| ४ ,, छेदनीयपलाशशाखागुणोक्तिः ( यं कामयेतेत्यादिना) (सं०१५) .. .. .. .. .. .. | २५ |
| ५ ,, पलाशशाखाच्छेदनम् (इषेत्वोर्जेत्वेत्याहेत्यनेन) (सं०१५) | २६ |
| ६ ,, उक्तमन्त्रार्थवादोक्तिः (इषमेवोर्ज्जमित्यादिना) (सं०१६) | २६ |
| ७ ,, वायुमुद्दिश्य वत्ससमर्पणम् ( वायवःस्थेत्याहेत्यादिना ) (सं०१६) .. .. .. .. .. .. | २६ |

विषयः                                                                 पृष्ठं।

८ मन्त्रे उक्तमन्त्रस्य प्रकारान्तराभिप्रायनिदर्शनम् (प्र वा एतानित्यादिना) (सं०१७) .. .. .. .. २६

९ ,, अस्यैवोत्तरभागस्योक्तिः (उपायवः स्थेत्याहेत्यादिना) (सं०१७) .. .. .. .. .. .. २६

१० ,, गोप्रेरणार्थमन्त्रपूर्वभागस्थसवितृपदतात्पर्यम् (देवो व इत्यादिना) (सं०१७) .. .. .. २६

११ ,, उक्तमन्त्रोत्तरभागोक्तिः (श्रेष्ठतमायेत्यादिना) (सं०१७) २६

१२ ,, आप्यायध्वमिति मन्त्रस्यादिमभागपदतात्पर्योक्तिः (आप्यायध्वमित्यादिना) (सं०१८) .. .. २६

१३ ,, उक्तमन्त्रद्वितीयभागः (ऊर्जस्वतीरित्यादिना) (सं०१८) २६

१४ ,, प्रस्तावितमन्त्रतृतीयभागप्रयोजनम् (प्रजावतीरित्यादिना) (सं०१८) .. .. .. .. .. २६

१५ ,, उक्तमन्त्रचतुर्थभागप्रयोजनम्(मा वस्तेनेत्यादिना)(सं०१८)२६

१६ ,, तन्मन्त्रफलविधानम् (रुद्रस्य हेतिरित्यादिना) (सं०१८) २६

१७ ,, तन्मन्त्रपाठफलम्, यजमाननिरीक्षणम्, यजमानगृहपर्यावर्तनं वा (ध्रुवा अस्मिन्नित्यादिना) (सं०१९) २७

१८ ,, तन्मन्त्रपाठप्रयोजनविधानम् (यजमानस्येत्यादिना) (सं०१९).. .. .. .. .. .. . २७

१९ ,, गोरक्षणीयशाखास्थापनस्थानम् (अनध इत्यादिना) (सं०१९) .. .. .. .. .. .. २७

२० ,, उच्चदेशस्थापनफलम् (उपरी वेत्यादिना) (सं०१९) .. २७


---

## २ अनुवाके बर्हिराहरणम्।


१ मन्त्रे असिदपर्शादानम् (देवस्य त्वेत्यादिना) (सं०५१) .. २७

२ ,, अश्वपर्शुमादाय बर्हिरानयनार्थगमने सार्थवादवाक्यम् (यो वा इत्यादिना) (सं०५१) .. .. .. २७

| विषयः | पृष्ठं । |
|---|---|


३ मन्त्रे अश्वपर्श्वाभिमन्त्रणम् (यज्ञस्येत्यादिना) (सं०५१) .. २७

४ ,, आसदप्रतपनम् (प्रत्युष्टमित्यादिना) (सं०५२) .. २७

५ ,, बर्हिरूपदर्भाहरणम् (प्रेयमगादित्यादिना) (सं०५२) २८

६ ,, उक्तमन्त्रस्योत्तरार्द्धे श्रुत्यन्तरानुमानसिद्धुक्तिः (मनुनेत्यादिना) (सं०५३) .. .. .. .. २८

७ ,, पुरस्ताच्छब्दतात्पर्य्याद्युक्तिः (त आवहन्तीत्यादिना) (सं०५३) .. .. .. .. .. .. २८

८ ,, बर्हिषो दिगन्तराहरणप्रयुक्तस्य वैकल्पस्य निरासः (अथो यदित्यादिना) (सं०५३).. .. .. २८

९ ,, आसद इति पदस्य तात्पर्य्यदर्शनम् (देवेभ्य इत्यादिना) (सं०५३).. .. .. .. .. .. २८

१० ,, देवार्थबर्हिर्ग्रहणे दोषाभावः (देवानामित्यादिना) (सं०५३) .. .. .. .. .. .. .. २८

११ ,, इदं शब्दस्याभिप्रायान्तरोक्तिः (अथो यथेत्यादिना) (सं०५४) .. .. .. .. .. .. .. २८

१२ ,, बर्हिस्तम्बच्छेदनप्रकारः (यावत इत्यादिना) (सं०५४) २८

१३ ,, दर्भादीनां वर्षजलप्ररूढत्वोक्तिः (वर्षवृद्धमित्यादिना) (सं०५४).. .. .. .. .. .. २८

१४ ,, बर्हिषो देवसम्बन्धोक्तिः (देवबर्हिरित्यादिना) (सं०५४) २८

१५ ,, बर्हिश्छेदनदोषपरिहारार्थनिषेधोक्तिः (मा त्वान्वक्षेत्यादिना) (सं०५५) .. .. .. .. .. २८

१६ ,, बर्हिः पुनः प्ररोहार्थोक्तिः (पर्वत इत्यादिना) (सं०५५) २८

१७ ,, मारिषेति मन्त्रार्थज्ञानपूर्वकबर्हिश्छेदने निष्ठाभावः (आच्छेत्तेत्यादिना) (सं०५५) .. .. .. २९

१८ ,, आलवाभिमर्शनम् (देवबर्हिः शतवल्शमित्यादिना)(सं०५५)२९

१९ ,, बर्हिश्छेत्तुः स्वस्याभिमर्शनम् (सहस्रेत्यादिना) (सं०५५) २९

विषयः । पृष्ठे ।

२० मन्त्रे कस्मिंश्चिदाधारे छिन्नबर्हिर्मुष्टिस्थापनम् (पृथिव्या इत्यादिना) (सं०५६).. .. .. .. .. २९

२१ ,, इतरबर्हिर्मुष्टिमन्त्रकच्छेदनम् (अयुङ्क्त्यादिना) (सं०५६) २९

२२ ,, बर्हिर्बन्धनार्थारशनासङ्ग्रहः (सुसम्भृतेत्यादिना) (सं०५७) २९

२३ ,, बर्हिः सन्नहनस्येन्द्राणीप्रियत्वाद्युक्तिः (इन्द्राण्यै इत्यादिना) (सं०५७) .. .. .. .. .. २९

२४ ,, बर्हिषः प्रजारूपत्वोक्तिः (प्रजा वै इत्यादिना) (सं०५७) २९

२५ ,, बर्हिर्बन्धनरज्ज्वोर्ग्रन्थिकरणे देवविशेषोक्तिः (पूषात इत्यादिना) (सं०५७)... ... ... ... ... २९

२६ ,, दर्भोपद्रवपरिहारः ( स ते मेत्यादिना ) (सं०५८) २९

२७ ,, ग्रन्थ्यवशिष्टरज्जूपगूहनप्रकारः (यस्मादित्यादिना) (सं०५८) .. .. .. .. .. .. .. २९

२८ ,, बद्धबर्हिःपुञ्जस्य बाहुभ्यामुदादानम् (इन्द्रस्येत्यादिना) (सं०५८) .. .. .. .. .. .. .. २९

२९ ,, मस्तके बर्हिःस्थापनम् (बृहस्पतेरित्यादिना) (सं०५८) २९

३० ,, यज्ञशालाभ्यतिगमनविधानम् ( उर्वन्तरीक्षमित्यादिना ) (सं०५८) .. .. .. .. .. ३०

३१ ,, बर्हिषो भूमिस्थापननिषेधः (देवमित्यादिना) (सं०५९) ३०

३२ ,, गार्हपत्योत्तरदिश्यूर्ध्वे बर्हिःस्थापनम् (अनघ इत्यादिना) (सं०५९).. .. .. .. .. .. ३०

---

३ अनुवाके अमावास्यारात्रिकर्त्तव्यदोहोक्तिः ।

१ मन्त्रे बर्हिरादिसङ्ग्रहकालोक्तिः (पूर्वेद्युरित्यादिना) (सं०६५) ३०

२ ,, दोहनार्थकुम्भीद्वयविधानम् ( प्रजापतिरित्यादिना) (सं०६६) .. .. .. .. .. .. ३०

३ ,, कुम्भ्यादीनां प्रोक्षणम् (शुन्धध्वमित्यादिना) (सं०६६) ३०

| विषयः | पृष्ठे। |
|---|---|
| ४ मन्त्रे अङ्गारेषु कुम्भ्योरधिश्रयणम् (मातरिश्वन इत्यादिना) (सं०६७) .. .. .. .. .. .. | ३० |
| ५ ,, कुम्भ्यां शाखापवित्रनिधानम् (वसूनामित्यादिना) (सं०६८) .. .. .. .. .. .. .. | ३१ |
| ६ ,, शतसहस्रसूचितार्थदर्शनम् (शतधारमित्यादिना) (सं०६८) .. .. .. .. .. .. | ३१ |
| ७ ,, त्रिगुणविशिष्टपवित्रविधानम्(त्रिवृदित्यादिना)(सं०६८) | ३१ |
| ८ ,, अर्थवादत्रयाणां क्रमेणोक्तिः(त्रिवृद्वै इत्यादिना) (सं०६८) | ३१ |
| ९ ,, कालभेदेन शाखापवित्रस्य कुम्भीमुखे स्थापनम् (प्राक् सायमित्यादिना) (सं०६९) .. .. .. .. | ३१ |
| १० ,, हविःस्कन्नदोषपरिहारः (ऊत इत्यादिना) (सं०७०) | ३१ |
| ११ ,, नाकनामकाग्नये विप्रुषां होमः (दिवि नाक इत्यादिना) (सं०७०) .. .. .. .. .. .. | ३१ |
| १२ ,, द्यावापृथिव्योः पालकत्वप्रदर्शनम् (स्वाहा द्यावेत्यादिना) (सं०७१) .. . .. .. .. .. | ३१ |
| १३ ,, सपवित्रकुम्भे क्षीरसेचनम्(पवित्रवतीत्यादिना)(सं०७१) | ३२ |
| १४ ,, गोदोहनकालीनकुम्भस्पर्शपूर्वकमौनविधिः (अन्वारभ्येत्यादिना) (सं०७१) .. .. .. .. | ३२ |
| १५ ,, कुम्भस्पर्शविकल्पेन पवित्रधारणविधानम् (धारयन्नित्यादिना) (सं०७१) .. .. .. .. .. | ३२ |
| १६ ,, दोग्धारम्प्रति प्रश्नः (कामधुक्षेत्यादिना) (सं०७१) .. | ३२ |
| १७ ,, उत्तरवाक्येन दोग्धुर्गोनामग्रहणम् (अमूमित्यादिना) (सं०७२) .. .. .. .. .. .. | ३२ |
| १८ ,, दुग्धाङ्गाम्प्रत्यनुमन्त्रणम् तदभिप्रायकथनञ्च (सा विश्वायुरित्यादिना) (सं०७२) .. .. .. .. | ३२ |
| १९ ,, मन्त्राभिप्रायान्तरप्रदर्शनम्(अथो यथेत्यादिना)(सं०७३) | ३२ |

विषयः । पृष्ठे ।

२० मन्त्रे उक्तविषयोपयोगिमन्त्रान्तरोक्तिः (बहुदुग्धीत्यादिना) (सं०७३).. .. .. .. .. .. ३२

२१ ,, उक्तमन्त्रावृत्तिविधिः (त्रिराहेत्यादिना) (सं०७३) .. ३२

२२ ,, अमौनाकुम्भीस्पर्शामन्त्रकगोदोहनम् (अवाचमित्यादिना) (सं०७४) .. .. .. .. .. .. ३२

२३ ,, पूर्वपक्षे दारुपात्रे दोहननिषेधः (न दारुपात्रेणेत्यादिना) (सं०७४).. .. .. .. .. .. ३२

२४ ,, सिद्धान्ते दारुपात्रे दोहनस्य विधिः (अथो खल्वित्यादिना) (सं०७४) .. .. .. .. .. ३३

२५ ,, पूर्वपक्षे शूद्रस्य गोदोहननिषेधः (शूद्र एव नेत्यादिना) (सं०७५).. .. .. .. .. .. ३३

२६ ,, सिद्धान्ते शूद्रस्याग्निहोत्रमात्रदोहने निषेधः न त्वस्मिन् यज्ञार्थे (अग्निहोत्रमेवेत्यादिना) (सं०७५) ३३

२७ ,, दोहनपात्रक्षालनेन रससम्पर्कः (सम्पृच्यध्वमित्यादिना) (सं०७५).. .. .. .. .. .. ३३

२८ ,, धनलाभोक्तिप्रयोजनदर्शनम् (मन्द्राधनेत्यादिना) (सं०७६) ३३

२९ ,, मुख्यदधिशब्दत्यागपूर्वकसोमशब्दोपादानप्रयोजनम् (सोमेनेत्यादिना) (सं०७६) .. .. .. .. ३३

३० ,, सान्नाय्यस्य सोमीकरणप्रयोजनम् (यो वै सोममित्यादिना) (सं०७६) .. .. .. .. .. ३३

३१ ,, कुम्भीपिधाने पात्रविशेषः (न मृण्मयेनेत्यादिना) (सं०७७) ३३

३२ ,, सजलपिधानपात्रविधिः (उदन्वदित्यादिना) (सं०७७) ३३

३३ ,, पिधानमन्त्रव्याख्या (अदस्तमसीत्यादिना) (सं०७८) ३३

३४ ,, क्षीरादिरक्षणाय विष्णुसम्बोधनम् (विष्णो हव्यमित्यादिना) (सं०७८) .. . .. .. .. ३४

३५ ,, बर्हिरिव क्षीरादेरधःस्थापननिषेधः (अनध इत्यादिना) (सं०७८) ३४

विषयः पृष्ठं।

४ मन्त्रे अङ्गारेषु कुम्भ्योरधिश्रयणम् (मातरिश्वन इत्यादिना) (सं०६७).. .. .. .. .. .. ३०
५ ,, कुम्भ्यां शाखापवित्रनिधानम् (वसूनामित्यादिना) (सं०६८) .. .. .. .. .. .. .. ३१
६ ,, शतसहस्रसूचितार्थदर्शनम् (शतधारमित्यादिना) (सं०६८) .. .. .. .. .. .. .. ३१
७ ,, त्रिगुणविशिष्टपवित्रविधानम्(त्रिवृदित्यादिना)(सं०६८) ३१
८ ,, अर्थवादत्रयाणां क्रमेणोक्तिः(त्रिवृद्वै इत्यादिना) (सं०६८) ३१
९ ,, कालभेदेन शाखापवित्रस्य कुम्भीमुखे स्थापनम् (प्राक् सायमित्यादिना) (सं०६९).. .. .. .. .. ३१
१० ,, हविःस्कन्नदोषपरिहारः (द्रुत इत्यादिना) (सं०७०) ३१
११ ,, नाकनामकाग्नये विप्रुषां होमः (दिवि नाक इत्यादिना) (सं०७०).. .. .. .. .. .. ३१
१२ ,, द्यावापृथिव्योः पालकत्वप्रदर्शनम् (स्वाहा द्यावेत्यादिना) (सं०७१) .. .. .. .. .. .. ३१
१३ ,, सपवित्रकुम्भे क्षीरसेचनम्(पवित्रवतीत्यादिना)(सं०७१) ३२
१४ ,, गोदोहनकालीनकुम्भस्पर्शपूर्वकमौनविधिः (अन्वारभ्येत्यादिना ) (सं०७१) .. .. .. .. ३२
१५ ,, कुम्भस्पर्शविकल्पेन पवित्रधारणविधानम् (धारयन्नित्यादिना) (सं०७१) .. .. .. .. .. ३२
१६ ,, दोग्धारम्प्रति प्रश्नः (कामधुक्षेत्यादिना) (सं०७१) .. ३२
१७ ,, उत्तरवाक्येन दोग्धुर्गोनामग्रहणम् (अमूमित्यादिना ) (सं०७२) .. .. .. .. .. .. .. ३२
१८ ,, दुग्धाङ्गाम्यत्यनुमन्त्रणम् तदभिप्रायकथनञ्च (सा विश्वायुरित्यादिना) (सं०७२) .. .. .. .. ३२
१९ ,, मन्त्राभिप्रायान्तरप्रदर्शनम्(अथो यथेत्यादिना)(सं०७३) ३२

विषयः। पृष्ठे।

२० मन्त्रे उक्तविषयोपयोगिमन्त्रान्तरोक्तिः (बहुदुग्धीत्यादिना) (सं०७३).. .. .. .. .. .. ३२

२१ ,, उक्तमन्त्रावृत्तिविधिः (त्रिराहेत्यादिना) (सं०७३) .. ३२

२२ ,, अमौनाकुम्भीस्पर्शमन्त्रकगोदोहनम् (अवाचमित्यादिना) (सं०७४) .. .. .. .. .. .. ३२

२३ ,, पूर्वपक्षे दारुपात्रे दोहननिषेधः (न दारुपात्रेणेत्यादिना) (सं०७४).. .. .. .. .. .. ३२

२४ ,, सिद्धान्ते दारुपात्रे दोहनस्य विधिः (अथो खल्वित्यादिना) (सं०७४) .. .. .. .. .. ३३

२५ ,, पूर्वपक्षे शूद्रस्य गोदोहननिषेधः (शूद्र एव नेत्यादिना) (सं०७५).. .. .. .. .. .. ३३

२६ ,, सिद्धान्ते शूद्रस्याग्निहोत्रमात्रदोहने निषेधः न त्वस्मिन् यज्ञार्थे (अग्निहोत्रमेवेत्यादिना) (सं०७५) ३३

२७ ,, दोहनपात्रक्षालनेन रससम्पर्कः (सम्पृच्यध्वमित्यादिना) (सं०७५).. .. .. .. .. .. ३३

२८ ,, धनलाभोक्तिप्रयोजनदर्शनम् (मन्द्राधनेत्यादिना) (सं०७६) ३३

२९ ,, मुख्यदधिशब्दत्यागपूर्वकसोमशब्दोपादानप्रयोजनम् (सोमेनेत्यादिना) (सं०७६) .. .. .. .. ३३

३० ,, सान्नाय्यस्य सोमीकरणप्रयोजनम् (यो वै सोमभित्यादिना) (सं०७६) .. .. .. .. .. ३३

३१ ,, कुम्भीपिधाने पात्रविशेषः (न मृण्मयेनेत्यादिना) (सं०७७) ३३

३२ ,, सजलपिधानपात्रविधिः (उदन्वदित्यादिना) (सं०७७) ३३

३३ ,, पिधानमन्त्रव्याख्या (अदस्तमसीत्यादिना) (सं०७८) ३३

३४ ,, क्षीरादिरक्षणाय विष्णुसम्बोधनम् (विष्णो हव्यमित्यादिना) (सं०७८) .. . .. .. .. ३४

३५ ,, बर्हिरिव क्षीरादेरधःस्थापननिषेधः (अनध इत्यादिना) (सं०७८) ३४

## ४ अनुवाके हविर्निर्वापकथनम्।


विषयः। पृष्ठे।

१ मन्त्रे प्रातर्हवनानन्तरहस्तप्रक्षालनमन्त्रः (कर्मणेवामित्यादिना) (सं०८५).. .. .. .. .. .. ३४

२ ,, हस्ताखरणम् (यज्ञस्येत्यादिना) (सं०८५).. .. .. ३४

३ ,, अपां प्रणयनम् (अपः प्रणयतीत्यादिना) (सं०८६).. ३४

४ ,, प्रणयनेन विधेरर्थवादोक्तिः (श्रद्धा वा इत्यादिना) (सं०८६) .. .. .. .. .. .. .. ३४

५ ,, उक्तप्रणयनस्य पुनः स्तुतिः (अपः प्रणयति। यज्ञो वा आप इत्यादिना) (सं०८६) .. .. .. .. ३४

६ ,, शूर्पस्य यज्ञप्रयोजनत्वस्योक्तिः (वेषायेत्यादिना) (सं०८८) ३५

७ ,, आहवनीयादौ शूर्पप्रतपनम् (प्रत्युष्टमित्यादिना) (सं०८८) .. .. .. .. .. .. .. ३५

८ ,, शकटयुगधुरःस्पर्शः (धूरसीत्यादिना) (सं०८८) .. ३५

९ ,, तं धूर्वेति वाक्यद्वयस्य पौनरुक्त्यभ्रमनिरासः (धूर्वतमित्यादिना) (सं०८८).. .. .. .. .. ३५

१० ,, शकटाभिमन्त्रणमन्त्रस्य प्रथमभागे सम्पार्थत्वदर्शनम् (त्वं देवानामित्यादिना) (सं०८९) .. .. .. ३५

११ ,, द्वितीयभागे व्रीहिभारजातशैथिल्यनिवारणार्थोक्तिः (अह्रुतमित्यादिना) (सं०८९).. .. .. .. ३५

१२ ,, तृतीयभागे आरोहणार्थं शकटस्थैर्यसम्पादनम् (दृंहस्वेत्यादिना) (सं०८९) .. .. .. .. ३५

१३ ,, पुरोडाशीयप्रेक्षणमन्त्रव्याख्या:(मित्रस्येत्यादिना)(सं०८९) ३५

१४ ,, भयहिंसानिरासः (मा भेर्मेत्यादिना) (सं०९०) .. ३५

१५ ,, परीनाहमोचनम् (यद्दे किञ्चेत्यादिना) (सं०९०) .. ३६

१६ ,, शूर्पे हविर्निर्वापः (देवस्य त्वेत्यादिना) (सं०९०) .. ३६

| विषयः । | | | पृष्ठे । |
|---|---|---|---|
| १७ | मन्त्रे | हविर्निर्वापे आवृत्तिविधानम् (त्रियंजुषेत्यादिना) (सं०९०) .. .. .. .. .. .. .. | ३६ |
| १८ | ,, | हविर्निर्वापमन्त्रपाठविशेषविधिः (स एतमित्यादिना) (सं०९१) .. .. .. .. .. .. .. | ३६ |
| १९ | ,, | शूर्पनिरुप्तभागासाङ्कर्य्यदर्शनम् (इदमित्यादिना) (सं०९१) | ३६ |
| २० | ,, | निरुप्तहविरभिमन्त्रणम् (स्वात्यै त्वेत्यादिना) (सं०९१) | ३६ |
| २१ | ,, | कटवेष्टितशकटोपरिस्थितस्य हविषो बहिरवलोकनम् (तमसोवेत्यादिना) (सं०९२).. .. .. | ३६ |
| २२ | ,, | गृहाग्नीक्षणं प्रत्यवरोहणं वा (द्यावापृथिवीत्यादिना) (सं०९२) .. .. .. .. .. .. | ३६ |
| २३ | ,, | हविर्नीत्वागमनम् (उर्व्वन्तरिक्षमित्यादिना) (सं०९२) | ३६ |
| २४ | ,, | गार्हपत्योपसादनम् (आदित्यास्त्वेत्यादिना) (सं०९२) | ३६ |
| २५ | ,, | गार्हपत्याभिमन्त्रणम् (अग्ने हव्यमित्यादिना) (सं०९२) | ३६ |


---

## ५ अनुवाके व्रीहितुषापनयनार्थोऽवघातः ।


| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | मन्त्रे | व्रीहिप्रोक्षणार्थोदकस्योत्पवनम् (इन्द्रो वृत्रमहन्नित्यादिना) (सं०१०४) .. .. .. .. .. | ३७ |
| २ | ,, | उत्पवनसाधनदर्भसङ्ख्या (द्वाभ्यामित्यादिना) (सं०१०४) | ३७ |
| ३ | ,, | उक्तमन्त्रार्थः (देवो व इत्यादिना) (सं०१०५) .. .. | ३७ |
| ४ | ,, | उक्तमन्त्रस्य सावित्रत्वादिप्रयोजनोक्तिः (सावित्रियर्चेत्यादिना) (सं०१०५) .. .. .. .. .. | ३७ |
| ५ | ,, | उक्तमन्त्रपूर्वभागे अपां महिमाख्यानम् (आपो देवीरित्यादिना) (सं०१०६) .. .. .. .. | ३७ |
| ६ | ,, | मध्यमभागे प्रार्थितकार्य्यस्याद्भिर्निष्पेक्षणम् (अग्र इममित्यादिना) (सं०१०६) .. .. .. .. | ३७ |

| विषयः। | | | पृष्ठे। |
|---|---|---|---|
| ७ | मन्त्रे | शेषभागे अपामिन्द्रस्य परस्परसापेक्षत्वदर्शनम् (युष्मानिन्द्र इत्यादिना) (सं०१०७) .. .. .. | ३८ |
| ८ | ,, | मन्त्रपाठ एवापां प्रोक्षणम् (प्रोक्षिता स्थेत्यादिना) (सं०१०७).. .. .. .. .. .. .. | ३८ |
| ९ | ,, | पुरोडाशीयप्रोक्षणविधिः (अग्नय इत्यादिना) (सं०१०७) | ३८ |
| १० | ,, | प्रोक्षणे आवृत्तिदर्शनम् (त्रिःप्रोक्षतीत्यादिना) (सं०१०८) | ३८ |
| ११ | ,, | पात्राणामुत्तानानामेवाभिषेकविधिः (शुन्धध्वमित्यादिना) (सं०१०८) .. .. .. .. .. | ३८ |
| १२ | ,, | कृष्णाजिनावधूननम् (अवधूतमित्यादिना) (सं०१०८) | ३८ |
| १३ | ,, | कृष्णाजिनोपस्तरणम् (आदित्या इत्यादिना) (सं०१०८) | ३८ |
| १४ | ,, | आस्तरणे विशेषः (पुरस्तादित्यादिना) (सं०१०९) .. | ३८ |
| १५ | ,, | कृष्णाजिनोपरि हविरवघाते हेतुः (यज्ञ इत्यादिना) (सं०१०९).. .. .. .. .. .. .. | ३८ |
| १६ | ,, | कृष्णाजिनोपर्य्युदूखलस्याधिषवणत्वम् (अधिषवणमसीत्यादिना) (सं०१०९) .. .. .. .. | ३८ |
| १७ | ,, | अविरोधपूर्वकसम्बन्धार्थाशीः कथनम् (प्रतित्वेत्यादिना) (सं०११०) .. .. .. .. .. .. | ३९ |
| १८ | ,, | उलूखले पुरोडाशीयव्रीहिप्रक्षेपदर्शनम् (अग्नेस्तनूरित्यादिना) (सं०११०) .. .. .. .. .. | ३९ |
| १९ | ,, | तुषापनयनार्थमुशलं प्रत्युक्तिः (अद्रिरसि इत्यादिना) (सं०११०).. .. .. .. .. .. .. | ३९ |
| २० | ,, | हविष्कृदाह्वानम् (हविष्कृदित्यादिना) (सं०१११) .. | ३९ |
| २१ | ,, | अश्मदृषदुपलसमाहरणम् (इषमावदेत्यादिना) (सं०१११) .. .. .. .. .. .. | ३९ |
| २२ | ,, | उपाख्यानद्वारा भ्रातृव्याभिभवदर्शनम् (मनोः श्रद्धेत्यादिना) (सं०१११) .. .. .. .. .. | ३९ |

| विषयः । | पृष्ठं । |
|---|---|
| २३ मन्त्रे प्रैषमन्त्रविनियोगतात्पर्य्यदर्शनम् ( उच्चैरित्यादिना ) (सं०११२) .. .. .. .. .. .. .. | ३९ |
| २४ ,, शूर्पमन्त्रे शूर्पे पुरोडाशोद्वपनमन्त्रे च वृद्धशब्दतात्पर्य्यम् (वर्षवृद्धमसीत्यादिना) (सं०११२) .. .. | ४० |
| २५ ,, तुषपरापवनमन्त्रतात्पर्य्यम् ( यज्ञं रक्षांसीत्यादिना ) (सं०११२).. .. .. .. .. .. .. | ४० |
| २६ ,, तुषैरक्षोभागप्रदानम् ( रक्षसां भाग इत्यादिना ) (सं०११३) .. .. .. .. .. .. .. | ४० |
| २७ ,, अपामुपस्पर्शनम् (अप उपस्पृशति इत्यादिना)(सं०११३) | ४० |
| २८ ,, तण्डुलानां विवेचनम् (वायुर्व्वि इत्यादिना) (सं०११३) | ४० |
| २९ ,, पात्र्यां तण्डुलप्रस्कन्दनम् ( अन्तरिक्षादित्यादिना ) (सं०११३) .. .. .. .. .. .. .. | ४० |
| ३० ,, फलीकरणप्रैषमन्त्रोक्तिः (निष्फलीत्यादिना) (सं०११३) | ४० |


---

## ६ अनुवाके तण्डुलपेषणम् ।


| | |
|---|---|
| १ मन्त्रे तण्डुलपेषणार्थं कृष्णाजिनावधूननमास्तरणञ्च ( अवधूतमित्यादिना) (सं०१२१) .. .. .. .. .. | ४० |
| २ ,, शम्यानिधानमन्त्रव्याख्या ( द्यावापृथिवीत्यादिना ) (सं०१२२).. .. .. .. .. .. .. | ४१ |
| ३ ,, शम्यायां दृषत्स्थापनमन्त्रतात्पर्य्यम् ( धिषणेत्यादिना ) (सं०१२३).. .. .. .. .. .. .. | ४१ |
| ४ ,, दृषद्युपलास्थापनमन्त्रार्थः ( धिषणासीत्यादिना ) (सं०१२३).. .. .. .. .. .. .. | ४१ |
| ५ ,, दृषदि तण्डुलाधिवपनमन्त्रः ( देवस्य त्वेत्यादिना ) (सं०१२३).. .. .. .. .. .. .. | ४१ |

विषयः पृष्ठं।

६ मन्त्रे धान्याकृत्या मन्त्रसामर्थ्येन दृढ्युक्तिः (धान्यमसीत्यादिना (सं०१२३) .. .. .. .. .. .. ४१
७ ,, तण्डुलपेषणप्रकारः (प्राणायेत्यादिना) (सं०१२४) .. ४२
८ ,, बाक्रोरन्ववेक्षणम् (दीर्घामन्वित्यादिना) (सं०१२४) ४२
९ ,, कृष्णाजिने पिष्टानां प्रस्कन्दनम् (अन्तरिक्षादित्यादिना) (सं०१२५) .. .. .. .. ... .. ४२
१० ,, पत्नीदास्यन्यतरामुद्दिश्य प्रैषमन्त्रोक्तिः (असंवपन्तीत्यादिना) (सं०१२५) .. .. .. .. .. ४२

७ अनुवाके कपालोपधानम्।

१ मन्त्रे उपवेषाख्यपलाशकाष्ठादानम् (धृष्टिरसीत्यादिना) (सं०१२८).. .. .. .. .. .. .. ४२
२ ,, अङ्गारद्वयनिष्काशनपूर्वकमेकस्य निरसनम् (अपाग्न इत्यादिना) (सं०१२८).. .. .. .. .. ४२
३ ,, कपालेऽङ्गारात्याधानम् (निर्दग्धमित्यादिना) (सं०१२९) ४२
४ ,, कपालोपधानविधानम् (अग्निवदुपदधातीत्यादिना) (सं०१२९).. .. .. .. .. .. ४२
५ ,, अङ्गारोपरिकपालोपधानम् (अङ्गारमधिवर्त्तयतीत्यादिना) (सं०१२९) .. .. .. .. .. .. ४२
६ ,, अङ्गारोपर्यङ्गारस्थापनाभावे दोषाभावः (आदित्यमेवेत्यादिना) (सं०१२९) .. .. .. .. ४३
७ ,, उक्तवृत्तान्तज्ञानप्रशंसा (ज्योतिष्मन्त इत्यादिना) (सं०१२९) .. .. .. .. .. .. .. ४३
८ ,, कपालस्योपधानमन्त्राः (ध्रुवमसि पृथिवीं दृꣳहेत्यादिना) (सं०१३०).. .. .. .. .. ४३

विषयः। पृष्ठं।

९ मन्त्रे कपालोपधानमन्त्रोपसंहारः ( इमानेवेत्यादिना ) (सं०१३०) .. .. .. .. .. .. .. ४३

१० " कपालोपधानवृत्तान्तवेदनप्रशंसा (ट्रयुद्धन्ते इत्यादिना) (सं०१३०).. .. .. .. .. .. .. ४३

११ " त्रिकपालोपधानपक्षे कपालगतत्रित्वस्य बहुधा स्तुतिः (त्रीण्यग्रे इत्यादिना ) (सं०१३०).. .. .. ४३

१२ " अष्टकपालोपधानपक्षे कपालगताष्टसङ्ख्याप्रशंसा (एकमग्रे इत्यादिना ) (सं०१३१) .. .. .. ४३

१३ " कपालोपधानकर्मणः स्तुतिः (यदेवमित्यादिना) (सं०-१३१) .. .. .. .. .. .. .. ४३

१४ " गायत्र्यादिच्छन्दःपादाष्टनवाद्यक्षरानुसारेण कपालोपधानकर्मणः स्तुतिः (यदष्टावित्यादिना) (सं० १३१) .. .. .. .. .. .. .. ४३

१५ " अष्टमकपालोपधानमन्त्रस्य स्पष्टार्थता (चितःस्थेत्यादिना) (सं०१३२) .. .. .. .. .. ४४

१६ " कपालाङ्गारारोपणमन्त्रस्य तात्पर्यार्थः (भृगूणामित्यादिना) (सं०१३२) .. .. .. .. ४४

१७ " सन्तप्तेषु कपालेषु चतुष्पादविघ्निष्टकर्मपाठपूर्वकं तेषां सङ्ख्यां कृत्वा उत्थापनं (तानि तत इत्यादिना ) (सं०१३३) .. .. .. .. .. .. .. ४४


---

८ अनुवाके कपालेषु पुरोडाशश्रपणम्।


१ मन्त्रे कृष्णाजिनादादायौषधिपिष्टानां कपालेषु वपनस्य विधायकमन्त्रगतानां कतिपयवाक्यानां तात्पर्यार्थः ( देवस्य त्वेत्यादिना) (सं०१३६) .. .. .. ४४

| विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|
| २ मन्त्रे पिष्टेषु प्रणीताजलमिश्रणमन्त्रस्य समापो अद्भिरग्मत समोषधयो रसेनेतिपूर्वभागेन जलौषधिसङ्गमफलोक्तिः (समाप इत्यादिना) (सं० १३७) .. .. .. .. .. .. .. | ४४ |
| ३ " तज्जलौषध्योर्मिश्रणेन तयोर्माधुर्य्यसम्पादनरूपं फलन्तस्योक्तिः (सꣳरेवतीरित्यादिना) (सं०१३७) .. | ४५ |
| ४ " उक्तकिञ्चिज्जलमिश्रिततत्पिष्टौषधेस्तप्तजलेन सर्वत आर्द्रीकरणं (अद्भ्यः परीत्यादिना) (सं०१३७) .. | ४५ |
| ५ " जलाप्लावितौषधिपिष्टमर्दनपठनीयमन्त्रस्थस्य जनयत्यैत्वा संयौमीति वाक्यस्य तात्पर्यार्थः (जनयत्यै त्वेत्यादिना) (सं०१३८) .. .. .. .. | ४५ |
| ६ " मर्द्दितौषधिपिष्टस्य प्रत्येकदेवतोद्देशपूर्व्वकाभिमर्शने पठनीयमन्त्रद्वयस्य प्रयोजनम् (अग्नये त्वा इत्यादिना) (सं०१३८) .. .. .. .. | ४५ |
| ७ " देवतोद्देशनिर्द्दिष्टौषधिपिष्टस्य पिण्डीकरणे पाठ्यमन्त्रस्य सव्याख्या (मखस्य इत्यादिना) (सं०१३८) | ४५ |
| ८ " तप्तकपालोक्तपिण्डस्थापनमन्त्रस्थस्य विश्वायुरितिपदस्यार्थः (घर्म्मोऽसि इत्यादिना) (सं०१३८) .. | ४५ |
| ९ " पिण्डानां हस्तेन विस्तृतीकरणे, पाठ्यमन्त्रस्थस्य उरुप्रथस्वेतिवाक्यस्य तात्पर्यम् (उरु प्रथस्वेत्यादिना) (सं०१३९) .. .. .. .. ... .. | ४५ |
| १० " तेषां पुरोडाशानामुपर्यद्भिः सह हस्तेन विस्तारेण विस्तृतीकरणात् त्वक्सादृश्येन सदृढताप्राप्तिः इत्युक्तिः (त्वचं गृह्णीष्वेत्यादिना) (सं०१३९) .. | ४५ |
| ११ " जलमादाय हस्तेन पुरोडाशोपरि समीकरणे विधिः (अथाप इत्यादिना) (सं०१३९) .. .. | ६५ |

विषयः। पृष्ठं।

१२ मन्त्रे पुरोडाशानां परितो ज्वलद्भिः पर्य्यग्निकरणे विधिः (वर्मो वा इत्यादिना) (सं०१३९).. .. .. ४५

१३ " तेषां परितः त्रिवारं पर्य्यग्निकरणं इत्युक्तिः (त्रिःपर्य्यग्नीत्यादिना) (सं०१४०) .. .. .. .. ४६

१४ " ज्वलद्भिः पुरोडाशानां परितः पर्य्यग्निकरणे यो मन्त्रस्तस्य व्याख्या (अन्तरितं इत्यादिना) (सं०-१४०) .. .. .. .. ... .. .. ४६

१५ " पुरोडाशश्रपणमन्त्रगतानां सविष्टनाकमातिधागित्यादिपदानामभिप्रायोक्तिः (पुरोडाशं वेत्यादिना) (सं०१४०) .. ... .. .. .. .. ४६

१६ " पुरोडाशपाकस्य विदाहदोषनिवृत्तये सम्यक्पाकगुणसिद्धये च अग्नीध्रं प्रति आत्मप्रैषमन्त्रस्य व्याख्या (अविदहन्त इत्यादिना) (सं०१४१) .. .. ४६

१७ " पुरोडाशानामाच्छादने विधिः (मस्तिष्क इत्यादिना) (सं०१४१) .. .. .. .. .. .. ४६

१८ " पुरोडाशानामुपरि भस्मना आच्छादनम् (भस्मना इत्यादिना) (सं०१४१) .. .. .. .. ४६

१९ " पुरोडाशोपरिस्थभस्मनो निःसारणे साधनस्य नामोल्लेखः (वेदेन इत्यादिना) (सं०१४१) ... .. ४६

२० " वेदसाधनक साङ्गारभस्मसम्मार्ज्जनवेदनस्य प्रशंसा (अखलतीत्यादिना) (सं०१४२) .. .. .. ४६

२१ " पुरोडाशानां पर्य्यग्निकरणेन पशुसम्पर्कप्रकाशकस्य भस्माध्यूहनमन्त्रस्य अन्वयव्यतिरेकाभ्यां व्याख्या (पशवो वै इत्यादिना) (सं०१४२) .. .. .. ४७

२२ " पुरोडाशेन सह भस्मसम्पर्कस्य युक्ततादर्शनं (यजमान इत्यादिना) (सं०१४२) .. .. .. .. ४७

विषयः। पृष्ठे।

२३ मन्त्रे गार्हपत्याङ्गारप्रतप्तस्य प्राचीप्रक्षालनजलस्य वेदिमध्यस्थरेखात्रयेषु निनयने यो मन्त्रस्तत्रोक्तानामेकतादिदेवतानामुत्पत्तौ आख्यायिका (देवा वै इत्यादिना) (सं०१४३).. .. .. .. .. ४७

२४ " व्रीह्यवघातादौ देवकृतजीववधादिपापलेपस्य परम्परया जीवघातिनि पुरुषे पर्य्यवसानम् इत्युक्तिः (ते देवा इत्यादिना) (सं०१४३).. .. .. .. ४८

२५ " प्राचीप्रक्षालनोदकस्य वेदिमध्यस्थरेखात्रये निनयनम् (अन्तर्वेविदीत्यादिना) (सं०१४४).. .. .. ४८

२६ " वेदीरेखायां निनीतस्य जलस्य वह्निना प्रतपने विधिः (उल्मुकेनेत्यादिना) (सं०१४४) .. .. .. ४८

---

## ९ अनुवाके वेद्युक्तिः।

१ " वेदिजघनप्रदेशे स्थित्वा स्फ्यग्रहणे विधिः (देवस्य त्वेत्यादिना) (सं०१४८) .. .. .. .. .. ४८

२ " इन्द्रस्य बाहुरसीतिस्फ्याभिमन्त्रणमन्त्रप्रथभाग-गतेन्द्रशब्दविवक्षितार्थः (आददे इन्द्रस्येत्यादिना) (सं०१४९) .. .. .. .. .. ... ४८

३ " स्फ्याभिमन्त्रणमन्त्रद्वितीयभागे बाहुसदृशस्य स्फ्यस्य महिम्नः प्रख्यापने उक्तिः (सहस्रभृष्टिरित्यादिना) (सं०१४९) .. .. .. .. .. ४८

४ " स्फ्याभिमन्त्रणमन्त्रतृतीयभागे तेजोरूपेण वायुना सह स्फ्यदण्डस्य बाहुतुल्यरूपोपमाकरणेन यजमाने तेजोभवतीत्युक्तिः (वायुरसीत्यादिना) (सं०१६९) .. .. .. .. .. .. ४८

विषयः । पृष्ठे ।

५ मन्त्रे दर्भप्रहारमन्त्रे देवयजनीतिविशेषणदानेन पृथिव्या वान्तलोहितजनिताशुचित्वनिवृत्तिर्भवतीति वर्णयितुमाख्यायिका (विमा वैनामासुर इत्यादिना) (सं०१५०).. .. .. .. .. . .. ४८

६ " दर्भप्रहरणमन्त्रोत्तरार्द्धप्रयोजनम् (ओषध्यास्त इत्यादिना) (सं०१५०) .. ... .. .. ... ४६

७ " व्रजं गच्छेतिसलवणपांश्वपहरणमन्त्रस्य तात्पर्यार्थः (व्रजङ्गच्छेत्यादिना) (सं०१५०) .. .. .. ४६

८ " वेदिनिरीक्षणमन्त्रस्थस्य द्युशब्दस्य पर्ज्जन्यरूपत्वोपचारदर्शनं (वर्षतु ते इत्यादिना) (सं०१५१) .. ४६

९ " सलवणपांसुनिवपनमन्त्रीययोश्मान् यश्चेतियच्छब्दद्वयस्य पुनरुक्तिपरिहारे पुरुषभेदोक्तिः (बधान इत्यादिना) (सं०१५१).. .. .. .. .. ४६

१० " सलवणपांसूनामुत्करनिवपनेन भ्रातृव्याणां हननार्थसिद्धौ आख्यायिका (अररुर्वै इत्यादिना)(सं०१५१) ... ४६

११ " आग्नीध्रेणोत्करोत्तपांसुसमूहस्य अञ्जलौ ग्रहणे यो मन्त्रस्तस्य व्याख्या (ते मन्यन्त इत्यादिना) (सं०१५२) ४६

१२ " दर्भस्तम्बस्य चतुर्वारमुत्करदेशे हरणम् (स्तम्बयजुरित्यादिना) (सं०१५३) .. .. .. .. .. ५०

१३ " आहवनीयगार्हपत्ययोर्मध्ये वेदिजननार्थं स्फ्येन दक्षिणादिदिक्त्रये रेखाकरणे विधिः (असुराणां वै इत्यादिना) (सं०१५३) .. .. .. .. ५०

१४ " पूर्वमारभ्य स्फ्येन वेद्याः खनने यो मन्त्रस्तस्य तात्पर्यार्थः (देवस्य सवितुरित्यादिना) (सं०१५४) ... ५०

१५ " खनने तस्या पूर्वोत्तरभागे निम्नतासम्पादनम् (पृथिव्यै इत्यादिना) (सं०१५५) .. .. .. .. ५०

विषयः । पृष्ठे ।

१६ मन्त्रे वेदीपूर्व्वकोणयुग्मे अंसाकारेण पाश्चात्यकोणयुग्मे श्रोण्याकारेणोन्नत्यविधानम् (प्राञ्चौ इत्यादिना) (सं०१५५) .. .. .. .. .. .. ५१

१७ " त्वक्स्थानीयस्य भूमेरूर्द्धभागस्य स्फ्येनापसारणम् (उद्धन्तीत्यादिना) (सं०१५५) .. .. .. ५१

१८ " पुनर्यत्नेन तद्भूमिनिरूढतृणमूलादीनां पृथक् पृथक् छेदनम् (मूलञ्छिनत्तीत्यादिना) (सं०१५५) .. .. .. .. .. .. .. ५१

१९ " छेदने साधनविशेषोक्तिः (यज्ञस्तेनेत्यादिना) (सं०१५६) .. .. .. ... .. .. .. ५१

२० " प्रादेशपरिमाणेन वेदीखननम् (पितृदेवत्येत्यादिना) (सं०१५६) . .. .. .. .. .. ५१

२१ " चतुरङ्गुलपरिमितवेदीखननपक्षे प्रमाणभूता आख्यायिका (वेदिर्देवेभ्य इत्यादिना) (सं०१५६) ५१

२२ " पक्षे वेद्याश्चतुरङ्गुलखनने विधिः (चतुरङ्गुलमित्यादिना) (सं०१५६) .. .. .. .. .. ५१

२३ " यावत् वेदिखनने सिकतालाभः शल्यपरिहारश्च न भवेत् तावत् खननं कर्त्तव्यमिति विशेषविध्युक्तिः (आप्रतिष्ठायै इत्यादिना) (सं०१५६) .. .. ५१

२४ " दक्षिणत उन्नतभावं विधाय वेद्याः खननं (दक्षिणत इत्यादिना) (सं०१५७) .. .. .. .. ५१

२५ " वेद्याः सर्वत्र सिकतासदृशकोमलमृत्तिकायाः प्रक्षेपः (पुरीषवतीमित्यादिना) (सं०१५७) .. .. ५१

२६ " वेद्या उत्तरतः कार्योपयोगिकियत्प्रदेशस्यासुरत्वदोषनिवारणार्थं तमादाय तदुत्तरतो रेखाकरणं (उत्तरं परिग्राहमित्यादिना) (सं०१५७).. .. ५१

विषयः। पृष्ठे।

२७ मन्त्रे वेद्याः परितः कार्योपयोगिप्रदेशस्यासुरत्वदोषनिवारणार्थं तमादाय तद्दक्षिणपश्चिमोत्तरदिक्त्रये रेखाकरणमन्त्रत्रयाणामर्थस्य स्पष्टतादर्शनम् (ऋतमस्पृतेत्यादिना) (सं०१५८) .. .. .. .. ५२

२८ " स्फ्येन वेद्याः समीकरणम् (क्रूरमिवेत्यादिना) (सं०१५९) ५२

२९-३२" वेदिसमीकरणमन्त्रगतोर्वीवत्यादिकतिपयशब्दव्याख्यादर्शनम् (उर्वी, पुरा, उदादाय, तान्धीरास, इत्यादिमन्त्रचतुष्टयेन) (सं०१५९) .. .. ५२

३३ " प्रोक्षण्याद्यासादनार्थमग्नीध्रं प्रति प्रैषमन्त्रोक्तिः (प्रोक्षणीरासादयेत्यादिना) (सं०१५९) .. .. .. ५२

३४ " आग्नीध्रकर्तृकं प्रोक्षण्याद्यासादनं (प्रोक्षणीरासादयतीत्यादिना) (सं०१५९) .. .. .. .. ५२

३५ " प्रोक्षणीनामपां बाहुल्येनासादने देवोक्तिः (उवाच इत्यादिना) (सं०१६०) ... .. .. .. ५२

३६ " वेद्यध्यानपूर्वकमुत्करे स्फ्यस्य परित्यागः (स्फ्यमुदस्यन्नित्यादिना) (सं०१६०) .. .. .. ... ५३

---

## १० अनुवाके प्रोक्षण्याद्यासादनादिकृत्यम्।

१ " मन्त्रे उत्करे परित्यक्तं स्फ्यं समादाय तस्य वेद्यां पूर्वादिदिक्षु तीर्यगादिरूपेण धारणम् (वज्रो वै स्फ्य इत्यादिना) (सं०१६०) .. .. .. .. ५३

२ " स्फ्यं संस्थाप्य हस्तयोः प्रक्षालनं (हस्ताववनेनिक्ते इत्यादिना) (सं०१६१) .. .. .. .. ५३

३ " स्फ्यस्य प्रक्षालनम् (स्फ्यं प्रक्षालयतीत्यादिना) (सं०१६१) .. .. .. .. .. .. ५३

विषयः। पृष्ठे।

४ मन्त्रे अग्नीध्रकर्तृकं इध्मवर्हिषोरुपसादनं (इध्मावर्हिरित्यादिना) (सं०१६१) .. .. .. .. ५३

५ " पूर्वस्यान्दिशि अग्रभागं कृत्वा इध्मवर्हिषोरुपसादनमिति विशेषोक्तिः (नपुरस्तादित्यादिना) (सं०१६१) .. .. .. .. .. .. ५३

६ " वद्यां दक्षिणत इध्मस्य तदुत्तरतो वर्हिषश्च पूर्वाग्रस्य उपसादनम् (दक्षिणमिध्ममित्यादिना) (सं०१६२) ५४

## तृतीयप्रपाठके पौर्णमासेष्टिः।

### १ अनुवाके आज्यहविर्ग्रहणम्।

१ " स्रुवादितपनमन्त्रयोरनिष्टपरिहारेष्टसिद्धिरूपफलोक्तिः (प्रत्युष्टं रक्ष इत्यादिना) (सं०१६८) .. ५५

२ " स्रुचः सम्मार्ज्जनम् (स्रुचः सम्मार्ष्टीत्यनेन) (सं०१६९) ५५

३ " सर्वाग्रे स्रुवस्य सम्मार्ज्जनम् (स्रुवमग्रे इत्यादिना) (सं०१६९) .. .. .. .. .. .. ५५

४ " सम्मार्जनमन्त्रोक्तक्रमेण जुह्वादीनां सम्मार्जनम् (अथ जुह्वमित्यादिना) (सं०१६९) .. .. .. .. ५५

५ " जुह्वादीनां प्रशंसा (असौ वै जुहूरित्यादिना) (सं-०१६९) .. .. .. .. .. .. .. ५५

६ " पूर्वोक्तवृत्तान्तवेदनप्रशंसा (समेधन्ते इत्यादिना) (सं०१६९).. .. .. .. .. .. .. ५५

७ " वेदादिना स्रुवादिसम्मार्ज्जने तदग्रमूलभागाभ्यां कृतसम्मार्जनस्य फलं (यदिकामयेतेत्यादिना) (सं०-१७०) .. .. .. .. .. .. .. ५५

विषयः। पृष्ठे।

८ मन्त्रे स्रुवादिसम्मार्ज्जने मतान्तरन्यासः (तदु वा आहुरित्यादिना) (सं०१७०) .. .. .. .. .. ५५

९ " अग्रत आरभ्य स्रुवबिलस्य निःशेषेण सम्मार्ज्जनं (प्राचीमभ्याकारमित्यादिना) (सं०१७०) .. ५६

१० " स्रुवदण्डस्य सम्मार्ज्जने तन्मूलत आरम्भः (अधस्तादित्यादिना) (सं०१७०) .. .. .. .. .. ५६

११ " स्रुवबिलदण्डयोस्तत्सम्मार्ज्जनक्रमस्य लौकिकदृष्टान्तेन तुल्यता (तस्मादरत्नौ इत्यादिना) (सं०१७१) .. ५६

१२ " स्रुवस्य सर्वाग्रे सम्मार्ज्जनस्य रूपकेन हेतूपपादनम् (प्राणो वै स्रुव इत्यादिना) (सं०१७१) .. .. ५६

१३ " स्रुवजुहूपभृद्ध्रुवादीनां प्राणहस्तदयात्मभावेन रूपककल्पनाय उल्लिखितयोः प्राणापानयोः प्रसङ्गेन वेदनप्रशंसा (तौ प्राणापानौ इत्यादिना) (सं०१७२) ५६

---

२ अनुवाके आज्यहविर्ग्रहणशेषः।

१ " सम्मार्ज्जनसाधनानां वेदपरिवासनादीनामग्नौ प्रक्षेपः (दिवःशिल्पमवततमित्यादिना) (सं०१७२) .. ५६

२ " दर्भाणां महिमा (आपो वै इत्यादिना) (सं०१७२) .. .. .. .. .. .. .. ५६

३ " अनुष्टुप्छन्दोयुक्तेन मन्त्रेण सम्मार्जनीयमित्युक्तिः (अनुष्टुभर्चा इत्यनेन) (सं०१७२) .. .. .. ५६

४ " अनुष्टुप्छन्दो व्यवहारस्योद्देशः (आनुष्टुभ इत्यादिना) (सं०१७३) .. .. .. .. .. .. .. ५६

५ " अनुष्टुप्छन्दोयुक्ताया ऋचोऽपि प्रशंसा (अथो ऋग्वाव इत्यादिना) (सं०१७३) .. ... .. ५७

विषयः। पृष्ठे।

६ मन्त्रे सम्मार्जनदर्भाणामुत्करप्रक्षेपपक्षस्य समर्थनं (तान्येके इत्यादिना) (सं०१७३) .. .. .. ५७

७ ' पुनस्तेषामुत्करप्रक्षेपपक्षं दूषयित्वा अग्निप्रक्षेपपक्षस्य स्थापनम् (अथो खल्वस्य इत्यादिना) (सं०१७४) ५७

८ " सम्मार्ज्जनदर्भाणामग्निप्रक्षेपपक्षस्य दृढीकरणम् (नवदाव्यासु इत्यादिना) (सं०१७४) .. .. .. ५८

९ " अग्निसम्मार्जनदर्भाणामपि अग्नौ प्रक्षेपे विनियोगः (येभूतानामित्यादिना) (सं०१७५) .. .. ५८

१० " अग्नौ दर्भाणां प्रक्षेपस्य योग्यताप्रदर्शनम् (एषा वै इत्यादिना) (सं०१७५) .. .. .. .. ५८

३ अनुवाकेपि आज्यहविर्ग्रहणशेषः।

१ " योक्त्रबन्धनाय गार्हपत्यसमीपे पत्न्या उपवेशनम् (अयज्ञो वै इत्यादिना) (सं०१७६).. .. .. ५८

२ " उपविश्यैव योक्त्रबन्धनं कर्त्तव्यमित्युक्तिः (यत्तिष्ठन्ती इत्यादिना) (सं०१७६) .. .. .. ... ५८

३ " कस्मिन् देशे योक्त्रबन्धनकाले पत्नी उपविशेदित्यस्य निर्णयः (यत्पश्चादित्यादिना) (सं०१७६) .. ५८

४ " सौमनस्यप्राप्तौ इतराभ्यो योषिद्भ्यो अस्या विशेषः (अग्नासाना इत्यादिना) (सं०१७७) .. .. ५९

५ " योक्त्रबन्धनेन पत्न्याः कर्म्मसु अस्वातन्त्र्यात् अनुव्रतसूचितार्थाभिधेयता (अग्नेरनुव्रता इत्यादिना) (सं०१७७) .. .. .. .. .. .. ५९

६ " योक्त्रबन्धनस्य कर्म्माङ्गत्वे लौकिकवैदिकप्रसिद्धिदर्शनम् (तस्मादाज्ञरित्यादिना) (सं०१७७) .. .. ५९

विषयः। पृष्ठे।

७ मन्त्रे प्रकारान्तरेण पत्न्या योक्त्रबन्धनस्य स्तुतिः (यद्योक्त्रमित्यादिना) (सं०१७७) .. .. .. .. ५९

८ " पत्न्या अञ्चलबन्धनेपत्युः कोऽभिप्रायस्तस्य प्रकाशः (युक्तं क्रियाता इत्यादिना) (सं०१७८) .. .. ५९

९ " यजमानस्याञ्चलेन सह पत्न्या वस्त्राञ्चलस्य योक्त्रग्रन्थिबन्धनम् (ग्रन्थिं ग्रथ्नातीत्यादिना) (सं०१७८) ५९

१० " यज्ञे यजमानपत्न्या गार्हपत्यजघनप्रदेशे उपवेशने प्रयोजनम् (सुप्रजसस्त्वा इत्यादिना) (सं०१७८) ५९

११ " आज्यनिरूपणे पठनीयस्य मह्यीनामितिमन्त्रस्य पूर्वभागस्य स्पष्टार्थः (मह्यीनां पयोसीत्यादिना) (सं-१८०) .. .. .. .. .. .. .. ५९

१२ " उक्तमन्त्रोत्तरभागस्थस्य अह्यीयमाणपदस्याभिप्रायः (तस्य तेऽह्यीयमाणस्येत्यादिना) (सं०१८०) .. ५९

---

४ अनुवाके आज्याधिश्रयणोक्तिः।

१ " आज्यस्य यागाङ्गत्वप्रतिपादने आख्यायिका (घृतञ्च वै इत्यादिना) (सं०१८०) .. .. .. ... ६०

२ " पत्नीकर्तृकाज्यावेक्षणम् (पत्न्यवेक्षते इत्यादिना) (सं०१८१) .. .. .. ... .. .. ६०

३ " गार्हपत्ये आज्यस्याधिश्रयणमन्त्रस्य व्याख्या (अमेध्यं वा एतदित्यादिना) (सं०१८२) .. .. .. ६०

४ " अग्नित उत्तार्य आज्यस्थापनाय स्फेन अग्न्युदग्देशे रेखाकरणम् (स्फ्यस्य वर्त्मन् इत्यादिना) (सं०१८२) ६०

५ " तत्तन्मन्त्रेण तत्तदाकृतिदानायैतदाज्यं पर्याप्तं भवत्वित्येतदर्थमुक्तिः (अग्नेर्जिह्वासीत्यादिना) (सं०१८२) ६०

विषयः। पृष्ठे।

६ मन्त्रे उदगग्राभ्यां पवित्राभ्यामाज्यस्योत्पवनं (तद्वा अत इत्यादिना) (सं०१८२).. .. .. .. .. ६१
७ " आज्यस्य त्रिवारोत्पवनार्थं विधिः (पुनराहारमित्यादिना) (सं०१८३) .. .. .. .. .. ६१
८ " त्रिवारोत्पवनमन्त्रत्रयपठितानां शुक्रमित्यादिपदानां स्पष्टार्थः (शुक्रमसीत्यादिना) (सं०१८३) .. ६१
९ " यजुर्मन्त्रेणापि त्रिवारमाज्यस्योत्पवने विधिः (त्रिर्यजुषा इत्यादिना) (सं०१८३) .. .. .. .. ६१
१० " आज्यस्य वारत्रयोत्पवने तात्पर्य्यम् (त्र्यावृद्धि यज्ञ इत्यादिना) (सं०१८३) .. .. .. .. ६१
११ " आज्योत्पवनपवित्राभ्यामेव प्रोक्षणीपात्रस्थजलस्योत्पवनं (अथाज्यवतीभ्यामप इत्यादिना) (सं०-१८३) .. ... ... .. .. ... .. ६१
१२ " ऋङ्मन्त्रेण यजुर्मन्त्रेण च प्रोक्षणीस्थजलोत्पवने विधिदर्शनं (आपो वै इत्यादिना) (सं०-१८४) .. .. .. .. .. .. .. ६१
१३ " ध्रुवजुहूग्रहणमन्त्रेषु धामयजुःशब्दयोर्विभिया पठनस्य तात्पर्य्यम् (शुक्रन्त्वेत्यादिना) (सं०१८५) .. ६२

---

### ५ अनुवाके आज्यावेक्षणं ग्रहणञ्च।

१ " आज्यावेक्षणे विशेषं वक्तुन्देवासुरप्रसङ्गेनाज्यस्तुतिः (देवासुरा इत्यादिना) (सं०१८५).. .. .. ६२
२ " आज्याभिघारणरूपस्य चक्षुषा आज्यावेक्षणस्य ब्रह्मवादिप्रसङ्गेन प्रशंसा (ब्रह्मवादिन इत्यादिना) (सं०१८५) .. .. .. .. .. .. ६२

| विषयः। | पृष्ठे। |
| --- | --- |
| ३ मन्त्रे अर्द्धनिमीलितचक्षुषैवाज्यस्य निरीक्षणे विधिः (ईश्वरो वा एष इत्यादिना) (सं०१८६) .. . | ६२ |
| ४ " स्रुवे आज्यग्रहणम् (आज्यं गृह्णातीत्यादिना) (सं०-१८६) .. .. .. . .. .. .. | ६२ |
| ५ " प्रत्येकाकृतौ जुह्वादौ चतुरादिवारं आज्यं गृह्णीयादित्युक्तिः (चतुर्जुह्वामित्यादिना) (सं०१८६) .. | ६२ |
| ६ " उपभृति अष्टवारगृहीताज्यापेक्षया जुह्वां गृहीतमाज्यमधिकमित्युक्तिः (यजमानदेवत्या इत्यादिना) (सं०१८६) .. .. .. .. .. .. | ६३ |
| ७ " जुह्वादौ आज्यग्रहणसङ्ख्यया पदशफस्तनादिसाम्यमादाय स्रुचो गोरूपकल्पनया स्तुतिः (गौर्वै स्रुच इत्यादिना) (सं०१८७) .. .. .. .. | ६३ |
| ८ " जुह्वादौ गृहीताज्यस्य प्रयाजाद्यङ्गत्वदर्शनं (यज्जुह्वां गृह्णातीत्यादिना) (सं०१८७) .. .. .. | ६३ |


---

६ अनुवाके इध्मबर्हिःपूर्वकहविरासादनम्।


| | |
| --- | --- |
| १ " यज्ञकर्मोपयोगिनीनामपामभिमन्त्रणम् (आपो देवीरग्रे इत्यादिना) (सं०१९४) .. .. .. | ६३ |
| २ " कृष्णोऽस्याखरेष्ठ इत्यस्य इध्मप्रोक्षणमन्त्रस्य व्याख्यानपूर्वकं स्पष्टार्थः (अग्निर्देवेभ्य इत्यादिना) (सं०-१९५) .. .. .. .. .. .. .. .. .. | ६४ |
| ३ " वेदिप्रोक्षणमन्त्रगतयोः वेदिबर्हिःशब्दयोः प्रजापृथिवीशब्दाभ्यां सह रूपककल्पनेन तयोराधाराधेयभावदर्शनम् (वेदिरसि इत्यादिना) (सं०१९५) .. .. .. .. .. .. .. | ६४ |

| विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|
| ४ मन्त्रे वर्हिःप्रोक्षणमन्त्रगतयोः "वर्हिःस्रुक्स्रुव्दयोः" प्रजा यजमानशब्दाभ्यां सह रूपककल्पनेन तयोराधाराधेयभावदर्शनम् (वर्हिरसि इत्यादिना) (सं०-१९५) .. .. .. .. .. .. .. | ६४ |
| ५ " वर्हिषि लोकत्रयं भावयित्वा क्षतस्य वेदिमध्यासादित वर्हिःप्रोक्षणस्य त्रिलोकनिमित्तत्वदर्शनं (दिवे त्वेत्यादिना) (सं०१९६) .. .. .. .. | ६४ |
| ६ " हस्तस्थितप्रोक्षणपात्रेण सह वर्हिःप्रोक्षणशेषकिञ्चिज्जलं प्रसारितहस्तेन यथा वर्हिःप्रत्यग्भागे पतेत् तथा तस्य उत्क्षेपः (अथ तत इत्यादिना) (सं०१९६) .. .. .. .. .. | ६४ |
| ७ " वेदेर्दक्षिणश्रोणिमारभ्य उत्तरश्रोणिपर्य्यन्तं वर्हिःप्रोक्षणशेषजलस्य निनयनमन्त्रस्य व्याख्यापूर्वकं तन्निनयने विधिः (स्वधा पितृभ्य इत्यादिना) (सं०१९६) .. .. .. .. .. .. | ६४ |
| ८ " पूर्वप्रोक्षितवर्हिषां बन्धनग्रन्थेः शिथिलीकरणम् (ग्रन्थिं विस्रंसयतीत्यादिना) (सं०१९७).. .. | ६५ |
| ९ " पूर्वशिथिलीकृतवर्हिर्बन्धनग्रन्थेरग्रं धृत्वा ऊर्द्धमुत्कृष्य विमोचनम् (ऊर्द्धं प्राञ्चमित्यादिना) (सं०१९७) | ६५ |
| १० " आहवनीयसमीपे आहृत्य प्रस्तरानयने पठनीयमन्त्रस्य तात्पर्यार्थः (विष्णोस्तूपोसीत्याहेत्यादिना) (सं०१९८) .. .. .. .. .. | ६५ |
| ११ " वेदिपूर्वभागस्थितब्रह्मयजमानान्यतरकर्त्तृकं प्रस्तरधारणं (पुरस्तादित्यादिना) (सं०१९८) .. | ६५ |
| १२ " प्रादेशमात्रोर्द्धप्रदेशे उक्तप्रस्तरस्य धारणम् (इयन्तं गृह्णातीत्यादिना) (सं०१९८) .. .. .. | ६५ |

विषयः। पृष्ठे।

१३ मन्त्रे उक्तप्रस्तरोर्द्ध्वोन्नयनस्य प्रशंसा (इयन्तं गृह्णाति इत्यादिना) (सं०१९८) .. .. .. .. ... ६५

१४ " उक्तप्रस्तरोर्द्ध्वोन्नयनस्य पुनःप्रशंसा (इयन्तमित्यादिना) (सं०१९८) .. .. .. .. .. .. ६५

१५ " प्रस्तरस्य यावदूर्द्ध्वधारणे सामर्थ्यं पक्षान्तरेण तावत्तस्योर्द्ध्वधारणे विधिः (अपरिमितं गृह्णाति इत्यादिना) (सं०१९८) .. .. .. .. .. ६५

१६ " उक्तप्रस्तरे उत्पवनार्थकपवित्रद्वयस्य स्थापनम् (तस्मिन् पवित्रे इत्यादिना) (सं०१९८) .. .. ६५

१७ " वेद्यां बर्हिरास्तरणमन्त्रस्थस्य ऊर्णेत्यादिवाक्यद्वयस्य व्याख्या (ऊर्णाम्रदसं त्वेत्यादिना) (सं०-१९९) .. .. .. .. .. .. .. ६५

१८ " वेद्यां बर्हिषामास्तरणम् (बर्हिस्तृणातीत्यादिना) (सं०१९९) .. .. .. .. .. .. ६५

१९ " यथा वेदिभूमिर्नदृश्येत तथा बर्हिरास्तरणं कर्त्तव्यं, इति विशेषोक्तिः (अनतिदृश्नमित्यादिना) (सं०-१९९) .. .. .. .. .. ... .. ६६

२० " यूपार्थकपरिधित्रयस्थापनमन्त्रस्थस्य गन्धर्वोसीत्यादिवाक्यस्य तात्पर्य्योक्तिपूर्वकं यूपार्थकपरिधित्रयस्थापनविधिः (धारयन्नित्यादिना) (सं०-१९९) .. .. .. .. .. .. .. ६६

२१ " आहवनीयाभिमन्त्रणमन्त्रस्थस्य सूर्य्यस्त्वेतिवाक्यद्वयस्य व्याख्या (सूर्य्यस्त्वेत्यादिना) (सं०२००) .. .. ६६

२२ " आघारसमिद्द्वयस्थापनमन्त्रस्थानां वीतिहोत्रेत्यादिवाक्यत्रयाणां तात्पर्य्यार्थः (वीतिहोत्रमित्यादिना) (सं०२००) .. .. .. .. .. .. ६६

विषयः। पृष्ठे।

२३ मन्त्रे दर्भरूपविधृतिनामकपदार्थद्वयस्य वेदिमध्ये तिर्य्यगासादनमन्त्रस्य तात्पर्य्यार्थः (विशो यन्त्रेस्य इत्यादिना) (सं०२००) .. .. .. .. .. ६६

२४ " विधृतिद्वयस्य तिर्य्यगासादने प्राप्ते उत्तराग्रस्य तस्य निधानम् (उदीचीनाग्रेत्यादिना) (सं०२००) .. ६६

२५ " वेद्यां प्रस्तरासादनमन्त्रस्य वसूनां रुद्राणामित्यादिपदानां तात्पर्य्यार्थः (वसूनामित्यादिना) (सं०-२०१) .. .. .. .. .. .. .. ६६

२६ " प्रस्तरे जुह्वादाद्यासादनमन्त्रस्य जुह्वरसीत्यादिवाक्यद्वयस्य तात्पर्य्यार्थः (जुह्वरसि इत्यादिना) (सं०२०१) .. .. .. .. .. .. ६६

२७ " प्रस्तरे आसादितजुह्वादिस्पर्शपूर्वकतदभिमन्त्रणमन्त्रस्य एता इत्यादिवाक्यत्रयस्य तात्पर्य्यार्थः (एता असदन्नित्यादिना) (सं०२०१) .. .. .. ६७

---

७ अनुवाके प्रज्वलिताग्नौ होतुं आघाराख्याज्यभागद्वयस्योक्तिः।

१ " अध्वर्युणा होतारं प्रति वक्तव्यस्य प्रैषाख्यस्य मन्त्रस्य उक्तिः (अग्निना वै इत्यादिना) (सं०२०५) .. ६७

२ " वैरितिरस्काराय अग्नौ प्रज्वलिते कर्त्तव्ये तत्र समन्तकान्येकविंशतिकाष्ठानि प्रक्षेप्याणि इत्युक्तिः (एकविंशतिमित्यादिना) (सं०२०६) .. .. ६७

३ " होता प्र वो वाजा इत्यादिसामिधेन्याख्यर्क्पाठात् पूर्वमग्नौ प्रक्षेप्याणां काष्ठानां सङ्ख्यायास्तात्पर्य्योक्तिः (पञ्चदशेध्मेत्यादिना) (सं०२०६) .. .. ६७

४ " षड्ऋतूद्देशेन षट्काष्ठानामग्नौ प्रक्षेपः (त्रीन् परिधीनित्यदिना) (सं०२०६).. .. .. .. .. ६७

विषयः। पृष्ठे।

५ मन्त्रे अग्निप्रज्वालकवायूत्पादनार्थं कुशमुष्टिनिर्मितवेद-नामकवेदीसम्मार्ज्जनीविशेषेण अग्नेरुपवीजनम् (वेदेनोपवाजयतीत्यादिना) (सं०२०६) .. .. ६८

६ " वेदेन अग्नेर्यदुपवीजनमुक्तं तत् त्रिवारं कर्त्तव्य-मित्युक्तिः (त्रिरुपवाजयतीत्यादिना) (सं०-२०६) .. .. .. .. .. .. .. ६८

७ " वेदोपरि स्रुवं संस्थाप्य स्रुवेण आघारनामक प्रथमा-हुतिहोमः (वेदेनेत्यादिना) (सं०२०७) .. .. ६८

८ " यैर्दर्भैः पूर्वमिध्मो बद्धः तैरग्निसम्मार्जनार्थमग्नीध्रस्य प्रेषणे प्रैषमन्त्रोक्तिः ( अग्निमग्नीदित्यादिना ) (सं०२०७).. .. .. .. .. .. .. ६८

९ " परिधिसम्मार्जनार्थम् अग्निसम्मार्जनप्रैषमन्त्रे त्रि-शब्दस्य वीप्सा ( परिधीनित्यादिना ) (सं०-२०७) .. .. .. .. .. .. .. ६८

१० " तैर्दर्भैः प्रत्येकपरिधेस्त्रिस्त्रिः सम्मार्जनं कर्त्तव्यमित्युक्तिः (त्रिस्त्रिः सम्मार्ष्टीत्यादिना) (सं०२०७) .. ६८

११ " आघाराहुत्योर्द्वयोर्होमविधाने स्थित्वा एकामपरामु-त्थाय जुहुयादिति क्रमेण गुणभेदोक्तिः (आसीन इत्यादिना) (सं०२०७) .. .. .. .. ६८

१२ " सारथिद्वयस्य रथोपर्य्यधस्च उत्थानोपवेशक्रियायाः साद्दश्यमादाय आघारस्यापि रथत्वे प्राप्ते तद्वेदनप्रशंसा (वहन्त्येनमित्यादिना) (सं०-२०८) .. .. .. .. .. .. .. ६९

१३ " द्वितीयाघारहोमे कर्त्तव्ये पठनीयमन्त्राणां मध्ये भु-वनमसीति प्रथममन्त्रस्य स्पष्टार्थः ( भुवनमसी-त्यादिना) (सं०२०८).. .. .. .. .. ६९

विषयः। पृष्ठे।

१४ मन्त्रे जुह्वपभृदादानमन्त्रद्वये अग्निसवितृपदद्वयस्य सत्त्वात्तत्र तत्पदद्वयस्य सम्बन्धो युक्त इति व्यवस्थाकथनम् (जुह्वे ह्यग्निरित्यादिना) (सं०२०८) .. ६९

१५ " मध्यमपरिधिमनतिक्रम्य आघाराहुतिदानार्थमाहवनीयस्य निकटे दक्षिणतो उत्तरस्यां दिशि सव्यभावेन गमनसमये अग्निं तत्पश्चादवस्थितं यज्ञपुरुषं प्रति च पादस्पर्शशङ्कया क्षमाप्रार्थने पाठ्यस्य अग्नाविष्णू इति मन्त्रस्य अग्नाविष्णू इति वाक्यार्थस्य निदर्शनं (अग्नाविष्णू मा वामित्यादिना)(सं०२०९) ६९

१६ " वेदिमध्ये यज्ञपुरुषस्थानकल्पनायां पाठ्यमन्त्रप्रतिपाद्यस्य यज्ञरूपस्थानस्य यज्ञपुरुषाधिष्ठिततया आतिशय्यदर्शनम् (विष्णोःस्थानमित्यादिना) (सं०-२०९) .. .. .. .. .. .. .. ६९

१७ " आघाराहुतिदाने पाठ्यमन्त्रस्थस्येन्द्रशब्दस्य तात्पर्य्यार्थः (इत इन्द्र इत्यादिना) (सं०२१०) .. ६९

१८-२१ " उक्तमन्त्रगतैरूर्ध्वसमारभ्याक्रुतेन्द्रशब्दैः सूचितार्थस्य दर्शनम् (समारभ्य, आघारं, अक्रुत, इन्द्रावान्, इति मन्त्रचतुष्टयेन) (सं०२१०) .. .. .. ६९

२२ " बृहद्भाणमन्त्रस्थस्य बृहद्भा इति शब्दस्य तात्पर्य्यार्थः (बृहद्भा इत्यादिना) (सं०२११) .. .. .. ७०

२३ " आघाराहुतिं दत्त्वा प्रत्यागमनकाले हस्तस्थजुहूपभृतोः परस्परं स्पर्शमकारयित्वा प्रतिनिवर्त्तितव्यं इत्युक्तिः (यजमानदेवत्येत्यादिना) (सं०२११) .. ७०

२४ " जुह्वादिना सह स्रुचमस्पर्शयन्नुदक्प्रत्यागमनकाले जप्यमन्त्रस्थपदवाक्यार्थदर्शनम् (पाहि मा इत्यादिना) (सं०२११) .. .. .. .. .. ७०

विषयः। पृष्ठे।

२५ मन्त्रे आघाराहुतिं दत्त्वा जुह्वा सह ध्रुवायाः संयोगः कर्त्तव्य इत्युक्तिः (शिरो वै इत्यादिना) (सं०२१२) ७०

२६ " उक्तसंयोगः किं द्विवारं कर्त्तव्य इति पूर्वपक्षः (द्विः समनक्तीत्यादिना) (सं०२१२) .. .. .. ७०

२७ " उक्तसंयोगस्त्रिवारं कर्त्तव्य इति सिद्धान्तः (तदाहुरित्यादिना) (सं०२१२) .. .. .. .. ७०

२८ " जुह्वा सह ध्रुवासंयोगे पठनीयमन्त्रस्थज्योतिःशब्दविवक्षितार्थदर्शनं (मखस्येत्यादिना) (सं०२१२).. ७१

---

## ८ अनुवाके इडाभक्षणपुरोडाशादिविध्युक्तिः ।

१ " इडाभक्षणार्थं वेद्या उत्तरभागे अवस्थितानां ब्रह्मादीनां मध्ये सञ्चरतः कस्यापि बाधकस्य परिहाराय इडाभागं पुरोडाशभागादवच्छिद्य हस्ते तं धृत्वाऽध्वर्युः सञ्चरेदित्यस्य विधानम् (धिष्णिया वै इत्यादिना) (सं०२२७) .. .. .. .. ७१

२ " इडायाश्चपूर्वभागे प्रत्यङ्मुखासीनाय होत्रे सर्वसाधारण्या महेडायाः सकाशात् किञ्चिदादाय या इडा प्रदीयते सैव अवान्तरेडा, तस्या विधानम् (पुरस्तादित्यादिना) (सं०२२८) .. .. .. ७१

३ " होतुस्तर्जन्याः पर्वद्वये घृतम्रक्षणं (द्विरङ्गुलावनक्तीत्यादिना) (सं०२२८) .. .. .. .. .. ७२

४ " होतुर्हस्ते तामवान्तरेडां चतुर्वारं पूर्ववद्दद्यादितिविशेषोक्तिः (सकृदुपस्तृणातीत्यादिना) (सं०२२८) .. .. .. .. .. ७२

F 2

विषयः । पृष्ठं ।

५ मन्त्रे इडाभक्षणकाले होत्रा किञ्चिन्मन्त्रान्तरं पठ्यते, तथा होतुर्मुखमभिवीक्ष्य अध्वर्युयजमानाभ्यां यत्नाच्च तस्य प्रत्युपक्रान्तरूपस्य मन्त्रस्य विधानम् (मुखमिवेत्यादिना) (सं०२२९) .. .. .. ७२

६ " अध्वर्युयजमानाभ्यां होतृहस्तगतेडायाः स्पर्शनम् (पशवो वै इत्यादिना) (सं०२२९) .. .. ७२

७ " पुनस्ताभ्यामेव तथा पाठ्यस्य मन्त्रान्तरस्य कथनम् (उपहूत इत्यादिना) (सं०२२९) .. .. .. ७२

८ " होतृमुखावलोकनपूर्वकमन्त्रपाठकर्मप्रशंसा (उपहूत इत्यादिना) (सं०२२९) .. .. .. .. ७२

९ " अवान्तरेडावदानस्य मुखावलोकनपूर्वकमन्त्रपाठस्य च वाक्प्राणदेवयोः प्रियमित्येतदर्थं स्तुतिः (यां वै हस्त्यामित्यादिना) (सं०२२९) .. .. .. ७२

१० " इडाभक्षणानन्तरं पुरोडाशस्य बर्हिषि स्थापनार्थं तर्कः (अथ वै इत्यादिना) (सं०२३०) .. .. .. ७२

११ " बर्हिषि पुरोडाशस्य स्थापनेन देवतानां भागप्राप्तिर्भवति इत्यर्थे आख्यायिका (यजमानमित्यादिना) (सं०२३०) .. .. .. .. .. ७२

१२ " बर्हिषि स्थापितं पुरोडाशं चतुर्धा विभज्यादित्युक्तिः (चतुर्धा करोतीत्यादिना) (सं०२३०) .. ७३

१३ " बर्हिषि पुरोडाशस्य स्थापनपूर्वकप्रशंसा (बर्हिषदमित्यादिना) (सं०२३०) .. .. .. .. ७३

१४ " बर्हिषि पुरोडाशस्थापनकर्म्मण एव प्रकारान्तरेण प्रशंसा (अथो खलु इत्यादिना) (सं०२३१) .. ७३

१५ " पुरोडाशस्य चतुर्धाकरणविध्यन्तरस्य प्रचारपूर्वकं प्रशंसा (चतुर्द्धेत्यादिना) (सं०२३१) .. .. ७३

विषयः। पृष्ठे।

१६ मन्त्रे चतुर्धाविभक्तानां तत्तत्पुरोडाशभागानामिदमस्येदमस्येतिनिर्देशविधानम् (तमभिमृशेदित्यादिना) (सं०२३१) .. .. .. .. .. .. .. ७३

१७ " उक्तचतुर्भागानामेकैकं भागं अग्नीध्रादिभ्यः क्रमेण दद्यादित्युक्तिः (अग्नीध्रे इत्यादिना) (सं०२३१) .. ७३

१८ " अग्नीध्रस्य हस्ते प्रथमभागदानप्रकारः (सकृदुपस्तीर्येत्यादिना) (सं०२३२) .. .. .. .. ७३

१९ " ततस्तेषां द्वितीयं भागं ब्रह्मणे वेदेन देयं तस्य प्रकारः (वेदेनेत्यादिना) (सं०२३२) .. .. .. ७४

२० " ब्रह्मणे पुनर्भागान्तरं पात्रान्तरेण देयमित्युक्तिः (अथ काममन्येनेत्यनेन) (सं०२३२) .. .. .. ७४

२१ " ततस्तेषां तृतीयं भागं होत्रे देयमित्यस्य विधानम् (ततो होत्रे इत्यादिना) (सं०२३२) .. .. ७४

२२ " ततस्तेषां चतुर्थं भागमध्वर्यवे देयमित्यस्य विधिः (अथाध्वर्यव इत्यादिना) (सं०२३२) .. .. .. ७४

२३ " अग्नीध्रादिभ्यो दक्षिणादाने आदेशः (तस्माद्धविरित्यादिना) (सं०२३२) .. .. .. .. .. .. ७४

२४ " अग्नीध्रमुद्दिश्य प्रैषमन्त्रस्योत्पादनं (अग्निमग्नीदित्यादिना) (सं०२३३) .. .. .. .. .. .. ७४

२५ " होतारं प्रति वक्तव्यस्य इषिता दैव्या इत्यादि प्रैषमन्त्रस्य इषितभन्नवाचेतिपदद्वयस्य अभिप्रायप्रदर्शनं (इषिता दैव्या इत्यादिना) (सं०२३३) ७४

२६ " होतारं प्रति वक्तव्यस्य स्वगा दैव्या इत्याद्यपरप्रैषमन्त्रस्य स्वगास्वस्तिपार्थिवेतिशब्दत्रयाणां क्रमेणाभिप्रायदर्शनं (स्वगा दैव्या इत्यादिना) (सं०२३३) ७४

## ९ अनुवाके स्रुग्व्यूहनादिकार्योक्तिः ।


विषयः । पृष्ठे ।

१ मन्त्रे प्रथमकाण्डस्यैकादशानुवाकोक्ताभ्यां वाजस्य मेत्येवमादिभ्यां ऋग्भ्यां जुहूपभृतोर्वेद्यां स्थापनम् (अथ स्रुचावित्यादिना) (सं०२३४).. .. .. ७५

२ " वेद्यां पूर्वतो जुहूं पश्चिमत उपभृतमिति तयोः स्थापने विशेषोक्तिः (प्राचीं जुहूमित्यादिना) (सं०२३४) .. .. .. .. .. .. ७५

३ " अथ स्रुचावितिमन्त्रस्थस्य वाजवतीभ्यामितिपदस्य द्विवचनान्ततात्पर्य्यदर्शनपूर्वकं प्रशंसनं (द्वाभ्यामित्यादिना) (सं०२३४) .. .. .. .. .. ७५

४ " जुहूद्वारा परिधित्रयस्पर्शने पठनीयमन्त्रस्य स्पष्टार्थतादर्शनम् (वसुभ्य इत्यादिना) (सं०२३४) .. ७५

५ " जुहूपभृद्ध्रुवासु प्रस्तरनाम्नो दर्भमुष्टेरग्रमध्यमूलानां क्रमेण मज्जनमिति स्रुक्षु प्रस्तराञ्जनकर्म्मणो विधानम् (स्रुक्षु प्रस्तरमित्यादिना) (सं०२३५) .. ७५

६ " जुह्वां प्रस्तराग्रमज्जने पठनीयमन्त्रगतस्याक्तशब्दस्याभिप्रायः (अक्तं रिहाणेत्यादिना) (सं०२३५) .. ७५

७ " जुह्वां प्रस्तराग्राञ्जनपठनीयमन्त्रस्थपक्षिवाचिविशब्दसूचितार्थदर्शनं (वियन्तु इत्यादिना) (सं०२३५) ७५

८ " उपभृति प्रस्तरमध्यभागस्पर्शने पठनीयमन्त्रगतस्य मानिर्म्मृक्षेतिपदस्याभिप्रायदर्शनम् (प्रजां योनिमित्यादिना) (सं०२३५) .. .. .. .. ७५

९ " ध्रुवायां प्रस्तरमूलस्पर्शने पठनीयापरमन्त्रस्थेन आप्यायन्तामिति पदेन द्वितीया विभक्तिः विवक्षिता इत्युक्तिः (आप्यायन्ता मित्यादिना) (सं०२३५).. ७५

विषयः। पृष्ठे।

१० मन्त्रे वत्सापाकरणशाखया सह प्रस्तरस्य आहवनीये प्रक्षेपे कर्त्तव्ये पठनीयमन्त्रस्थस्य मरुतां पृष-तयः स्थेत्यादिवाक्यद्वयस्य तात्पर्य्यार्थः (मरुता-मित्यादिना) (सं०२३६) .. .. .. .. ७५

११ " अध्वर्युणा आहवनीये प्रस्तरप्रक्षेपसमये पठितमन्त्रे आ-युश्चक्षुषोः पालनविषये प्रार्थना कृतास्ति, इत्यस्य प्रदर्शनम् (यावद्वै इत्यादिना) (सं०२३६) .. .. ७६

१२ " वेदिमध्यभूमिस्पर्शे पठनीयमन्त्रस्य तात्पर्य्यार्थः (ध्रुवा॰सीत्यादिना) (सं०२३७) .. .. .. .. ७६

१३ " मध्यमपरिधिप्रहारे पठनीयमन्त्रस्थस्य पर्यधत्था इति पदस्य याथार्थ्यज्ञापनम् (यम्परिधिमित्यादिना) (सं०२३७) .. .. .. .. .. .. ७६

१४ " परिधौ अग्नेः प्रीत्युत्पादनाय उक्तमन्त्रे अग्निसम्बो-धनपदन्यासः इत्युक्तिः (अग्ने देवेत्यादिना) (सं०२३७) .. .. .. .. .. .. ७६

१५ " उक्तमन्त्रे तन्ते एतमनु इत्यत्र अनुशब्दप्रयोगेन ज्ञा-तिप्रियभवनत्वस्य सूचनम् (तन्त एतमनु इत्या-दिना) (सं०२३७) .. .. .. .. .. ७६

१६ " उक्तमन्त्रे नेदेष इत्याद्यपराधपरिहारकवाक्योक्तिः स्व-स्मिन्नग्नेरत्यन्तानुकूल्यजननार्थम् (नेदेष इत्यादि-ना) (सं०२३७) .. .. .. .. .. .. ७६

१७ " उक्तमन्त्रे परिधिद्वयस्योल्लेखोपि स्वस्मिन्नग्नेरत्यन्तानुकू-ल्यजननार्थम् इत्युक्तिः (यज्ञस्येत्यादिना) (सं०-२३७) .. .. .. .. .. .. .. ७६

१८ " परिधि प्रहार कर्मणो विधानम् (परिधीनित्यादिना) .. (सं०२३७) .. .. .. .. .. ७६

| विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|
| १९ मन्त्रे जुहूपभृत्परित्यक्तसंस्रावनामकमाज्यभागं जुह्वां दत्त्वा हवनम् (स्रुचौ समित्यादिना) (सं०-२३८) .. .. .. .. .. .. .. | ७६ |
| २० " संस्रावहोममन्त्रगतस्य संस्रावभागाःस्थेत्यस्य व्याख्या (संस्रावभागा इत्यादिना) (सं०२३८) .. .. | ७७ |
| २१ " संस्रावहोमे विनियुक्तमन्त्रेणोपसङ्गृहीतस्य देवतासम्बन्धस्य ऋचश्छन्दोविशेषस्य च प्रशंसा (वैश्वदेव्यर्चेत्यादिना) (सं०२३८) .. ... .. | ७७ |
| २२ " अग्नेः प्रदक्षिणां कृत्वा तत्पश्चिमतो गत्वा शकटस्य पूर्वभागे जुहूपभृतोः संस्थापने पठनीयमन्त्रस्यार्थः (अग्नेर्वामित्यादिना) (सं०-२३९) .. .. .. .. .. .. .. | ७७ |
| २३ " फलीकरणहोममन्त्रस्य व्याख्यानं फलीकरणनामकतण्डुलतुषकणादिहोमविधानं च (अग्नेर्व्यायो इत्यादिना) (सं०२४०) .. .. .. .. | ७७ |
| २४ " पत्न्याः समीपे वेदप्रासने कर्त्तव्ये प्राप्ते प्रथमं तावत् प्रसङ्गेन वेदस्य प्रशंसायां आख्यायिका (वेदि देवेभ्य इत्यादिना) (सं०२४०) .. .. .. | ७७ |
| २५ " वेदस्य प्रासङ्गिकप्रशंसानन्तरं प्रकृतप्रशंसा (प्रजापतेरित्यादिना) (सं०२४१) .. .. .. | ७८ |
| २६ " पत्नीसमीपे आसादितस्य वेदस्य बन्धनं विमुच्य गार्हपत्यादारभ्याहवनीयपर्य्यन्तमास्तरणे विधिः (वेदॐ होतेत्यादिना) (सं०२४१).. .. .. | ७८ |
| २७ " वायुविषयकदेवागातवित्यादिमन्त्रकृतहोमद्वारा व- [illegible] (ब्रह्मवादिन इत्यादिना) (सं०२४२) .. .. .. .. .. | ७८ |

## १० अनुवाके पत्नीविषयकमन्त्रोक्तिः ।


विषयः । पृष्ठे ।

१ मन्त्रे पत्नीयजमानाञ्जलयोक्त्रबन्धनविमोचने पठनीयमन्त्रस्य पूर्वार्द्धस्य व्याख्या (योवा अयथेत्यादिना) (सं०२४३) .. .. .. .. .. .. ७९

२ ,, उक्तमन्त्रतृतीयपादगतपदार्थवाक्यार्थयोः प्रदर्शनम् (धातुस्त्वेत्यादिना) (सं०२४३) .. .. .. ७९

३ ,, उक्तमन्त्रचतुर्थपादे यजमानस्य दुःखनाशनपूर्वकसुखप्राप्तिरूपफलस्य उक्तिः (स्योनं मे इत्यादिना) (सं०२४३) .. .. .. .. .. .. ७९

४ ,, पत्नीकर्तृकपूर्णपात्रानयनसमये तत्पात्राभिमन्त्रणे प्रजप्यमन्त्रस्य व्याख्या ( समायुषा इत्यादिना ) (सं०२४४) .. .. .. .. .. ... ७९

५ ,, उक्तमन्त्रे अनुष्टुप्छन्दसैव भवितव्यमिति तच्छन्दःप्रशंसा (अन्ततोऽनुष्टुभा इत्यादिना) (सं०२४४) ७९

६ ,, वाग्रूपकत्वेनानुष्टुप्छन्दसः पुनः प्रशंसा (अथो वाग्वै इत्यादिना) (सं०२४४).. .. .. .. .. ७९

७ ,, विमोचितयोक्त्रबन्धनं पूर्णपात्रोदकस्य एकत्र अञ्जलौ पत्न्या सन्धार्य्यमिति विधिः ( यद्वै यज्ञस्येत्यादिना) (सं०२४५) .. .. .. .. .. .. ८०

८ ,, उक्तविधानेन पत्नीकर्तृकपूर्णपात्रधारणम् ( अञ्जलावित्यादिना) (सं०२४५) .. .. .. .. ८०

९ ,, पूर्णपात्रोदकेन पत्न्या मुखप्रक्षालने विधिः (मुखं विमृष्टे इत्यादिना) (सं०२४५).. .. .. .. ८०

## ११ अनुवाके उपवेषपरित्यागः।


विषयः। पृष्ठे।

१ मन्त्रे पलाशशाखामूले त्यक्तभागस्य उपवेषस्य मन्त्रोच्चारण-पूर्वकं परित्यागः कर्त्तव्योऽस्ति अतस्तावदादौ तत्प्रशंसा (परिवेषो वै इत्यादिना) (सं०२४५) .. ८०

२ ,, उपवेषवेदनप्रशंसा (य एवं वेदेत्यादिना ) (सं०२४५) ८०

३ ,, मन्त्रोच्चारणपूर्वकमुपवेषपरित्यागः ( तमुत्करे इत्यादिना) (सं०२४५) .. .. .. .. .. ८०

४ ,, तस्योपवेषस्योत्करे अदृश्यरूपेण निधाने विधिः (स्थविमत इत्यादिना) (सं०२४६) .. .. .. ८०

५ ,, उपवेषद्वारा अभिचारकर्म्मसिद्धेः सम्भावनीयत्वात् तत्सम्बन्धे मन्त्रान्तरोत्पादनार्थं स्तुतिः ( धृष्टिर्वै इत्यादिना)(सं०२४६).. .. .. .. .. ८०

६ ,, अभिचारार्थं द्वेष्यनामगृहीत्वा उपवेषकाष्ठस्य अग्नौ प्रहरणं (योपवेषे इत्यादिना) (सं०२४६) .. ८१

७ ,, पुनस्तदर्थमुपवेषस्य गृहदूरदेशे निक्षेपणाय ऋक्त्रयं (निरमुमित्यादिना) (सं०२४७) .. .. .. ८१

८ ,, स्तुतिद्वारा उक्तकर्म्मण आधिक्यदर्शनं (चिवद्वै इत्यादिना) (सं०२४७) .. .. .. .. .. ८१

९ ,, खाते उपवेषस्य प्रक्षेपे पाठ्यमन्त्रः (हतोऽसौ इत्यादिना) (सं०२४७) .. .. .. .. .. ८१

१० ,, उपवेषस्य अग्नौ प्रहरणे दूरदेशनिरसने भूमौ खनने च द्वेष्यध्यानं कुर्य्यादित्युक्तिः (यन्द्विष्यादित्यादिना) (सं२४८) .. .. .. .. .. .. .. .. ८१


इति तृतीयप्रपाठकः।

# चतुर्थप्रपाठके नरमेधपशुकथनम्।

१ अनुवाके ब्राह्मणादिनरपशूक्तिः।

| विषयः। | पृष्ठे। |
| --- | --- |
| ब्राह्मणक्षत्रियादिजात्यभिमानिदेवतानिमित्तं ब्राह्मणराजन्यादिपुरुषबलिदानस्य उक्तिः .. .. .. .. .. | ३४६ |

२ द्वितीये अनुवाके सूतादिनरपशूपाख्यानम्।

| | |
| --- | --- |
| गीतनृत्याद्यभिमानिदेवतानिमित्तं सूतशैलूषादिपुरुषबलिदानप्रपञ्चः .. .. .. .. .. .. .. .. | ३४७ |

३ अनुवाके कौलालादिनरपशुनिर्द्धारणम्।

| | |
| --- | --- |
| अममायाद्यभिमानिदेवतानिमित्तं कुलालपुत्रलोहकारादिपुरुषबलिदाननिर्देशः .. .. .. .. .. .. | ३४८ |

४ अनुवाके जारादिनरपशुकथनम्।

| | |
| --- | --- |
| सङ्कटकष्टाद्यभिमानिदेवतानिमित्तं पारदारिकोपपत्यादिपुरुषबलिदानविधिः .. .. .. .. .. .. | ३४९ |

५ अनुवाके कैवर्त्तादिनरपशूक्तिः ।

विषयः । पृष्ठे ।

नदीशून्यस्थलाद्यभिमानिदेवतानिमित्तं कैवर्त्तनिषादादिपुरुषबलिदानोक्तिः .. .. .. ... .. .. ३५०

६ अनुवाके कुब्जादिनरपशुनिर्देशः ।

कार्य्यविनाशप्रहर्षाद्यभिमानिदेवतानिमित्तं कुब्जवामनादिपुरुषबलिदाननिरुक्तिः .. .. .. .. .. .. ३५१

७ अनुवाके चौर्यतात्पर्ययुक्तादिनरपशुकथनम् ।

अतिवीरहत्याद्यभिमानिदेवतानिमित्तं चौर्यतात्पर्ययुक्तापरदोषसूचकादिपुरुषबलिदानकथनं .. .. .. ३५२

८ अनुवाके इन्धनाहर्त्रादिनरपशुनिर्देशः ।

भाप्रभाद्यभिमानिदेवतानिमित्तं इन्धनाहर्त्रग्निप्रज्वालनकर्त्रादिपुरुषबलिदानप्रस्तावः.. .. .. .. .. ३५३

९ अनुवाके गजपालकादिनरपशुकथनम् ।

गतिविशेषवेगाद्यभिमानिदेवतानिमित्तं गजपालकाश्वपालकादिपुरुषबलिदानप्रपञ्चः .. .. .. .. .. ३५४

१० अनुवाके लोहकारादिनरपशुविस्तारः ।

| विषयः। | पृष्ठे । |
|---|---|
| मानसकोपवाह्यकोपाद्यभिमानिदेवतानिमित्तं लोहकार-बध्यजनवह्निर्निःसारकादिपुरुषबलिदानप्रचारः .. | ३५४ |

११ अनुवाके यमप्रस्वादिनरपशुकथनम् ।

| | |
|---|---|
| यमस्यायवाद्यभिमानिदेवतानिमित्तं यमप्रसूगर्भस्राविणी-प्रभृतिस्त्र्यादिबलिदानविधानं.. .. .. .. .. | ३५६ |

१२ अनुवाके मत्स्यग्राह्यादिनरपशुविवेकः ।

| | |
|---|---|
| सरःपल्वलाद्यभिमानिदेवतानिमित्तं धीवरदासादिपुरुष-बलिदानोक्तिः .. .. .. .. .. .. .. | ३५७ |

१३ अनुवाके देशराजवार्त्ताकथनशीलादिनरपशुविनियोगः ।

| | |
|---|---|
| ध्वनिप्रतिध्वन्याद्यभिमानिदेवतानिमित्तं देशराजवार्त्ताह-रणशीलासम्बद्धप्रलाप्यादिपुरुषबलिदानप्रपञ्चः .. .. | ३५८ |

१४ अनुवाके अतिनिकृष्टजातियुक्तादिनरपशुकथनम् ।

| | |
|---|---|
| बीभत्साभूत्याद्यभिमानिदेवतानिमित्तं अतिनिकृष्टजाति-युक्तजागरणशीलादिपुरुषबलिदानप्रस्तावः .. .. | ३५८ |

१५ अनुवाके पुंश्चल्यादिनरपशुविस्तारः ।

विषयः । पृष्ठे ।

अप्सरोगीताद्यभिमानिदेवतानिमित्तं पुंश्चलीगणकादि-
स्त्रीपुरुषबलिदानकथनं .. .. .. .. .. .. .. ३५९

१६ अनुवाके द्यूतकुशलादिनरपशुकथनम् ।

अक्षराजसत्ययुगाद्यभिमानिदेवतानिमित्तं द्यूतकुशलद्यूत-
सभाधिष्ठात्रादिपुरुषबलिदानोक्तिः .. .. .. .. ३६०

१७ अनुवाके पीठसर्प्यादिनरपशुव्याहारः ।

भूम्यग्न्यादिदेवतानिमित्तं पीठसर्पिचण्डालजातीयादिपुरुष-
बलिदानविस्तारः .. .. .. .. .. .. .. ३६२

१८ अनुवाके स्थूलशरीरादिनरपशुकथनं ।

वाणीवायुदेवतादिनिमित्तं स्थूलशरीरप्राणादिबलिदान-
कथनं .. .. .. .. .. .. .. .. ३६२

१९ अनुवाके अतिह्रस्वादिनरपशूक्तिः ।

रूपाण्याद्यभिमानिदेवतानिमित्तमतिह्रस्वातिदीर्घादिपुरुष-
बलिदानकथनं ... .. .. .. .. .. ३६३


इति चतुर्थः प्रपाठकः ।

# ३ काण्डे ५ प्रपाठके इष्टिहौत्रमन्त्रकथनम् ।

## १ अनुवाके होतृजप्यसामिधेनीमन्त्रोक्तिः ।

विषयः । पृष्ठे ।


१ मन्त्रे आहवनीयोत्करमध्यदेशात् पश्चिमे गमनसमये होतुरुच्चारणीयमन्त्रोक्तिः (सत्यं प्रपद्ये इत्यादिना) (सं०६११) .. .. .. .. .. .. ८७


## २ अनुवाके अवशिष्टैकादशसामिधेनीमन्त्रप्रपञ्चः ।


१ ,, होतृकथितस्य हिङ्कारपूर्वकस्य प्रथमसामिधेनीमन्त्रस्य विनियोगः (प्र वो वाजेत्यादिना) (सं०६१२) ८८

२ ,, होतृपठितद्वितीयसामिधेनीसमाख्यानं (अग्न आयाहि इत्यादिना) (सं६२०) .. .. .. .. ८८

३ ,, होतृनिरुक्ततृतीयसामिधेनीप्रचारः (तं त्वा समिद्भिरित्यादिना) (सं६२०).. .. .. ... .. ८८

४ ,, होतृप्रोक्तचतुर्थसामिधेनीनिर्वचनम् (स नः पृथुःश्रवाय्यमित्यादिना) (सं०६२०) .. .. .. ८८

५ ,, होतृसमुच्चारितपञ्चमसामिधेन्युक्तिः (ईडेऽन्यो नमस्यस्तिर इत्यादिना) (सं०६२१) .. .. .. ८८

६ ,, होतृव्याहृतषष्ठसामिधेनीकथनम् (वृषो अग्निः समिध्यते इत्यादिना) (सं०६२१) .. .. .. ८८

७ ,, होतृभाषितसप्तमसामिधेनीवचनं (वृषणं त्वा वयं वृषन् इत्यादिना) (सं०६२१) .. .. .. .. ८८

८ ,, होतृकथिताष्टम सामिधेनी प्रपञ्चः (अग्निं दूतं वृणीमहे इत्यादिना) (संख्या ६२१) .. .. .. .. ८८

विषयः । पृष्ठे ।

९ मन्त्रे होतृपठितनवमसामिधेन्याख्यानं (समिध्यमानो अध्वरे इत्यादिना) (सं०६२२) .. .. .. .. .. ८८

१० ,, होतृजल्पितदशमसामिधेनीकथनं (समिद्धो अग्न आहुत इत्यादिना) (सं०६२२) .. .. .. ८८

११ ,, होतृपठितैकादशसामिधेनीसमाख्यानं (आजुहोत दुवस्यतेत्यादिना) (सं०६२२) .. .. .. ८९

१२ ,, वशिष्ठगोत्रीयराजन्यपक्षे उक्तैकादशमन्त्रपरिवर्त्ते कथनीयसामिधेनीनिर्देशः (त्वं वरुण उत मित्रो इत्यादिना) (सं०६२२) .. .. .. .. ८९

३ अनुवाके होतृपाठ्यप्रवरनिविन्मन्त्राद्याख्यानं ।

१ मन्त्रे होतृपठितप्रवरमन्त्रोक्तिः (अग्ने महाँ२ असि, असावसा इत्यन्तेन) (सं०६३२) .. .. .. ८९

२-८ मन्त्रेषु निविन्मन्त्रप्रतीकोक्तिः (देवेद्ध इत्यादि) (सं०६३३) ८९

९ ,, होतृपठिताग्न्यादितत्तद्देवतावाहनमन्त्रतात्पर्य्यप्रचारः (अग्निमग्न आवह, सुयजा च यज जातवेद इत्यन्तेन) (सं०६३५) .. .. .. .. .. ८९

४ अनुवाके जुह्वपभृतोरादानं ।

अस्मिन् अनुवाके अध्वर्युकर्तृकजुहूपभृतोरादानं (अग्निर्होता-वेत्वग्निः, यजाम यज्ञियान् इत्यन्तेन) (सं०६३७) ९०

५ अनुवाके प्रयाजमन्त्रोक्तिः ।

१-५ मन्त्रेषु समिधोऽग्ने इत्यारभ्य अग्न आज्यस्य वियन्तु एतत् पर्यन्तग्रन्थेन पञ्चप्रयाजमन्त्रोल्लेखः (सं०६[illegible]) .. ९०

६ अनुवाके आग्नेयाज्यभागद्वयसम्बन्धिपुरोनुवाक्योक्तिः ।


विषयः । पृष्ठे ।

१ मन्त्रे यष्टव्यस्याग्नेः प्रथमाज्यभागीयपुरोनुवाक्याकथनं (अग्निर्वृत्राणीत्यादिना) (सं०७००) .. .. .. ९०

२ ,, यष्टव्यस्य सोमस्य प्रथमाज्यभागीयपुरोनुवाक्यावचनं (त्वꣳ सोमासीत्यादिना) (सं०७०१) .. ९१

३ ,, यष्टव्यस्याग्नेर्द्वितीयाज्यभागीयपुरोनुवाक्याकथनं (अग्निः प्रत्नेनेत्यादिना) (सं०७०१) .. .. .. ९१

४ ,, यष्टव्यस्य सोमस्य द्वितीयाज्यभागीयपुरोनुवाक्यानिरुक्तिः (सोमगीर्भिष्ट्वेत्यादिना) (सं०७०१) ९१


---

७ अनुवाके विशेषेण आग्नेययागसम्बन्धियाज्यानुवाक्याकथनम् ।


१ ,, आग्नेयपुरोडाशस्य याज्योक्तिः (अग्निर्मूर्धेत्यादिना) (सं०७०४) .. .. .. .. .. .. ९१

२ ,, आग्नेयपुरोडाशस्य अनुवाक्यानिरुक्तिः (भुवोयज्ञस्येत्यादिना) (सं०७०४) .. .. .. ९१

३ ,, प्राजापत्योपांशुयाजस्य याज्यानुवाक्ये (प्रजापते इत्यादिना) (सं०७०९) .. .. .. .. .. ९१

४ ,, अग्नीषोमीयपुरोडाशस्य याज्यानुवाक्ये (अग्नीषोमा इत्यादिना) (सं०७१०) .. .. .. .. ९१

५ ,, ऐन्द्राग्नपुरोडाशस्य याज्यानुवाक्ये (इन्द्राग्नी रोचना इत्यादिना) (सं०७१०) .. .. .. .. ९२

६ ,, ऐन्द्रसान्नाय्याख्यपुरोडाशीययाज्यानुवाक्ये (ऐन्द्रसानसिमित्यादिना) (सं०७११) .. .. .. .. ९२

,, माहेन्द्रपुरोडाशस्य याज्यानुवाक्ये (महाꣳ इन्द्रो य इत्यादिना) (सं०७१२) .. .. .. .. ९२

विषयः। पृष्ठं।

८ मन्त्रे आग्नेयस्विष्टकृद्यागस्य पुरोनुवाक्या (पिप्रीहि देवा-
नित्यादिना) (सं०७१३) .. .. .. .. ९२

९ ,, आग्नेयस्विष्टकृद्यागीयनिगदाख्यमन्त्रोक्तिः (अग्निं
स्विष्टकृतमित्यादिना) (सं०७१३) .. .. .. ९२

१० ,, आग्नेयस्विष्टकृद्यागस्य याज्या (अग्ने यदद्यविश
इत्यादिना) (सं०७१४) .. .. .. .. ९३

---

८ अनुवाके यजमानार्थं इडोपाह्वानविधिः।

१ ,, उपांशुजपपूर्वकं प्रतीचीनमुख्या इडायाः आह्वानं
(उपहूतं रथन्तरमित्यादिना, उपहूताꣳ होः
इत्यन्तेन) (सं०७५८) .. .. .. .. ९३

२ ,, उच्चैर्जपपूर्वकं तस्या एव पराचीनमुख्या आह्वानं
(इडोपहूता इत्यादिना, उपहूतस्योपहूत इत्य-
न्तेन) (सं०७५८) .. .. .. .. .. ९३

---

९ अनुवाके अनूयाजमन्त्राणां कथनं।

१ ,, उत्तराहुतिकाले पाठ्या अनूयाजमन्त्राः (देवं
बर्हिरित्यादयः नमो वाके वीहि इत्यन्ताः)
(सं०७८१).. .. .. .. .. .. .. ९४

---

१० अनुवाके सूक्तवाकमन्त्रोक्तिः।

१ ,, दर्भमुष्टिरूपप्रस्तरस्य अध्वर्युणा अग्नौ प्रक्षेपे कर्तव्ये
होतृपाठ्यस्य सूक्तवाकस्य प्रथमभागस्योक्तिः (इदं
द्यावापृथिवी इत्यादिना) (सं०[illegible]) .. .. [illegible]

विषयः। पृष्ठे।

२ मन्त्रे तस्य द्वितीयभागस्य कथनम् (अग्निरिदꣳ हविरजुषतेत्यादिना) (सं०७८५) .. .. .. ९५

३ ,, तस्यैव तृतीयभागनिरुक्तिः (अस्यामृधद्धोत्रायामित्यादिना) (सं०७८६) .. .. .. .. ९६

---

## ११ अनुवाके शंयुवाकमन्त्रोक्तिः।

१ ,, बृहस्पतिपुत्रशंयुपठितस्य अनुवाकस्य कथनं (तच्छंयोरावृणीमहे इत्यादिना, शं चतुष्पदे इत्यन्तेन) (सं०७९७) .. .. .. .. .. ९७

---

## १२ अनुवाके पत्नीसंयाजमन्त्रोक्तिः।

१ ,, सोमस्य पुरोनुवाक्याया याज्यायाश्च प्रतीकद्वयं (आप्यायस्व, सन्ते इति) (सं०७९८) .. .. ९७

२ ,, त्वष्टुः पुरोनुवाक्याप्रतीकं (इह त्वष्टारमिति) (सं०७९९) .. .. .. .. .. .. ९७

३ ,, त्वष्टुर्याज्याप्रतीककथनं (तन्नस्तुरीयमिति) (सं०७९९) .. .. .. .. .. .. .. ९७

४ ,, देवपत्नीनां पुरोनुवाक्याया उक्तिः (देवानां पत्नीरित्यादिना) (सं०७९९) .. .. .. .. .. ९७

५ ,, देवपत्नीनां याज्याकथनं (उत ग्ना वियन्तु इत्यादिना) (सं०७९९) .. .. .. .. .. ९७

६ ,, अग्नेर्गृहपतेः पुरोनुवाक्याया उक्तिः (अग्निर्होतेत्यादिना) (सं०८००) .. .. .. .. ९७

विषयः। पृष्ठे।

७ मन्त्रे अग्नेर्गृहपतेर्याज्याया कथनं (वयमु त्वेत्यादिना) (सं०८००) .. .. .. .. .. .. ६७

१३ अनुवाके पत्न्यर्थमुत्तरेडाया उपाह्वानं।

१ ,, उपांशुजपपूर्वकं प्रतीचीनमुख्या इडाया आह्वानं (उपहूतं रथन्तरमित्यादिना, उपहूताऽ३ इहो इत्यन्तेन) उच्चैर्जपपूर्वकं तस्या एव पराचीनमुख्या आह्वानं (इडोपहूता इत्यादिना, उपहूतस्योपहूता इत्यन्तेन) (सं०८००) .. .. .. .. .. ६७

इति तैत्तिरीयब्राह्मणस्य पञ्चमप्रपाठकस्य सूची समाप्ता।

## ६ प्रपाठके पाशुकहौत्रनिरुक्तिः।

१ अनुवाके यूपसंस्कारः।

१ मन्त्रे यूपानां स्पष्टीकरणं.. .. .. .. .. .. २६७
२—६ मन्त्रेषु यूपोर्द्ध्वोत्थापने होतुरुक्तिः .. .. .. २६८
७ मन्त्रे यूपे रज्जुवेष्टनं .. .. .. .. .. .. .. २७०
८,९ मन्त्रयोः यूपानां परिस्थापनं .. .. .. ..
१० मन्त्रे वसिष्ठराजन्यसम्बन्धियूपपरिस्थापनं .. .. ..
.. .. (सं०[illegible]) ([illegible])

२ अनुवाके प्रयाजविषयकमैत्रावरुणप्रैषोक्तिः।

विषयः। पृष्ठे।
१–१२ मन्त्रेषु अध्वर्युप्रेषितमैत्रावरुणस्य होतारं प्रति समिद्धप्रैषणे उक्तिः.. .. .. .. .. .. ३७४

---

३ अनुवाके आप्रीसञ्ज्ञकप्रयाजयाज्योक्तिः।

१–१२ मन्त्रेषु होतृपठनीयाप्रीसञ्ज्ञकप्रयाजयाज्योक्तिः .. ३८०

---

४ अनुवाके पर्यग्निकरणीयानामृचामुक्तिः।

१–३ मन्त्रेषु ज्वलदुल्मुकस्य हविषः परितो भ्रामणं .. .. ३८६

---

५ अनुवाके मैत्रावरुणप्रैषोक्तिः।

१ मन्त्रे मैत्रावरुणकर्तृकं होतुः प्रेषणं .. .. .. .. ३८७

---

६ अनुवाके अध्रिगुप्रैषकथनम्।

१ मन्त्रे पशुहननविषये अध्रिगुं प्रति होतुर्वाक्यं .. .. ३८८
२ " उक्तविषये होतृकर्तृकपुनर्जपः.. .. .. .. ३९०

---

७ अनुवाके स्तोकविषयकमैत्रावरुणानुवचनोक्तिः।

१ मन्त्रेषु अग्निमुद्दिश्य अग्निहुतवपादिहविश्च्युतविन्दुविषया मैत्रावरुणस्य उक्तिः.. .. .. .. ३९९

---

८ अनुवाके वपापुरोडाशस्विष्टकृतां मैत्रावरुणपाठ्यप्रैष-पुरोनुवाक्योक्तिः।


| विषयः। | | पृष्ठे। |
|---|---|---|
| १ मन्त्रे | छागवपामेदोऽवदानसमये मैत्रावरुणोक्तपुरोनुवाक्या | ४०१ |
| २ ,, | उक्तविषये मैत्रावरुणोक्तप्रैषः | ४०१ |
| ३ ,, | पुरोडाशविषये मैत्रावरुणोक्तपुरोनुवाक्या | ४०२ |
| ४ ,, | उक्तविषये मैत्रावरुणोक्तप्रैषः | ४०२ |
| ५ ,, | स्विष्टकृद्विषये मैत्रावरुणप्रोक्तपुरोनुवाक्या | ४०२ |


९ अनुवाके वपापुरोडाशस्विष्टकृतां याज्योक्तिः।


| | | |
|---|---|---|
| १ मन्त्रे | होतृप्रोक्तवपाविषयकयाज्याकथनं | ४०३ |
| २ ,, | होतृप्रोक्तपुरोडाशविषयकयाज्योक्तिः | ४०३ |
| ३ ,, | होतृप्रोक्तस्विष्टकृद्विषयकयाज्यावचनं | ४०४ |


१० अनुवाके मनोतासूक्तोक्तिः।


| | | |
|---|---|---|
| १—१३ मन्त्रेषु | हविषोऽवदानसमये मैत्रावरुणप्रोक्तमनोताख्यसूक्तोक्तिः | ४०५ |


११ अनुवाके मैत्रावरुणप्रवक्तव्यहविर्वनस्पतिस्विष्टकृत्प्रैष-पुरोनुवाक्यानामुक्तिः।


| | | |
|---|---|---|
| १ मन्त्रे | इन्द्राग्निनिमित्तच्छागहविरनुवचनविषयमैत्रावरुणप्रोक्तपुरोनुवाक्या | ४१९ |

| विषयः । | पृष्ठं । |
|---|---|
| २ मन्त्रे उक्तविषये मैत्रावरुणप्रोक्तप्रैषः .. .. .. | ४१२ |
| ३ ,, मैत्रावरुणप्रोक्तवनस्पतिसम्बन्धिपुरोनुवाक्या .. | ४१३ |
| ४ ,, मैत्रावरुणप्रोक्तवनस्पतिसम्बन्धिप्रैषः .. .. .. | ४१४ |
| ५ ,, मैत्रावरुणप्रोक्तस्विष्टकृत्सम्बन्धिपुरोनुवाक्या .. .. | ४१५ |
| ६ ,, मैत्रावरुणप्रोक्तस्विष्टकृत्सम्बन्धिप्रैषः .. .. .. | ४१५ |

१२ अनुवाके हविर्वनस्पतिस्विष्टकृतां याज्योक्तिः ।

| | |
|---|---|
| १ ,, होतृप्रोक्तहविःसम्बन्धियाज्या .. .. .. .. | ४१६ |
| २ ,, होतृप्रोक्तवनस्पतिसम्बन्धियाज्या.. .. .. .. | ४१७ |
| ३ ,, होतृप्रोक्तस्विष्टकृत्सम्बन्धियाज्या .. .. .. | ४१७ |

१३ अनुवाके अनूयाजसम्बन्धिमैत्रावरुणप्रैषोक्तिः ।

| | |
|---|---|
| १–११ मन्त्रेषु होतारं प्रति याज्यापाठविषयकमैत्रावरुण-प्रैषाणामुक्तिः .. .. .. .. . .. | ४१८ |

१४ अनुवाके अनूयाजविषयकहोतृयाज्याकथनम् ।

| | |
|---|---|
| १–११ मन्त्रेषु मैत्रावरुणप्रेषितहोतृपाठ्ययाज्यानामुक्तिः .. | ४२५ |

१५ अनुवाके सूक्तवाकविषयकमैत्रावरुणप्रैषोक्तिः ।

| | |
|---|---|
| १ मन्त्रे सूक्तवाकनिष्पत्तये मैत्रावरुणकर्तृकं होतुः प्रेषणं .. | ४२६ |

# ७ प्रपाठके अच्छिद्रकाण्डकथनं ।

## १ अनुवाके दर्शपौर्णमासयागविषयकप्रायश्चित्तोक्तिः ।


| विषयः । | पृष्ठे । |
|---|---|
| १ मन्त्रे इष्टिमनिर्व्वाह्य देशान्तरं यास्यतोऽन्वाहिताग्नेर्दोषशान्त्यर्थकहोमविधानं .. .. .. .. | ४२८ |
| २ ,, अन्वाहिताग्नेराहवनीयाग्निनाशे आहवनीयान्तरप्रणयनान्तरं जपविधानं इतिकर्त्तव्यता .. .. | ४३० |
| ३ ,, आहिताग्नेरग्निकुण्डादग्न्यङ्गारबहिःपातनिमित्तकप्रतीकारविधिः .. .. .. .. .. | ४३२ |
| ४ ,, अङ्गाराग्नेः अग्न्यायतनदेशादपि अतिदूरदेशे पाते तदानीं कर्त्तव्यहोमकथनं .. .. .. | ४३२ |
| ५ ,, हविषः सम्पादनार्थं दुग्धाय धेनोर्दूरे स्थापितानां वत्सानां कथमपि मातुर्दुग्धपाने तत्प्रतिक्रियाविधिः .. .. .. .. .. .. | ४३३ |
| ६ ,, सायन्दुग्धे हविषि कथमपि विनष्टे प्रतिविधानम् | ४३४ |
| ७ ,, सायंप्रातर्दोहविनाशे इतिकर्त्तव्यता .. .. . | ४३५ |
| ८ ,, व्रतदिवसे यजमानपत्न्यां रजस्वलायां कर्त्तव्यानुष्ठानं | ४३६ |

## २ अनुवाके अग्निहोत्रसान्नाय्यसाधारणप्रायश्चित्तम्।


| विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|
| १ मन्त्रे अग्निहोत्रसान्नाय्यरूपपयसः अपराह्नकालीनवह्निः-पतननिमित्तकतत्प्रतीकारविधिः.. .. .. | ४४० |
| २ ,, यदि अग्निहोत्रसान्नाय्यहविषि कीटः पतेत् तदा तत्प्रतीकारः .. .. .. .. .. .. | ४४० |
| ३ ,, होमार्थं निष्पन्नं हविः यदि वृष्टिपातेन दुष्टं भवेत् तदा तत्प्रतीकारः .. .. .. .. . | ४४१ |
| ४ ,, अग्निहोत्रे द्वे आहुती प्रदातव्ये, तत्र यदि प्रथमाहुतेरूर्द्ध्वं द्वितीयाहुतिद्रव्यं विनष्टं भवेत्, यदि वा प्रथमाहुत्या द्वितीयाहुतिकाले होमः कृतो भवेत् तदा तत्प्रतीकारविधानं .. .. .. | ४४२ |
| ५ ,, यदि प्रयाजयागात् पूर्वमङ्गारः पूर्वादिदिक्षु वह्निर्निर्गच्छेत् तदा तत्प्रतीकारः .. .. .. | ४४३ |


---

## ३ अनुवाके मुख्याग्नेरलाभेऽनुकल्पहोमाधाराः।


| | |
|---|---|
| १ ,, यदि अरणौ मथ्यमानायामग्निर्नजायेत तदा अन्यत्र स्थापिताग्नेरग्निमानीय जुहुयादित्यस्य विधिः.. | ४४६ |
| २ ,, यदि अन्यत्र स्थापितोऽग्निरपि न लभ्येत तदा तत्-प्रतिनिधिः .. .. .. .. .. .. | ४४६ |
| ३ ,, अजायाः कर्णे हुतवतो नियमविधानं.. .. .. | ४४७ |
| ४ ,, अजाया अलाभे ब्राह्मणदक्षहस्ते होतव्यमित्युक्तिः .. | ४४७ |
| ५ ,, यदि ब्राह्मणो न लभ्येत तदा दर्भस्तम्बे होतव्यमित्याख्यानं .. .. .. .. .. .. | ४४७ |

विषयः। पृष्ठे।

६ मन्त्रे यदि दर्भानपि न लभेत् तदा जले होतव्यमित्य-भिधानं .. .. .. .. .. .. ४४७
७ ,, यस्य आहिताग्नेः श्रौतस्मार्त्तलौकिकाग्नीनामन्यदीयै-स्ताहृग्भाग्निभिः संसर्गो भवेत् तदा तत्र विधिः.. ४४८
८ ,, संवत्सरव्रतधारणे विशेषः .. .. .. .. ४४६
६ ,, अग्निहोत्रस्थालीभङ्गेन तदीयहविषः क्षरणे प्रती-कारविधिः .. .. .. .. .. .. ४४६
१० ,, गर्भं स्रवन्तमित्यादिमन्त्रद्वितीयपादे स्थितानां अग्नि, इन्द्र, त्वष्टा, बृहस्पति, इत्येतच्चतुर्णां पदानां तात्पर्यार्थः .. .. .. .. .. .. ४४६
११ ,, प्रोक्तमन्त्रतृतीयपादस्य तात्पर्यार्थः .. .. .. ४५०
१२ ,, उक्तमन्त्रस्य चतुर्थपादस्य तात्पर्यार्थकथनं .. ४५०

---

४ अनुवाके ऐष्टिकयागीययजमानमन्त्रोक्तिः।

१ ,, प्रणीताभिमन्त्रणं .. .. .. .. .. ४५०
२ ,, अन्वाधानोपक्रमे कर्त्तव्यजपोक्तिः .. .. .. ४५१
३ ,, पलाशशाखाच्छेदने यस्तत्खण्डो भूमौ पतितस्तस्या-दानं .. .. .. ... .. .. .. ४५२
४ ,, साम्नाय्यपात्राणामभिमन्त्रणं .. .. .. .. ४५२
५ ,, येन दुग्धेन सोमो भविष्यति तस्मिन् पर्णवल्कल-निक्षेपणं आतञ्चनं तस्मिन् कर्मणि मन्त्रपाठः..
६-८ मन्त्रेषु आहवनीयाग्निस्थापनकाले जपनीयमन्त्र-पाठः .. .. .. .. .. .. .. ४५३

| विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|
| ९ मन्त्रे आहवनीयगार्हपत्याग्निद्वयमध्ये स्थित्वा जपनीयमित्युक्तिः .. .. .. .. .. .. .. | ४५४ |
| १०,११ मन्त्रयोः गार्हपत्याग्निस्थापनकाले पठनीयमन्त्रद्वयोक्तिः | ४५४ |
| १२ मन्त्रे दक्षिणाग्न्यन्वाधानकाले जप्यमन्त्रोक्तिः ... .. | ४५५ |
| १३ ,, सभ्यनामकवह्नेरुपस्थाने पाठ्यमन्त्रः .. .. .. | ४५४ |
| १४ ,, आवसथ्यनामकवह्नेरुपस्थाने पाठ्यमन्त्रः .. ... | ४५६ |
| १५ ,, अन्वाहितेषु पञ्चस्वग्निषु जप्यमन्त्रोक्तिः .. .. | ४५६ |
| १६ ,, होमात् पूर्वं जायापतीभ्यां हविर्भक्ष्यमित्युक्तिः .. | ४५६ |
| १७–२० मन्त्रेषु व्रतस्वीकारार्थमुक्तिः .. .. .. .. | ४५७ |
| २१ मन्त्रे मातुः सकाशात् वत्सस्य दूरीकरणे साधनीभूतायाः पलाशशाखाया आहरणकर्मणि पाठ्यमन्त्रः .. | ४५७ |
| २२,२३ मन्त्रयोः रज्जुं प्रसार्य तत्र एकविंशतिकाष्ठसम्भरणे मन्त्रद्वयोक्तिः .. .. .. .. .. | ४५८ |
| २४ मन्त्रे परिस्तरणार्थानां दर्भाणां छेदनाय तेषु शस्त्रसंयोगे पाठ्यमन्त्रः .. .. .. .. .. .. | ४५९ |
| २५ ,, दर्भच्छेदनसमये पाठ्यमन्त्रः .. .. .. .. | ४५९ |
| २६ ,, छिन्नदर्भाणां बन्धने पाठ्यमन्त्रः .. .. .. | ४६० |
| २७ ,, पिण्डपितृयज्ञस्थले बर्हिरास्तरणम् .. .. .. | ४६० |
| २८,२९ मन्त्रयोः शाखापवित्रानुमन्त्रणम् .. .. .. | ४६० |
| ३० मन्त्रे पवित्रद्वयनिर्माणं.. .. .. .. .. .. | ४६१ |
| ३१ ,, आस्तरणदर्भे पवित्रसंयोगः .. .. .. .. | ४६१ |
| ३२ ,, वेदीसम्मार्जनार्थवेदस्य दर्भैर्निर्माणं .. .. .. | ४६२ |
| ३३ ,, गोदोहनकाले वत्सबन्धनार्थरज्जुमन्त्रणं .. .. | ४६२ |
| ,, क्षीरपाकार्थमङ्गारेषु कुम्भ्या अधिश्रयणं .. .. | ४६३ |

विषयः । पृष्ठे ।

३६ मन्त्रे ऋत्विग्यजमानेन जप्यमन्त्रः .. .. .. .. ४६४
३७ ,, प्रोह्यमाणसान्नाय्यपात्राणामभिमन्त्रणं .. .. ४६४
३८ ,, सायङ्काले वनादागच्छन्तीनाङ्गवामागमने प्रतीक्षाकरणं .. .. .. .. .. .. .. ४६५
३९ ,, वत्सबन्धनं .. .. .. .. .. .. .. .. ४६५
४० ,, वत्समोचनपूर्वकं दोहनार्थं गामुपसृत्य दोग्धुर्वाक्यं ४६५
४१ ,, अदुह्यमानाया गोरभिमन्त्रणं .. .. .. .. ४६५
४२ ,, दोहनकाले गोस्तननिःसृतक्षीरधारघोषस्याभिमन्त्रणं .. .. .. .. .. .. .. ४६६
४३ ,, दुग्धमानयन्तं पुरुषं प्रति अध्वर्योः प्रश्नः .. .. ४६६
४४ ,, दोग्धुः प्रत्युत्तरं .. .. .. .. .. .. ४६६
४५ ,, मौनिन अध्वर्योर्वाग्विसर्जनं .. .. .. .. ४६७
४६ ,, दध्यातञ्चनोपरि अग्निहोत्रशेषनिक्षेपः .. .. ४६७
४७ ,, दुग्धपूर्णकुम्भ्याः काष्ठपात्रादिनाच्छादनं .. .. ४६७
४८ ,, कुम्भीस्थदुग्धे पलाशशाखाखण्डस्य निक्षेपः .. .. ४६८
४९ ,, शाखापवित्रद्वयस्य स्नानपूर्वकं कुत्रचिदवस्थापनं ४६८
५० ,, सायङ्काले वह्निषु परिस्तीर्य्यमाणेषु जपविधानं .. ४६८

---

५ अनुवाके अनुक्तदर्शपौर्णमासाङ्गीभूतकतिचिन्मन्त्रोक्तिः ।

१ ,, गार्हपत्यागारे आहवनीयागारे वा शयानस्य जपः ४७०
२ ,, अतिदाहनिवृत्त्यर्थं पुरोडाशाज्ज्वलदङ्गाराणामपनयनं .. .. .. .. .. .. .. ४७१
३ ,, पुरोडाशाभिमन्त्रणं .. .. .. .. .. ४७१
अभिघारणं .. .. .. .. .. ४७२

| | विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|---|
| ५ मन्त्रे | पात्र्यामुपस्तरणं | ४७२ |
| ६ ,, | पुरोडाशसादनं | ४७२ |
| ७ ,, | पुरोडाशोद्वासनं | ४७२ |
| ८ ,, | प्रातर्दोहाभिघारणं | ४७३ |
| ९ ,, | कपालप्रत्यञ्जनं | ४७३ |
| १० ,, | यजमानजपकथनं | ४७३ |
| ११ ,, | हविरवदानं | ४७५ |
| १२ ,, | हविःप्रत्यभिघारणं | ४७५ |
| १३ ,, | प्राशित्रावदानं | ४७६ |
| १४ ,, | इडावदानं | ४७६ |
| १५ ,, | इडाभक्षणमन्त्रः | ४७७ |
| १६ ,, | बर्हिषदः पुरोडाशस्याभिमर्शनमन्त्रः | ४७९ |
| १७ ,, | चतुर्धाकृतपुरोडाशस्य दिक्षु व्यूहनं | ४७९ |
| १८ ,, | स्रुक्षु प्रस्तरस्याज्यमानीयानुमन्त्रणं | ४७९ |
| १९ ,, | गार्हपत्यदक्षिणत उपविष्टया यजमानपत्न्या पाठ्यमन्त्रः | ४७९ |
| २० ,, | सम्पत्नीयहोमकथनं | ४८० |
| २१–२४ | नारिष्ठहोमः | ४८० |
| २५ ,, | पौर्णमास्यां पार्वणहोमः | ४८२ |
| २६ ,, | अमावास्यायां पार्वणहोमः | ४८३ |
| २७ ,, | होतुरुपवेशदर्भे वेद्या अभिस्तरणं | ४८३ |


---

६ षष्ठेऽनुवाके चतुर्थपञ्चमानुवाकानुक्ता इष्टिमन्त्राः।


| | | |
|---|---|---|
| [illegible] | दोहाद्दूं प्रैषः | ४८५ |
| [illegible] | [illegible] | ४८५ |

| विषयः । | पृष्ठे । |
|---|---|
| ३ मन्त्रे वृतस्य ब्रह्मणो जपः .. .. .. .. .. | ४८५ |
| ४ ,, अग्निप्रणयनकर्मणोत्करानुमन्त्रणं .. .. .. .. | ४८६ |
| ५ ,, वेदसम्मृज्यमानवेद्यनुमन्त्रणं .. .. .. .. | ४८७ |
| ६ ,, क्रियमाणवेद्यनुमन्त्रणम् .. .. .. .. .. | ४८७ |
| ७ ,, आक्रियमाणस्तम्बयजुरनुमन्त्रणम् .. .. .. | ४८८ |
| ८ ,, समास्तीर्यमाणबर्हिरनुमन्त्रणम् .. .. .. | ४८९ |
| ९ ,, बर्हिरास्तीर्यमाणवेद्यनुमन्त्रणम् .. .. .. | ४८९ |
| १० ,, परिध्यनुमन्त्रणम् .. .. .. .. .. .. | ४९० |
| ११ ,, वेदेर्मध्ये तिर्य्यक्तेन साद्यमानविधृत्याख्यदर्भानुमन्त्रणम् | ४९० |
| १२ ,, साद्यमानप्रस्तरानुमन्त्रणम् .. .. .. .. | ४९१ |
| १३ ,, प्रस्तरसाद्यमानजुह्वनुमन्त्रणम् .. .. .. .. | ४९१ |
| १४ ,, साद्यमानोपभृदनुमन्त्रणम् .. .. .. .. | ४९२ |
| १५ ,, साद्यमानध्रुवानुमन्त्रणम् .. .. : .. .. | ४९२ |
| १६ ,, जुहूदक्षिणभागे स्रुवसादनम् .. .. .. .. | ४९३ |
| १७ ,, साद्यमानस्रुवानुमन्त्रणम् .. .. .. .. .. | ४९३ |
| १८ ,, आज्यस्थाल्यनुमन्त्रणम् .. .. .. .. .. | ४९३ |
| १९ ,, आग्नेयपुरोडाशाभिमर्शनं .. .. .. .. | ४९४ |
| २० ,, आसादितपक्वपयोभिमर्शः .. .. .. .. | ४९४ |
| २१ ,, आसादितदध्नोभिमर्शः .. .. .. .. .. | ४९४ |
| २२ ,, ध्रुवाया अग्रेणोत्तरेण वा वेदविधानं .. .. .. | ४९६ |
| २३ ,. आसादितसर्वहविरभिमर्शः .. .. .. .. .. | ४९६ |
| २४ ,, ऐन्द्राग्नपुरोडाशाभिमर्शः.. .. .. .. .. | ४८७ |
| २५ ,, अग्निसम्मार्जनं .. .. .. .. .. .. | ४९७ |
| २६ ,, आग्नीध्रभागस्य विप्रोषव्यूहनम् .. .. .. .. | [illegible] |
| २७ ,, [illegible] मार्जनम् .. .. [illegible] .. | ४९८ |

| विषयः । | | | पृष्ठे । |
|---|---|---|---|
| २८ | मन्त्रे | आनुयाजिकसमिदाधानानन्तरमग्न्यभिमन्त्रणं .. | ४९८ |
| २९ | ,, | अनुयाजसमिदाधानादूर्ध्वंकर्त्तव्याग्निसम्मार्जनं .. | ५०० |
| ३० | ,, | कृताग्निसम्मार्जनदर्भाभिमन्त्रणं .. .. .. | ५०० |
| ३१ | ,, | यत् प्रस्तरात् तृणमपात्तम् तस्मिन्नग्नौ प्रक्षीयमाणे जपः | ५०० |
| ३२ | ,, | शंयुवाकानुमन्त्रणम् .. .. .. .. .. .. | ५०१ |
| ३३ | ,, | तण्डुलप्रक्षालनजलनिनयनम् .. .. .. .. .. | ५०१ |
| ३४ | ,, | पिष्टलेपहोमः .. .. .. .. .. .. .. | ५०२ |
| ३५--४० | | आदित्योपस्थानं .. .. .. .. .. .. .. | ५०२ |
| ४१ | ,, | अग्निसमिन्धनादूर्ध्वं आहवनीयोपस्थानम् .. .. | ५०४ |
| ४२ | ,, | उपवेषोदासनम् .. .. .. .. .. .. .. | ५०५ |


---

### ७ अनुवाके सोमाङ्गभूता दीक्षाङ्गमन्त्राः ।


| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | ,, | दैवतोपस्थानम् .. .. .. .. .. .. .. | ५०६ |
| २ | ,, | क्षौमप्रतिग्रहः .. .. .. .. .. .. .. | ५०७ |
| ३ | ,, | पूर्णाहुत्यनुमन्त्रणम् .. .. .. .. .. .. | ५०८ |
| ४ | ,, | कृष्णाजिनस्पर्शः .. .. .. .. .. .. .. | ५०८ |
| ५ | ,, | कृष्णाजिनारूढजप्यम् .. ... .. .. .. | ५०९ |
| ६ | ,, | दीक्षितस्याध्वर्युकर्तृकाभिमन्त्रणम् .. .. .. | ५१० |
| ७ | ,, | यजमानकर्तृकाहवनीयोपस्थानम् .. .. .. | ५११ |
| ८—९ | | पुनरुपस्थानम् .. .. .. .. .. .. .. | ५१२ |
| १० | ,, | सोमक्रयणीपदविषयकानुवर्त्तनम् .. .. .. | ५१३ |
| ११ | ,, | सप्तमपदीयजपः .. .. .. .. .. .. | ५१३ |
| १२ | ,, | सुब्रह्मण्य मन्त्रास्य यजमानजपः .. .. .. .. | ५१४ |
| १३ | ,, | वेदिविमान मन्त्राः .. [illegible] | ५१४ |

| विषयः । | पृष्ठे । |
|---|---|
| १४ मन्त्रे वेदिकर्तृन् प्रति प्रैषः .. .. .. .. .. | ५१५ |
| १५ ,, वेद्यभिमन्त्रणम् .. .. .. .. .. .. | ५१५ |
| १६ ,, वेद्याः लोष्टस्य बहिःक्षेपणम् .. .. .. .. | ५१६ |
| १७ ,, सञ्ज्ञप्यमानपशोः पराद्वृत्तिः .. .. .. .. | ५१६ |


## ८ अनुवाके पशुविषयमन्त्रोक्तिः ।


| | |
|---|---|
| १ ,, उपाकृतपशुवाशने होमः.. .. .. .. .. .. | ५१७ |
| २ ,, पशुवाशननिमित्तकहोममन्त्रान्तरम् .. .. .. | ५१८ |
| ३ ,, पशूपवेशने होमः .. .. .. .. .. .. .. | ५१८ |
| ४ ,, पशूत्थापनम् .. .. .. .. .. .. .. .. | ५१८ |
| ५ ,, पशोः कम्पनादिविषये प्रत्येकमन्त्रः .. .. .. | ५१९ |
| ६ ,, उक्तविषये साधारणैको मन्त्रः .. .. .. .. | ५१९ |
| ७ ,, स्वयं मृते पशौ वक्तव्यं .. .. .. .. .. .. | ५१९ |
| ८ ,, कृतशेषसोमेन अकृतसोमसंसर्गे होमः .. .. | ५२० |
| ९ ,, सोमभक्षणे मन्त्रः ... .. .. .. .. .. .. | ५२० |


## ९ अनुवाके अभिषवादिविषयमन्त्रोक्तिः ।


| | |
|---|---|
| १ ,, उपांशुग्रहार्थाभिषवीयमन्त्रः .. .. .. .. .. | ५२२ |
| २ ,, ग्रावाभिमन्त्रणम् .. .. .. .. .. .. .. | ५२२ |
| ३ ,, माध्यन्दिनसवनोर्द्ध्वं प्रतिप्रस्थातृग्रावानुमोदनं .. | ५२३ |
| ४ ,, आग्नीध्रीयाग्नौ दध्यधिश्रयणम् .. .. .. .. | ५[illegible] |
| ५ ,, दधिघर्महोमः .. .. .. .. .. | ५२४ |
| ६ ,, दधिघर्मभक्षणं .. [illegible] | ५२४ |

| | विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|---|
| ७ मन्त्रे | नाभिदेशाभिमर्शनार्थकमन्त्रद्वयप्रतीकदर्शनं | ५२५ |
| ८—११ | षोडशीग्रहाभिमन्त्रणं | ५२५ |
| १२ ,, | षोडशीहोमः | ५२७ |
| १३ ,, | षोडशीभक्षणम् | ५२७ |
| १४ ,, | विहारादौ भयोपस्थितौ होमः | ५२७ |
| १५ ,, | अवभृथगमनकालीनहोमः | ५२८ |
| १६,१७ | सक्तुहोमः | ५२८ |
| १८ ,, | सौमिकवेद्यां यजमानाध्यवसानं | ५२९ |
| १९,२० | महाव्रतकूर्चारोहणपूर्वकं प्रतिष्ठायाश्लजपः | ५३० |


---

## १० अनुवाके प्रायश्चित्तमन्त्रोक्तिः।


| | | |
|---|---|---|
| १ ,, | हविर्धानादियाते होमादिकथनं | ५३१ |
| २ ,, | स्कन्नाया वपाया हविषो वा शुच्यवस्थापनं | ५३२ |
| ३ ,, | स्कन्दनप्रायश्चित्तार्थहोमः | ५३३ |
| ४ ,, | आर्त्विज्यविनाशे होमः | ५३३ |
| ५ ,, | एककपालस्कन्दनादौ कर्त्तव्यं | ५३३ |
| ६ ,, | यजमानकर्त्तृकोक्तकपालानुमन्त्रणं | ५३४ |
| ७ ,, | उक्तैककपालस्कन्दनप्रायश्चित्तहोमः | ५३५ |
| ८ ,, | भयोपस्थितौ द्रोणकलशगृहीतयागद्रव्यस्य होमः | ५३५ |
| ९—११ | चमसभक्षणात्पूर्वं स्तोत्रे उपाकृते कर्त्तव्यप्रायश्चित्तहोमः | ५३६ |
| १२ ,, | चमसप्रक्षालितस्येतरचमसेषु योजनं | ५३७ |
| १३ ,, | अवदुष्टसोमस्याभिमन्त्रणं | ५३७ |
| १४ ,, | उक्तसोमभक्षणं | ५३८ |

## ११ अनुवाके दार्शिकप्रायश्चित्तमन्त्रोक्तिः ।


| विषयः । | पृष्ठे । |
|---|---|
| १–२८ मन्त्रेषु दार्शिकादिप्रायश्चित्तहोमोक्तिः .. .. .. | ५३९ |


---

## १२ अनुवाके यजमानजपार्थमन्त्रोक्तिः ।


| | |
|---|---|
| १–१५ मन्त्रेषु यजमानकृतजपोक्तिः .. .. .. .. | ५४५ |


---

## १३ अनुवाके ऋजीषप्रोक्षणकथनम् ।


| | |
|---|---|
| १–१३ मन्त्रेषु ऋजीषप्रोक्षणोक्तिः.. .. .. .. .. | ५५१ |


---

## १४ अनुवाके अवभृथादिषेचनमन्त्रोक्तिः ।


| | |
|---|---|
| १—३ मन्त्रेषु अञ्जलिना यजमानकर्तृकमपोभिषिञ्चनम् .. | ५५७ |
| ४—६ ,, आहिताग्निनान्ययागे आर्त्विज्यं कृत्वा सोमे भक्षिते तत्र होमः .. .. .. .. .. .. | ५५९ |
| ७ मन्त्रे आज्यप्रैषभक्षणोक्तिः .. .. .. .. .. | ५६० |
| ८–१० मन्त्रेषु दक्षिणाग्नौ होमविधिः .. .. .. .. | ५६० |
| ११–१३ ,, दक्षिणाग्निसमीपे प्रागग्रकुशास्तरणे दधिस्थापनं | ५६० |
| १४ मन्त्रे पितृपस्थानम्.. .. .. .. .. .. .. | ५६० |
| १५ ,, द्वादशाहकर्त्तव्यगार्हपत्यहोमः .. .. .. .. | ५६० |
| १६ ,, दक्षिणाग्नौ होमः .. .. .. .. .. .. | ५६१ |
| १७ ,, आहवनीये होमः .. .. .. .. .. .. | ५६२ |

# ८ प्रपाठके चिराचाश्वमेधस्य प्रथमदिनकृत्यम्।

## १ अनुवाके यजमानसंस्कारकथनं।


| विषयः। | | पृष्ठे। |
|---|---|---|
| १ | मन्त्रे साङ्ग्रहणीयेष्टिविधानं .. .. .. .. .. .. | ५६२ |
| २ | ,, अश्वबन्धनार्थरशनाप्रमाणाद्युक्तिः .. .. .. | ५६२ |
| ३ | ,, अश्वमेधस्य नक्षत्रविशेषोक्तिः .. .. .. .. | ५६४ |
| ४ | ,, यज्ञीयदेशोक्तिः .. .. .. .. .. .. | ५६४ |
| ५ | ,, ऋत्विगानयने विशेषः .. .. .. .. .. | ५६४ |
| ६ | ,, यजमानकेशवपनादिकृत्यं.. .. .. .. .. | ५६५ |


## २ अनुवाके ब्रह्मौदनोक्तिः।


| | | |
|---|---|---|
| १ | ,, चतुर्विधजलोक्तिः .. .. .. .. .. .. | ५६६ |
| २ | ,, उक्तजलाहरणे देशविशेषविधानं .. .. .. | ५६६ |
| ३ | ,, आहृतजलेनोदनपाकः .. .. .. .. .. | ५६७ |
| ४ | ,, ओदनपरिमाणविधानं .. .. .. .. .. | ५६७ |
| ५ | ,, ब्रह्मौदनस्याध ऊर्द्धं रुक्मस्थापनं .. .. .. | ५६७ |
| ६ | ,, ब्रह्मौदनोच्छेषेण रशनाञ्जनम् .. .. .. .. | ५६८ |
| ७ | ,, रशनाया दर्भमयपक्षत्वविधिः .. .. .. .. | ५६८ |
| ८ | ,, महर्त्विजां ब्रह्मौदनप्राशनं .. .. .. .. | ५६९ |
| ९ | ,, प्राशनकर्तृभ्यो सुवर्णदानं .. .. .. .. .. | ५६९ |
| १० | ,, उक्तदानस्य कालविधिः .. .. .. .. .. | ५६९ |

## ३ अनुवाके अश्वबन्धनम्।


| विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|
| १ मन्त्रे ब्राह्मणात् अश्वबन्धनस्य प्रत्यनुज्ञाग्रहणं .. .. | ५७० |
| २ ,, उक्ताश्वबन्धनस्य तात्पर्यं .. .. .. .. .. | ५७० |
| ३ ,, अश्वबन्धनरशनाग्रहणादिकथनं .. .. .. | ५७१ |
| ४ ,, रशनाभिमन्त्रणं .. .. .. .. .. .. | ५७१ |
| ५ ,, रशनायास्त्रयोदशारत्निपक्षत्वविचारः .. .. | ५७२ |
| ६ ,, रशनादानमन्त्रद्वितीयपादगतायुःशब्दतात्पर्यदर्शनम् | ५७३ |
| ७ ,, उक्तमन्त्रस्य तृतीयपादगतबभूवुःशब्दतात्पर्यदर्शनं .. | ५७३ |
| ८ ,, उक्तमन्त्रचतुर्थपादगततंशब्दतात्पर्यदर्शनं .. .. | ५७३ |
| ९ ,, अश्वबन्धनमन्त्रतात्पर्यं .. .. .. .. .. .. | ५७४ |
| १० ,, अश्वबन्धनार्थकशाखान्तरीयमन्त्रतात्पर्योक्तिः .. | ५७५ |


---

## ४ अनुवाके रशनाबद्धाश्वस्यावगाहनोक्तिः।


| | |
|---|---|
| १ ,, अश्वावगाहनविधिः .. .. .. .. .. | ५७६ |
| २ ,, श्वहननेऽध्वर्य्योरनुज्ञा .. .. .. .. .. | ५७६ |
| ३ ,, शुनो हनने साधनविधानं .. .. .. .. | ५७७ |
| ४ ,, शुनो हन्तुर्निरूपणम्.. .. .. .. .. .. | ५७७ |
| ५ ,, हतस्य शुनोऽश्वपादाधःस्थापनम्.. .. .. .. | ५७८ |
| ६ ,, मृतशुनः परित्यागे विधिः .. .. .. .. | ५७८ |
| ७ ,, जलस्थाश्वस्योत्तरतीरोद्गमनसाधनद्रव्योक्तिः .. | ५७८ |
| ८ ,, उदूहबन्धने साधनद्रव्योक्तिः .. .. .. .. | ५७९ |
| ९ ,, अश्वस्य तीरे उदूहनम् .. .. .. .. .. | ७९ |
| १०, ११ मन्त्रयोः ब्रह्मकर्तृकयजमानहस्तग्रहणं .. .. .. | ७९ |


---

## ५ अनुवाके अश्वप्रोक्षणोक्तिः ।


| विषयः । | पृष्ठे । |
|---|---|
| १ मन्त्रे ऋत्विक्कर्तृकाश्वप्रोक्षणं .. .. .. .. .. .. | ५८० |
| २ ,, अध्वर्युकर्तृकाश्वप्रोक्षणं .. .. .. .. .. .. | ५८० |
| ३ ,, ब्रह्मकर्तृकाश्वप्रोक्षणम् .. .. .. .. .. .. | ५८१ |
| ४ ,, होतृकर्तृकाश्वप्रोक्षणम् .. .. .. .. .. .. | ५८१ |
| ५ ,, उद्गातृकर्तृकाश्वप्रोक्षणम् .. .. .. .. .. .. | ५८१ |
| ६ ,, प्रोक्षणकारिणां सहचारिराजपुत्रादीनां शतसङ्ख्यायाः प्रशंसा .. .. .. .. .. .. .. | ५८२ |
| ७ ,, उक्तसङ्ख्यागतचतुःशतसङ्ख्यायाः प्रशंसा .. .. | ५८२ |


## ६ अनुवाकेऽश्वशरीरपतितबिन्दनुमन्त्रणम् ।


| | |
|---|---|
| १ ,, अश्वशरीरपतितबिन्दनुमन्त्रणम् .. .. .. | ५८२ |
| २ ,; अनुवचनीयमन्त्रसङ्ख्या .. .. .. .. .. .. | ५८३ |
| ३ ,, उक्तमन्त्रसङ्ख्यायां पक्षान्तरविधानं .. .. .. | ५८४ |
| ४ ,, अनुवचनीयमन्त्रप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ५८४ |
| ५ ,, उक्तबिन्द्वाधारीभूतभूमिप्रशंसा .. .. .. .. | ५८४ |
| ६ ,, लोकानुवचनप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ५८४ |
| ७ ,, उक्तमन्त्राणां मध्ये प्रथममन्त्रस्य तात्पर्यदर्शनं .. | ५८५ |
| ८ ,, अवशिष्टनवमन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. .. | ५८५ |
| ९ ,, सर्वमन्त्रतात्पर्यनिगमनं .. .. .. .. .. .. | ५८५ |
| १०,११ मन्त्रयोः मन्त्रदशकावृत्तिविधानं .. .. .. .. | ५८५ |
| १२ मन्त्रे कृत्स्नस्तोत्रोपसंहारः .. .. .. .. .. .. | ५८६ |

## ७ अनुवाके अध्वर्युकर्तृकाश्वप्रोक्षणम्।


| विषयः। | | | पृष्ठे। |
|---|---|---|---|
| १ | मन्त्रे | अश्वपूर्वदिग्भागस्थितेन पश्चिमाभिमुखेनाध्वर्युणा अश्वस्य प्रोक्षणम् .. .. .. .. .. .. | ५८७ |
| २ | ,, | अश्वस्य दक्षिणभागस्य अध्वर्युकर्तृकप्रोक्षणविधानं .. | ५८७ |
| ३ | ,, | अश्वस्य पश्चिमभागस्य अध्वर्युकर्तृकप्रोक्षणविधानं .. | ५८७ |
| ४ | ,, | अश्वस्य उदग्भागस्याध्वर्युकर्तृकप्रोक्षणविधानं .. | ५८८ |
| ५ | ,, | अश्वाधोभागप्रोक्षणम् .. .. .. .. .. | ५८८ |
| ६ | ,, | अश्वोर्ध्वभागप्रोक्षणम् .. .. .. .. .. | ५८८ |
| ७ | ,, | अवशिष्टप्रोक्षणमन्त्रपूर्वभागतात्पर्यदर्शनं .. .. | ५८८ |
| ८ | ,, | उक्तमन्त्रोत्तरभागतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. | ५८९ |
| ९ | ,, | अश्वप्रोक्षणप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ५८९ |


---

## ८ अनुवाके अश्वचरिताश्वरूपयोर्होमः।


| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | ,, | अश्वचरितहोमः .. .. .. .. .. .. | ५९० |
| २ | ,, | उक्तहोममन्त्राणां तात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. | ५९० |
| ३ | ,, | अश्वचरितहोमस्य आक्षेपपूर्वकं समाधानं .. .. | ५९० |
| ४ | ,, | उक्ताहुतिहोमे देशकालनिरूपणं .. .. .. | ५९१ |
| ५ | ,, | उक्तहोमे मतान्तरदर्शनं .. .. .. .. .. | ५९२ |
| ६ | ,, | उक्तहोमे सिद्धान्तमतदर्शनं .. .. .. .. | ५९२ |
| ७ | ,, | अश्वरूपहोमविधानम् .. .. .. .. .. | ५९३ |
| ८ | ,, | एतदतिरिक्तपृथगेकहोमः.. .. .. .. .. | ५९३ |

## ९ अनुवाके अश्वनामवाचनायुक्तिः।


| | विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|---|
| १ | मन्त्रे प्रभूर्विभ्वित्यश्वनामद्वयतात्पर्यदर्शनं .. .. .. | ५९४ |
| २ | ,, अश्वस्य तृतीयचतुर्थनाम्नोस्तात्पर्यदर्शनम् .. .. | ५९४ |
| ३ | ,, पञ्चमनाम्नस्तात्पर्यदर्शनम् .. .. .. .. .. | ५९५ |
| ४ | ,, उक्ताश्वनामवेदनप्रशंसा .. .. .. .. .. | ५९५ |
| ५ | ,, नरार्वसप्तिवाजीत्यश्वनामचतुष्टयतात्पर्यकथनं .. | ५९५ |
| ६ | ,, अश्वस्य ययुनाम्नस्तात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. | ५९५ |
| ७ | ,, एकादशस्याश्वनाम्नस्तात्पर्योक्तिः .. .. .. .. | ५९६ |
| ८ | ,, अश्वनामवाचनानन्तरानुष्ठेयहोमोक्तिः .. .. | ५९६ |
| ९ | ,, होमानन्तरमश्वोत्सर्गविधानं .. .. .. .. | ५९६ |
| १० | ,, आशापालराजपुत्रेभ्योऽश्वसमर्पणं .. .. .. | ५९७ |
| ११ | ,, उत्सृष्टस्याश्वस्य रथकारकुले वासनिरूपणाद्युक्तिः | ५९७ |
| १२ | ,, चतुःशताश्वरक्षकपक्षोक्तिः .. .. .. .. | ५९८ |
| १३ | ,, अश्वेऽपहृते प्रायश्चित्तं .. .. .. .. .. | ५९९ |


---

## १० अनुवाके दीक्षाभिधानम्।


| | | |
|---|---|---|
| १ | ,, वैश्वदेवहोमविधानं .. .. .. .. .. .. | ६०० |
| २ | ,, होमसङ्ख्योक्तिः .. .. .. .. .. .. .. | ६०१ |
| ३ | ,, उक्तसङ्ख्याकहोमस्य प्रतिदिनविधेयत्वस्योक्तिः .. .. | ६०१ |
| ४ | ,, उक्तसङ्ख्यायाः विशेषेण विभागविधानं .. .. | ६०१ |
| ५ | ,, सप्तदिनहोतव्यवैश्वदेवाख्यानां सङ्ख्याविधानं .. .. | ६०१ |
| ६ | ,, आदित्यलोकप्रशंसा .. .. .. | ६०२ |
| ७ | ,, उक्त होम प्रशंसा .. .. .. .. .. | ६०२ |

विषयः। पृष्ठे।

८ मन्त्रे वैश्वदेवमन्त्रगतकिञ्चिद्विशेषप्रशंसा .. .. .. ६०३

९ ,, दीक्षायां दिनसङ्ख्याविधानम् .. .. .. .. ६०३

१० ,, पूर्णाहुतिहोमः .. .. .. .. .. .. ६०३


---

## ११ अनुवाके वैश्वदेवमन्त्रव्याख्या।


१ मन्त्रे वैश्वदेवविधिप्रशंसा.. .. .. .. .. .. ६०४

२ ,, उक्तदीक्षायां प्रथमद्वितीयदिनहोतव्यमन्त्रतात्पर्य-दर्शनं .. .. .. .. .. .. ६०४

३ ,, ,, तृतीयदिनगतमन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. ६०५

४ ,, ,, चतुर्थदिनगतमन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. ६०५

५ ,, ,, पञ्चमदिनगतमन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. ६०६

६ ,, ,, षष्ठदिनगतमन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. ६०६

७ ,, ,, सप्तमदिनगतमन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. ६०७

८ ,, पूर्णाहुतिप्रशंसा .. . .. .. .. .. ६०७


---

## १२ अनुवाकेऽश्वसञ्चरणकाले देवयजनदेशे कर्त्तव्येष्टिचयोक्तिः।


१ ,, प्रातरनुष्ठेयेष्टिकथनं .. .. .. .. ६०८

२ ,, मध्याह्नकर्त्तव्येष्टिनिरूपणं .. .. .. .. .. ६०८

३ ,, अपराह्णकर्त्तव्येष्टिविधिः .. .. .. .. .. ६०८

४ ,, द्वादशकपालेष्ट्यूर्ध्वं सायङ्काले कर्त्तव्यहोमविधिः .. ६०९

५ ,, अश्वबन्धनार्थरज्जूक्तिः .. .. .. .. .. ६०९

## १३ अनुवाके उखास्थाग्न्युपस्थानमन्त्रव्याख्योक्तिः ।


| विषयः । | | | पृष्ठे । |
|---|---|---|---|
| १ | मन्त्रे | उखास्थाग्न्युपस्थानमन्त्रस्य प्रथमवाक्यव्याख्या.. .. | ६१० |
| २ | ,, | उक्तमन्त्रस्य द्वितीयवाक्यव्याख्या.. .. .. .. | ६१० |
| ३ | ,, | उक्तमन्त्रस्य तृतीयादिचतुर्वाक्यव्याख्या .. .. | ६१० |
| ४ | ,, | उक्तमन्त्रस्य सप्तमवाक्यव्याख्या .. .. .. .. | ६११ |
| ५ | ,, | उक्तमन्त्रस्य अष्टमवाक्यव्याख्या .. .. .. | ६११ |
| ६ | ,, | उक्तमन्त्रस्य नवमवाक्यव्याख्या .. .. .. .. | ६११ |
| ७ | ,, | उक्तमन्त्रस्य दशमवाक्यव्याख्या .. .. .. .. | ६११ |
| ८ | ,, | उक्तमन्त्रस्य एकादशद्वादशवाक्यव्याख्या .. .. | ६१२ |


---

## १४ अनुवाके अन्नहोमोक्तिः ।


| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | ,, | आख्यायिकाख्यानपूर्वकं आज्यादिदशद्रव्याणां होमे विधिदर्शनं .. .. .. .. .. .. | ६१२ |
| २ | ,, | उक्तदशद्रव्येषु आज्यहोमस्य प्राथम्येनोल्लेखः.. .. | ६१३ |
| ३ | ,, | उक्तावशिष्टनवद्रव्याणां क्रमेण होमविधानं.. .. | ६१३ |
| ४ | ,, | उक्तदशद्रव्यस्य मिश्रीकृत्य होमविधानं.. .. .. | ६१४ |


---

## १५ अनुवाके अन्नहोमप्रकारविशेषोक्तिः ।


| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | ,, | अन्नहोमस्य कालविशेषविधिः .. .. .. .. | ६१५ |
| २ | ,, | पूर्वानुवाकोक्तप्रथमद्रव्यप्रशंसा.. .. .. .. | ६१५ |
| ३ | ,, | उक्तप्रथमद्रव्यस्योत्तरनवद्रव्येभ्यः पूर्वं होमस्योक्तिः .. | ६१५ |
| ४ | ,, | आज्यहोमान्तरं नवद्रव्यहोमोक्तिः .. .. .. | ६१६ |


L

विषयः । पृष्ठे ।

५ मन्त्रे आज्यहोमेऽयुग्मानुवाकस्यान्नहोमे युग्मानुवाकस्य च व्यवस्थादर्शनं .. .. .. .. .. .. ६१६
६ ,, रात्रिरूपहोमकालप्रशंसा .. .. .. .. ६१६
७ ,, भूताय स्वाहेत्यनुवाकस्यान्नद्रव्यं निराकृत्य आज्यद्रव्यस्य विधानं.. .. .. .. .. .. ६१६
८ ,, आज्यहोमोक्तप्रथमानुवाकगतमन्त्रद्वयव्याख्या .. ६१७
९ ,, आज्यहोमोक्तान्त्यानुवाकीयमन्त्रद्वयव्याख्या .. .. ६१७
१० ,, आज्यहोमोक्तान्त्यानुवाकीयशेषमन्त्रव्याख्या .. .. ६१७

---

## १६ अनुवाके पूर्वोक्तानुवाकस्य विस्तरेण व्याख्या ।

१ ,, उक्तानुवाकद्वयव्याख्यानोपयोगिस्तुतिः .. .. ६१८
२ ,, उक्तानुवाकीयप्रथममन्त्रस्य प्रजापतिप्राप्तिहेतुतादर्शनं ६१८
३ ,, उक्तानुवाकाम्नातसङ्ख्याविशेषानुपूर्व्यप्रशंसा .. .. ६१८
४ ,, उक्तमन्त्रीयोत्तरोत्तरसङ्ख्यागतपूर्वपूर्वसङ्ख्यागर्भितत्वप्रशंसा .. .. .. .. .. .. .. ६१९
५ ,, प्रथमानुवाकगतसङ्ख्यासातत्यप्रशंसा .. .. .. ६१९
६ ,, चरमानुवाकव्याख्याप्रपञ्चार्थमाद्यमन्त्रव्याख्या.. .. ६१९
७ ,, उक्तानुवाकगततृतीयचतुर्थपञ्चममन्त्रतात्पर्यदर्शनं.. ६१९
८ ,, उक्तानुवाकगतषष्ठमन्त्रव्याख्या .. .. .. .. ६२०
९ ,, उक्तानुवाकगतसप्तममन्त्रव्याख्या.. .. .. .. ६२०
१० ,, समुद्रादिसङ्ख्याद्वारा तत्तत्सङ्ख्येयवस्तुप्राप्तिदर्शनं .. ६२०
११ ,, उषसे स्वाहेत्यादिमन्त्रद्वयव्याख्या.. .. .. .. ६२०
१२ ,, उषसे स्वाहेत्यादिमन्त्राणां कालविशेषोक्तिः .. .. ६२१
१३ .. .. [illegible] .. ..

## १७ अनुवाके अन्नहोममन्त्रानुवाकव्याख्या ।


| | | विषयः । | पृष्ठे । |
|---|---|---|---|
| १ | मन्त्रे | अश्वनामाख्यमन्त्रानुवाकतात्पर्यदर्शनं | ६२२ |
| २ | ,, | उद्द्रावमन्त्रानुवाकतात्पर्यदर्शनं | ६२२ |
| ३ | ,, | अश्वहोमात् पूर्वहोमस्य मन्त्राणां तात्पर्यदर्शनं | ६२२ |
| ४ | ,, | उक्तप्रकरणीयानुवाकान्तरतात्पर्यस्पष्टतादर्शनं | ६२३ |
| ५ | ,, | पूर्वदीक्षामन्त्रतात्पर्यदर्शनं | ६२३ |
| ६ | ,, | उक्तप्रकरणीयोत्तरानुवाकोक्तमन्त्रसङ्ख्योपजीव्यत्व-प्रशंसा | ६२३ |
| ७ | ,, | ऋतुदीक्षामन्त्रतात्पर्यदर्शनं | ६२४ |
| ८ | ,, | उत्तरानुवाकतात्पर्यदर्शनं | ६२४ |
| ९ | ,, | आप्तिमन्त्रतात्पर्यदर्शनं | ६२४ |
| १० | ,, | पर्याप्तिमन्त्रतात्पर्यदर्शनं | ६२४ |
| ११ | ,, | आभूमन्त्रतात्पर्यदर्शनं | ६२४ |
| १२ | ,, | अनुभूमन्त्रतात्पर्यदर्शनं | ६२४ |
| १३ | ,, | वैश्वदेवमन्त्रतात्पर्यदर्शनं | ६२५ |
| १४ | ,, | अक्तमन्त्रतात्पर्यदर्शनं | ६२५ |
| १५ | ,, | रूपमन्त्रतात्पर्यदर्शनं | ६२५ |
| १६ | ,, | ओषधिमन्त्रतात्पर्यदर्शनं | ६२५ |
| १७ | ,, | वनस्पतिमन्त्रतात्पर्यदर्शनं | ६२६ |
| १८ | ,, | अपाय्यमन्त्रतात्पर्यदर्शनं | ६२६ |
| १९ | ,, | असञ्ज्ञकानुवाकद्वयोक्तमन्त्रतात्पर्यदर्शनं | ६२६ |


## १८ अनुवाके अन्नहोमानुवाकावशिष्टव्याख्या ।


| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | ,, | अम्भोमन्त्रप्रशंसा | ६२७ |
| २ | ,, | अम्भो महो मन्त्रद्वय [illegible] | ६२७ |

| विषयः । | पृष्ठं । |
|---|---|
| ३ मन्त्रे यव्याख्यमन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. .. | ६२८ |
| ४ ,, गव्यमन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. .. | ६२८ |
| ५ ,, सन्तत्याख्यमन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. | ६२८ |
| ६ ,, प्रमुक्तिमन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. .. | ६२९ |
| ७ ,, पञ्चमप्रपाठकान्तर्गतैकतमानुवाकस्पष्टार्थतादर्शनं .. | ६२९ |
| ८ ,, शरीरहोममन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. | ६२९ |
| ९ ,, योगमन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. .. | ६२९ |
| १० ,, महिममन्त्रद्वयतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. | ६२९ |
| ११ ,, ब्रह्मवर्चसमन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. | ६३० |
| १२ ,, अनुवाकान्तरतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. | ६३० |
| १३ ,, सन्नतिमन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. .. | ६३० |
| १४ ,, संहितानाम्नातस्य भूताय स्वाहेत्यादिमन्त्रद्वयस्य व्याख्या | ६३० |
| १५ ,, चतुर्थकाण्डोक्तानुवाकत्रयतात्पर्यदर्शनं .. .. .. | ६३१ |
| १६ ,, उक्तान्नहोमसहिताश्वमेधानुष्ठानवेदनयोः प्रशंसा .. | ६३१ |
| १७ ,, अन्नहोमानन्तरं यदि रात्रिरवशिष्येत तदा तदानीं कर्त्तव्यहोमविधानं .. .. .. .. .. .. | ६३१ |
| १८ ,, सर्वान्ते विधीयमानहोमः .. .. .. .. .. | ६३१ |


---

१९ अनुवाके यूपप्रयोगाभिधानं ।


| | |
|---|---|
| १ ,, अश्वमेधीययूपसङ्ख्याविधानं .. .. .. .. | ६३२ |
| २ ,, अग्निष्ठनामकमुख्ययूपस्य वृक्षविशेषोक्तिः .. .. | ६३२ |
| ३ ,, अश्वरुधिरावदाने साधनविशेषविधानं .. .. | ६३३ |
| ४ ,, उक्तान्यावदानसाधनविशेषोक्तिः .. .. .. | ६३३ |
| ५ ,, एकविंशति यूपानां पशुनियोजने [illegible] | ६३३ |
| ६ ,, [illegible] .. .. .. | ६३[illegible] |


---

## २० अनुवाके यूपस्थानादिनिरूपणं ।


| | | विषयः । | पृष्ठं । |
|---|---|---|---|
| १ | मन्त्रे | प्रधानयूपस्थापनं .. .. .. .. .. .. .. | ६३४ |
| २ | ,, | उक्तयूपपार्श्वद्वये देवदारुयूपयोः स्थापनं .. .. | ६३४ |
| ३ | ,, | उक्तयूपत्रयपार्श्वद्वये बैल्वयूपानां स्थापनं .. .. | ६३५ |
| ४ | ,, | उक्तयूपनवकपार्श्वद्वये खदिरयूपस्थापनं.. .. | ६३५ |
| ५ | ,, | उक्तपञ्चदशयूपपार्श्वद्वये पलाशयूपस्थापनं .. | ६३५ |
| ६ | ,, | उक्तैकोनविंशतियूपप्रशंसा .. .. .. .. .. | ६३५ |
| ७ | ,, | यूपसङ्ख्यास्तुतिप्रसङ्गेन पशुबाहुल्यस्तुतिः .. .. | ६३५ |
| ८ | ,, | अश्वमेधे पशुसङ्ख्याविशेषनियमनिषेधः.. .. .. | ६३६ |
| ९ | ,, | प्रश्नोत्तरक्रमेण पश्ववदानप्रदेशविशेषविधानं .. | ६३६ |
| १० | ,, | उत्तरस्यां दिश्यश्वस्यविधोऽवस्थापनं .. .. .. | ६३७ |
| ११ | ,, | तूपरगोमृगादिहविरासादनप्रकारः.. .. .. | ६३७ |
| १२ | ,, | होमविशेषविधानं.. .. .. .. .. .. .. | ६३७ |
| १३ | ,, | होमान्तरविधिः .. .. .. .. .. .. .. | ६३८ |
| १४ | ,, | एतद्वेदनप्रशंसा .. .. .. .. .. .. .. | ६३८ |
| १५ | ,, | पुनराहुतिद्वयविधिः .. .. .. .. .. .. | ६३८ |


## २१ अनुवाके चेतव्याग्न्यादिविशेषोक्तिः ।


| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | ,, | अग्निचयने विशेषविधानं .. .. .. .. | ६३९ |
| २ | ,, | अग्नेरेकविंशत्वपक्षदूषणं.. .. .. .. .. | ६३९ |
| ३ | ,, | उक्तविषये पूर्वपक्षवादिमतोपन्यासः.. .. .. | ६३९ |
| ४ | ,, | अग्निष्टोमयोर्द्वादशपुरुषपरिमितत्वप्रशंसा.. .. | ६४० |
| ५ | " | यूपैकादशसङ्ख्याप्रशंसा .. .. .. .. | ६४० |
| ६ | " | उक्तपक्षदूषणं .. .. .. .. .. .. | ६४० |

विषयः। पृष्ठे।

७ मन्त्रे उक्तविषये सिद्धान्तदर्शनं .. .. .. .. .. .. ६४१

८ ,, दृष्टान्तद्वारा यूपादिप्रशंसा .. .. .. .. .. ६४१

९ ,, शिरोदृष्टान्तद्वाराश्वमेधप्रशंसा .. .. .. .. ६४१


---

## २२ अनुवाके अश्वमेधद्वितीयदिनकर्त्तव्यबहिष्पवमानविशेषोक्तिः।


१ ,, अश्वसाहित्यविधानं .. .. .. .. .. .. ६४२

२ ,, अश्वस्य उद्गातृस्थाने वरणविधानं .. .. .. ६४३

३ ,, अश्वपुच्छान्वारम्भोक्तिः .. .. .. .. .. .. ६४३

४ ,, अश्वकर्तृकमुद्गानदर्शनं .. .. .. .. .. .. ६४३

५ ,, उपगानविधानं .. .. .. .. .. .. .. .. ६४४

६ ,, अश्वहिङ्कारानन्तरमध्वर्युवाक्यं .. .. .. .. ६४४

७ ,, बर्हिस्थाने हिरण्यविधानं .. .. .. .. .. ६४४


---

## २३ अनुवाके अश्वे पर्यग्न्यपशुनियोजनं।


१ ,, अश्वे पर्यग्न्यपशुनियोगः .. .. .. .. .. .. ६४५

२ ,, अश्वादित्रयाणामग्निष्ठयूपे नियोजनं .. .. .. ६४५

३ ,, अश्वाङ्गसम्बन्ध्याद्यपशुनियोजनं .. .. .. .. ६४६

४—१० मन्त्रेषु द्वितीयाद्येकादशान्तपशुनियोजनं .. .. ६४६

# ९ प्रपाठके रोहितादिपश्वालम्भनं ।

## १ अनुवाके रोहिताद्यष्टादशपश्वालम्भोक्तिः ।


| | विषयः । | पृष्ठे । |
|---|---|---|
| १ मन्त्रे | अष्टादशपशुविधानं .. .. .. .. .. | ६५० |
| २ ,, | पशुगताष्टादशसङ्ख्याप्रशंसा .. .. .. .. | ६५१ |
| ३ ,, | उक्तपशूपाकरणार्थं यूपविशेषोक्तिः .. .. .. | ६५१ |
| ४ ,, | यूपान्तरेषु अष्टादशपशूनामुपाकरणे सङ्ख्याविभागः | ६५१ |
| ५ ,, | यूपान्तरालधारितारण्यपशुप्रयोगनिषेधः .. .. | ६५२ |
| ६ ,, | आरण्यपशुविषये चाक्षेपवादिमतोपन्यासः .. | ६५३ |
| ७ ,, | उक्तविषये समाधानवादिमतदर्शनं .. .. .. | ६५४ |
| ८ ,, | ग्राम्यपशूनां समाप्तिपर्यन्तं प्रयोगविधानं .. .. | ६५४ |


## २ अनुवाके चातुर्मास्यपशुप्रयोगकथनं ।


| | | |
|---|---|---|
| १ ,, | ग्राम्यारण्यपशुप्रशंसा .. .. .. .. .. | ६५४ |
| २ ,, | चातुर्मास्यपशुविधानं .. .. .. .. .. | ६५६ |
| ३ ,, | एकादशिनपशुविधानं .. .. .. .. .. | ६५६ |
| ४ ,, | दशिपशुविधानं .. .. .. .. .. .. | ६५७ |
| ५ ,, | पशुवर्गसङ्ख्याविधानं .. .. .. .. .. | ६५७ |
| ६ ,, | उक्तपशु देवताजात्यादिभेदस्य क्रमेण प्रशंसा .. | ६५८ |
| [illegible] | [illegible] | |

## ३ अनुवाके रोहितादिपशूनां वपाहोमसाहित्योक्तिः ।


| विषयः । | | पृष्ठे । |
|---|---|---|
| १ मन्त्रे | ग्राम्यारण्यपशूनां बहुधाप्रशंसा.. .. .. .. | ६५९ |
| २ ,, | एकैकदेवस्यैवाम्नातपशुत्वप्रशंसा .. .. .. | ६५९ |
| ३ ,, | प्रश्नोत्तरद्वारा एकैकदेवस्य बहुपशुत्वस्य प्रशंसा .. | ६५९ |
| ४ ,, | वपाहोमसाहित्यविधानं.. .. .. .. .. | ६६० |
| ५ ,, | आरण्यपशुवपाहोमनिषेधः .. .. .. .. | ६६० |


---

## ४ अनुवाके अश्वस्य रथयोजनाद्युक्तिः ।


| | | |
|---|---|---|
| १ ,, | अश्वस्य रथे नियोगः .. .. .. .. .. | ६६१ |
| २ ,, | अश्वनियोगमन्त्रोत्तरार्द्धव्याख्या.. .. .. .. | ६६१ |
| ३ ,, | अश्वपार्श्वे प्रष्ठीपशुनियोजनं .. .. .. .. | ६६२ |
| ४ ,, | उक्तपशुनियोगे पठनीयमन्त्रस्य द्वितीयभागस्य तात्पर्योक्तिः.. .. .. .. .. .. .. | ६६२ |
| ५ ,, | उक्तमन्त्रस्य तृतीयपादतात्पर्यदर्शनं .. .. .. | ६६२ |
| ६ ,, | पूर्वोक्तमन्त्रद्वयतात्पर्यस्य सङ्ग्रहेणोक्तिः .. .. | ६६२ |
| ७ ,, | रथे ध्वजस्थापनस्य विधिः.. .. .. .. | ६६२ |
| ८ ,, | कवचधारणं.. .. .. .. .. .. .. | ६६३ |
| ९ ,, | अध्वर्युकर्तृकसप्तमकाण्डोक्तमन्त्रवाचनविधानं .. | ६६३ |
| १० ,, | रथप्रदक्षिणावर्त्तने पठनीयमन्त्रोत्तरार्द्धतात्पर्यदर्शनं | ६६३ |
| ११ ,, | मणिभिरश्वस्य शृङ्गारविधानं .. .. .. .. | ६६४ |
| १२ ,, | व्याहृतित्रयोक्तिः .. .. .. .. .. .. | ६६४ |
| १३ ,, | उक्तव्याहृतित्रयस्य पत्नीभेदेन व्यवस्थापनं .. .. | ६६५ |
| १४ ,, | महिषी[illegible]विधानं .. .. | [illegible] |
| १५ ,, | [illegible]विधानं .. .. .. .. .. | ६६५ |

| विषयः । | पृष्ठे । |
| --- | --- |
| १६ मन्त्रे अश्वस्य स्वरेणानामाज्येनाभ्यञ्जनं.. .. .. .. | ६६५ |
| १७ ,, पत्नीकर्टकाभ्यञ्जनप्रशंसा .. .. .. .. .. | ६६६ |
| १८ ,, मुख्याश्वार्थमन्त्रविशेषोपाहरणविधानं.. .. .. | ६६७ |
| १९ ,, पूर्वमन्त्रोत्तरभागतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. | ६६७ |
| २० ,, उक्तानावश्यापत्तौ पञ्चमकाण्डोक्तमन्त्रविशेषविनियोगः | ६६७ |
| २१ ,, पञ्चमसप्तमकाण्डगतमन्त्रत्रयैरश्वस्यानुमन्त्रणं.. .. | ६६७ |
| २२ ,, पञ्चमकाण्डोक्तानुवाकस्य प्रयाजयाज्यारूपेण विनियोगः | ६६८ |


---

## ५ अनुवाके ब्रह्मोद्याख्यसंवादकथनं ।


| | |
| --- | --- |
| १ ,, ब्रह्मोद्यविधानं.. .. .. .. .. .. .. | ६६८ |
| २ ,, अग्निष्ठयूपदक्षिणभागे ब्रह्मप्रवेशनविधानं .. .. | ६६९ |
| ३ ,, उक्तयूपोत्तरभागे होत्रनुप्रवेशनविधानं .. .. .. | ६६९ |
| ४ ,, अग्निष्ठयूपस्य होतृप्रतियोगित्वविधानं.. .. .. | ६६९ |
| ५ ,, होतृप्रश्नवाक्यव्याख्यानपूर्वकब्रह्मोत्तरवाक्यतात्पर्य-दर्शनं .. .. .. .. .. .. .. | ६७० |
| ६—१६ मन्त्रेषु होतृब्रह्मणोः द्वितीयादिद्वादशप्रश्नोत्तरवाक्य-दर्शनं .. .. .. .. .. .. .. | ६७० |


---

## ६ अनुवाके म्रृताश्वोपचारकथनं ।


| | |
| --- | --- |
| १ मन्त्रे अश्वसञ्ज्ञपनकालानुष्ठेयहोमविधानं .. .. | ६७२ |
| २ ,, अवन्तीश्चेति मन्त्रतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. | ६७३ |
| ३ ,, दक्षिणतः पत्नीकृताश्वप्रदक्षिणत्रयविधानं .. .. | ६७४ |
| ४ ,, [illegible] .. | ६७४ |

| विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|
| ५ मन्त्रे उक्तप्रदक्षिणावृत्तिसङ्ख्यानियमविधानं .. .. | ६७४ |
| ६ ,, प्रतिप्रस्थातृकर्तृकपत्न्यानयनविधानं .. .. .. | ६७५ |
| ७—९ मन्त्रेषु अध्वर्युकर्तृके रक्तवाससा महिष्यश्वयोः प्रच्छादने पठनीयमन्त्रस्य भागत्रयतात्पर्यदर्शनं .. | ६७५ |
| १० मन्त्रे सौवर्णसूचीद्वाराश्वस्य महिषीकर्तृकं असिप्रहारस्थानलाञ्छनकल्पनं .. .. .. .. .. | ६७६ |
| ११ ,, असिपथकल्पने विहितपञ्चमकाण्डोक्तगायत्रीत्रिष्टुबित्यनुवाकाम्नातमन्त्रस्पष्टार्थतादर्शनं .. .. | ६७६ |
| १२ ,, सूचीनामवान्तरभेदविधानं .. .. .. .. | ६७७ |
| १४ ,, अश्वत्वक्छेदनं .. .. .. .. .. .. | ६७७ |

## ७ अनुवाके मृताश्वोपचारविषयमन्त्रोक्तिः।

| | |
|---|---|
| १ ,, महिषीप्रोत्साहनमन्त्रस्य प्रथमपादस्य तात्पर्यदर्शनं | ६७८ |
| २ ,, उक्तमन्त्रस्य द्वितीयपादतात्पर्यदर्शनं .. .. .. | ६७८ |
| ३ ,, उक्तमन्त्रस्य तृतीयपादतात्पर्यदर्शनं .. .. .. | ६७९ |
| ४ ,, उक्तमन्त्रस्य चतुर्थपादतात्पर्यदर्शनं .. .. .. | ६७९ |
| ५ ,, द्वितीयप्रोत्साहनमन्त्रस्य प्रथमपादतात्पर्यदर्शनं .. | ६७९ |
| ६ ,, प्रजाराष्ट्रानुकूल्यसम्पादनं .. .. .. .. | ६८० |
| ७ ,, उक्तमन्त्रस्य द्वितीयतृतीयपादस्य तात्पर्यदर्शनं .. | ६८० |
| ८ ,, तृतीयप्रोत्साहनमन्त्रस्य प्रथमपादतात्पर्यदर्शनं .. | ६८१ |
| ९ ,, उक्तमन्त्रस्य द्वितीयपादतात्पर्यदर्शनं .. .. | ६८१ |
| १० ,, उक्तमन्त्रस्य तृतीयपादतात्पर्यदर्शनं .. .. .. | ६८१ |
| ११ ,, चतुर्थप्रोत्साहनमन्त्रप्रथमपादतात्पर्यदर्शनं .. .. | ६८२ |
| १२ ,, उक्तमन्त्रस्य द्वितीयपादतात्पर्यदर्शनं .. .. .. | ६८२ |
| १३ ,, उक्तमन्त्रे [illegible] .. | ६८२ |

विषयः। पृष्ठे।

१४ मन्त्रे सुरभिमतीनाम्न्यृचां जपविधानं.. .. .. .. ६८२

१५ ,, अथ मार्जनविधानं.. .. .. .. .. .. ६८२

---

८ अनुवाके अश्वमेधतदीयपशुविषयप्रशंसा।

१ ,, अश्वमेधविधिप्रशंसादर्शनं.. .. .. .. .. ६८४

२ ,, मनुष्यपशुविधिप्रशंसा .. .. .. .. .. .. ६८४

३ ,, अश्वविधिप्रशंसा.. .. .. .. .. .. ६८५

४ ,, गोविधिप्रशंसा .. .. .. .. .. .. ६८५

५ ,, अजाविविधिप्रशंसा.. .. .. .. .. .. ६८५

६ ,, उत्सर्गविधिप्रशंसा .. .. .. .. .. .. ६८६

७ ,, उक्तसर्वपशूनां तारतम्येन प्रशंसा .. .. .. ६८६

८ ,, अश्वमेधानुष्ठानतद्वेदनयोः प्रशंसा .. .. .. ६८६

---

९ अनुवाके त्रिरात्रान्त्यदिवसीयपशूक्तिः।

१ ,, त्रिरात्रान्तर्गतप्रथमद्वितीयदिवसप्रशंसा .. .. ६८७

२ ,, द्वितीयेऽहनि पृष्ठस्तोत्रविषयकशाक्वरसाम्नो विधानं ६८७

३ ,, तृतीयदिवसीयपशुविशेषस्योक्तिः .. .. .. ६८८

४ ,, गव्यपशुदेवताविधानं .. .. .. .. .. ६८८

५ ,, त्रिरात्रावसानीयपशूक्तिः.. .. .. .. .. ६८८

६ ,, अनुबन्ध्याख्यपश्वनन्तरं पश्वन्तरविधानं.. .. .. ६८९

७ ,, वन्ध्यपशुभ्य ऊर्ध्वं पश्वन्तरविधिः .. .. .. ६८९

८ ,, पश्वन्तरकथनं.. .. .. .. .. .. .. ६८९

९ ,, उक्तपशूनामुत्सर्गः .. .. .. .. .. ६९०

## १० अनुवाके महिमाख्यहोमोक्तिः।


| विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|
| १ मन्त्रे महिमाख्यग्रहद्वयकथनं .. .. .. .. .. | ६९० |
| २ ,, उक्तग्रहेण यागविधानं .. .. .. .. .. | ६९१ |
| ३ ,, महिमयागस्य पुनः प्रशंसा.. .. .. .. .. | ६९१ |


## ११ अनुवाके शरीरहोमस्विष्टकृदाहुतिकथनं।


| | |
|---|---|
| १ ,, स्तेगान्दंष्ट्राभ्यामित्यादिचतुरनुवाकैः शरीरहोमः .. | ६९२ |
| २ ,, उक्तानुवाकसङ्ख्याविधानं.. .. .. .. .. | ६९३ |
| ३ ,, आरण्यकाण्डोक्तानुवाकान्तरकथनं .. .. .. | ६९३ |
| ४ ,, स्विष्टकृदाहुतिविधानं .. .. ... .. .. | ६९३ |
| ५ ,, जुहूबाधनार्थं साधनान्तरस्य विधानं.. .. .. | ६९४ |
| ६ ,, द्वितीयाहुतिसाधनान्तरविधानं.. .. .. .. | ६९४ |
| ७ ,, तृतीयाहुतिसाधनान्तरविधानं.. .. .. .. | ६९५ |


## १२ अनुवाके अश्वस्तोमीयहोमोक्तिः।


| | |
|---|---|
| १ ,, अश्वस्तोमीयहोमविधानं .. .. .. .. .. | ६९५ |
| २ ,, उक्तहोमीयद्रव्यविधानं .. .. .. .. .. | ६९५ |
| ३ ,, उक्तहोमीयमन्त्रसङ्ख्याविधानं .. .. .. .. | ६९६ |
| ४ ,, उक्ताहुतिन्यूनातिरिक्तसङ्ख्यानिवारणपूर्वकपूर्वोक्तसङ्ख्याप्रशंसा .. .. .. .. . .. | ६९६ |
| ५ ,, द्विपदाभिर्ऋग्भिर्होमविधानं .. .. .. .. | ६९६ |
| ६ ,, द्विपदाश्वस्तोमीयहोमयोः पौर्वापर्यविचारः .. .. | ६९७ |
| ७ ,, द्विपदाहोमानन्तरमितरहोमनिषेधः .. .. .. | ६९७ |

१३ सावित्रमष्टाकपालमित्याद्यनुवाकोक्तेष्टिषु संवत्सरानुष्ठानरूपविशेषकथनं।


| विषयः। | पृष्ठे। |
| --- | --- |
| १ मन्त्रे संवत्सरपर्यन्तं सावित्रेष्टेः कर्त्तव्यत्वोक्तिः | ६९८ |
| २ ,, उक्तेष्टिदेवताप्रशंसा | ६९८ |
| ३ ,, सायन्धृतिहोमप्रशंसा | ६९९ |
| ४ ,, इष्टिधृतीनां पुनः प्रशंसा | ६९९ |
| ५ ,, पुनरिष्टेः प्रशंसा | ७०० |
| ६ ,, सायम्प्रातर्होमप्रशंसा | ७०० |


१४ अनुवाके पूर्वानुवाकोक्तेष्टिषु गानविधिः।


| | |
| --- | --- |
| १ ,, पूर्वोक्तेष्टिषु ब्राह्मणद्वयकर्तृकगानविधानं | ७०० |
| २ ,, ब्राह्मणक्षत्रियाभ्यां गेयमित्युक्तिः | ७०१ |
| ३ ,, गानकालोक्तिः | ७०१ |
| ४ ,, स्विष्टकृत्पूर्वं ब्राह्मणगातव्यार्थदर्शनं | ७०२ |
| ५ ,, सायन्धृतिहोमकाले राजन्यगातव्यार्थदर्शनं | ७०३ |
| ६ ,, प्रत्येकगायकेन गीतित्रयं गातव्यमित्यस्योक्तिः | ७०३ |
| ७ ,, गायकदक्षिणाविधानं | ७०४ |


१५ अनुवाके अवभृथविषयकहोमविशेषोक्तिः।


| | |
| --- | --- |
| १ ,, अवभृथीयहोमविशेषोक्तिः | ७०४ |
| २ ,, मृत्यवे स्वाहेति मन्त्रस्यैकाहुतिपरत्वोक्तिः | ७०५ |
| ३ ,, आहुत्यन्तरविधानं | ७०६ |

| विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|
| ४ मन्त्रे उक्ताहुत्याक्षेपः .. .. .. .. .. .. | ७०६ |
| ५ ,, उक्ताक्षेपोत्तरदर्शनं.. .. .. .. .. .. | ७०६ |
| ६ ,, उक्ताहुतिप्रशंसा .. .. .. .. .. . | ७०७ |
| ७ ,, तृतीयाहुतिविधानं.. .. .. .. .. .. | ७०७ |
| ८ ,, उक्तहोमाधारनिरूपणं .. .. .. .. .. | ७०७ |

---

१६ अनुवाके उपाकरणमन्त्रव्याख्यानादुक्तिः।

| | |
|---|---|
| १ ,, नमो राज्ञे इति मन्त्रस्य प्रथमभागव्याख्या .. .. | ७०८ |
| २ ,, उक्तमन्त्रस्य द्वितीयभागतात्पर्यदर्शनं .. .. .. | ७०८ |
| ३ ,, तस्यैव तृतीयभागव्याख्यानं .. .. .. .. | ७०६ |
| ४ ,, तस्यैव चतुर्थभागव्याख्यानं .. .. .. .. | ७०६ |
| ५ ,, पुनस्तस्यैव पञ्चमभागव्याख्यानं .. .. .. .. | ७०६ |
| ६ ,, नमो राज्ञ इत्यनुवाकशेषसमाम्नातमन्त्रत्रयविनियोग-दर्शनं .. .. .. .. .. .. .. | ७०६ |
| ७ ,, आग्नेयादिपशुत्रयाणां विशालयूप आलम्भनं .. | ७१० |
| ८ ,, आग्नेयपशुप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ७१० |
| ९ ,, ऐन्द्राग्नपशुप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ७१० |
| १० ,, आश्विनपशुप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ७१० |
| ११ ,, फलगतचित्रप्रशंसा .. .. .. .. .. | ७१० |
| १२ ,, सप्तमकाण्डोक्तेष्टिविधानं .. .. .. .. | ७११ |
| १३ ,, चतुर्थकाण्डोक्तयाज्यानुवाक्याविधानं .. .. .. | ७११ |

१७ अनुवाके अश्वस्य रोगादिनिमित्तकप्रायश्चित्तोक्तिः ।


| विषयः । | | पृष्ठे । |
|---|---|---|
| १ मन्त्रे | रोगदोषपरिहारार्थकेष्टिविधानं .. .. .. | ७११ |
| २ ,, | आग्नेयेष्टिप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ७११ |
| ३ ,, | सौम्येष्टिप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ७१२ |
| ४ ,, | सावित्रेष्टिप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ७१२ |
| ५ ,, | अग्निसोमादिदेवतानां समूहाकारेण प्रशंसा .. | ७१२ |
| ६ ,, | अश्वत्वग्दोषप्रायश्चित्तविधानं .. .. .. .. | ७१२ |
| ७ ,, | उपद्रवकारिदेवताविशेषगृहीतेऽश्वे प्रायश्चित्तविधानं | ७१२ |
| ८ ,, | निवासस्थानप्राप्त्यभावे प्रायश्चित्तविधानं .. .. | ७१३ |
| ९ ,, | अश्वेन वडवादिध्याने हते सति प्रायश्चित्तविधानं .. | ७१३ |
| १०—१२ | उक्तकार्याङ्गभूतहविस्त्रयप्रशंसा.. .. .. .. | ७१३ |
| १३ ,, | एतत्प्रपाठकोक्तप्रायश्चित्तिनिगमनं .. .. .. | ७१४ |


---

१८ अनुवाके ब्रह्मौदनोक्तिः ।


| | | |
|---|---|---|
| १ ,, | शाखान्तरीयब्रह्मौदनेष्ट्योर्विकल्पानुवादः .. .. | ७१४ |
| २ ,, | इष्टिपक्षदूषणं .. .. .. .. .. .. .. | ७१५ |
| ३ ,, | शाखान्तरपक्षदूषणपूर्वकं स्वपक्षविधानं .. .. | ७१५ |
| ४ ,, | ब्रह्मौदनगतद्वादशसङ्ख्याप्रशंसा.. .. .. .. | ७१६ |


---

१९ अनुवाके विभुत्वादिद्वादशगुणैः अश्वमेधप्रशंसा ।


| | | |
|---|---|---|
| १—१२ | मन्त्रेषु अश्वमेधप्रशंसाविधायकानां प्रथमादिद्वादशान्तानां गुणानां क्रमेण प्रशंसा .. .. .. | ७१६ |


---

## २० अनुवाके अश्वमारणप्रकारोक्तिः।


| विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|
| १ मन्त्रे घृताक्तकम्बले अश्वसञ्ज्ञपनोक्तिः .. .. .. | ७१८ |
| २ ,, पितृमेधप्रयोज्यसामविधानं .. .. .. .. | ७१९ |
| ३ ,, उक्तास्तरणोपरि चर्मपटास्तरणविधानं .. .. | ७१९ |
| ४ ,, कृत्यधिवासोपरि सुवर्णखचितप्रथ्यास्थापनविधानं | ७१९ |
| ५ ,, प्रथ्योपरि सुवर्णफलकस्थापनं .. .. .. .. | ७१९ |
| ६ ,, कम्बलादिप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ७१९ |
| ७ ,, कृत्वनुष्ठानवेदनप्रशंसा .. .. .. .. .. | ७२० |


---

## २१ अनुवाके उत्तरवेद्युपवापोक्तिः।


| | |
|---|---|
| १ ,, सवर्येति नामनिर्वचनद्वारा तत्प्रशंसा.. .. .. | ७२० |
| २ ,, अश्वेतिनामनिर्वचनदर्शनं .. .. .. .. .. | ७२१ |
| ३ ,, अर्वेतिनामनिर्वचनदर्शनं .. .. .. .. .. | ७२१ |
| ४ ,, वाजीतिनामनिर्वचनदर्शनं .. .. .. .. | ७२२ |
| ५ ,, आदित्येतिनामनिर्वचनदर्शनं .. .. .. .. | ७२२ |
| ६ ,, उत्तरवेद्युपवापविधानं .. .. .. .. .. | ७२२ |
| ७ ,, एतद्वेदनप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ७२३ |
| ८ ,, अश्वमेधयोन्यायतनभूताग्न्यादित्यप्रशंसा .. .. | ७२३ |
| ९ ,, प्रकारान्तरेण तत्प्रशंसा .. .. .. .. .. | ७२३ |
| १० ,, उत्तरवेद्युपवापनिगमनं .. .. .. .. .. | ७२३ |

## २२ अनुवाके ऋषभालम्भविधानं।


| विषयः। | | पृष्ठे। |
|---|---|---|
| १ | मन्त्रे अश्वप्रोक्षणाद्यालम्भविधानं .. .. .. .. | ७२४ |
| २ | ,, अश्वाश्वमेधयोर्नामनिर्वचनेनाश्वप्रशंसा .. .. | ७२४ |
| ३ | ,, एतद्वेदनप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ७२५ |
| ४ | ,, पुनरश्वप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ७२५ |
| ५ | ,, एतद्वेदनप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ७२५ |
| ६ | ,, अश्वमेधयागतद्वेदनप्रशंसा .. .. .. .. | ७२५ |
| ७ | ,, पुनरप्यश्वस्य प्रकारान्तरेण प्रशंसा .. .. .. | ७२५ |
| ८ | ,, कृत्स्नानुष्ठानप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ७२६ |
| ९ | ,, ऋषभपशुविधानं .. .. .. .. .. .. | ७२६ |
| १० | ,, यागवेदनयोः प्रशंसा .. .. .. .. .. | ७२६ |


---

## २३ अनुवाके अश्वावयवेषूपासनोक्तिः।


| | | |
|---|---|---|
| १ | ,, अश्वलोमध्यानविधानं .. .. .. .. .. .. | ७२७ |
| २ | ,, अश्वावयवान्तरध्यानविधानं .. .. .. .. | ७२७ |
| ३ | ,, भूमौ अश्वविपरिवर्त्तनध्यानविधानं .. .. .. | ७२७ |

# १० प्रपाठके सावित्रचयनोक्तिः।

## १ अनुवाके नवसु रेखासु इष्टकोपधानोक्तिः।


| | विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|---|
| १ मन्त्रे | वाह्यनवमलेखायां पञ्चदशपूर्वपक्षाहोपधानं .. .. | ७२९ |
| २ ,, | उक्ताह्नानामन्तराले पञ्चदशमुहूर्त्तोपधानं .. .. | ७३० |
| ३ ,, | पञ्चदशपूर्वपक्षरात्रिस्वरूपेण पञ्चदशेष्टकोपधानं.. | ७३१ |
| ४ ,, | उक्तरात्रीणामन्तराले तासां पञ्चदशमुहूर्त्तस्वरूपेण पञ्चदशेष्टकोपधानं .. .. .. .. .. | ७३१ |
| ५ ,, | अपरलेखायां पञ्चदशापरपक्षस्वरूपेण पञ्चदशेष्टकोपधानं .. .. .. .. .. .. | ७३१ |
| ६ ,, | सप्तम्यां लेखायां तेषामन्तरालेऽपरपक्षीयदिवसपञ्चदशमुहूर्त्तस्वरूपेण पञ्चदशेष्टकोपधानं .. .. | ७३१ |
| ७ ,, | उक्तदिवसीयरात्रिस्वरूपेण पञ्चदशेष्टकोपधानं .. | ७३२ |
| ८ ,, | षष्ठ्यां लेखायां उक्तरात्रीणामन्तराले तत्पञ्चदशमुहूर्त्तस्वरूपेण पञ्चदशेष्टकोपधानं .. .. .. | ७३२ |
| ९ ,, | पञ्चम्यां लेखायां द्वादशपूर्वपक्षस्वरूपेण द्वादशेष्टकोपधानं .. .. .. .. .. .. | ७३२ |
| १० ,, | चतुर्थ्यां लेखायां द्वादशापरपक्षतया द्वादशेष्टकोपधानं | ७३३ |
| ११ ,, | तृतीयस्यां लेखायां त्रयोदशमासस्वरूपेण त्रयोदशेष्टकोपधानं .. .. .. .. .. .. | ७३३ |
| १२ ,, | तृतीयलेखायां अष्टप्रकारसिकतोपधानं .. .. | ७३३ |
| १३ ,, | द्वितीयलेखायां पञ्चदशमुहूर्त्तस्वरूपेण पञ्चदशेष्टकोपधानं .. .. .. .. .. .. .. | ७३४ |

विषयः। पृष्ठे।
१४ मन्त्रे प्रथमलेखायां यज्ञक्रतुरूपेण षडिष्टकोपधानं .. ७३४
१५ „ नाभ्यां प्राजापत्यादिसंवत्सरनामभिश्चतुरिष्टकोपधानं ७३४

---

## २ अनुवाके स्वयमातृण्णोपधानोक्तिः।

१,२ मन्त्रयोः पूर्वादिचतुर्दिक्षु क्रमेण स्वयमातृण्णारूपेण चतुरिष्टकोपधानं.. .. .. .. .. .. ७३५

---

## ३ अनुवाके चित्युपस्थानोक्तिः।

१ मन्त्रे अध्वर्युकर्तृकचित्युपस्थानं .. .. .. .. .. ७३६

---

## ४ अनुवाके यजमानकृतोपस्थानोक्तिः।

१ „ यजमानकृतचित्युपस्थानकथनं .. .. .. .. ७३८

---

## ५ अनुवाके होतुरनुशंसनोक्तिः।

१ „ अग्निमुद्दिश्य होत्रनुशंसनकथनं.. .. .. .. ७४१

---

## ६ अनुवाके यजमानमुखविमार्जनोक्तिः।

१ „ आऊतिसंश्रवाद्येन यजमानमुखशोधनकथनं .. ७४२

---

## ७ अनुवाके होमविधानं ।


| विषयः । | पृष्ठ । |
|---|---|
| १ मन्त्रे एकविंशत्याहुतिहोमकथनं .. .. .. .. | ७४३ |


## ८ अनुवाके मृत्युग्रहोक्तिः ।


| | |
|---|---|
| १ „ औदुम्बरपात्रेण मृत्युप्रीत्यर्थं ग्रहग्रहणादिविधानं.. | ७४४ |
| २ „ तदुद्दिश्य होमोक्तिः.. .. .. .. .. .. | ७४५ |
| ३ „ इडाभक्षणानन्तरं ग्रहभक्षणं .. .. .. .. | ७४५ |
| ४ „ प्राणनिर्वाहप्रतिक्रोक्तिः .. .. .. .. .. | ७४५ |


## ९ अनुवाके सावित्राग्निचयनब्राह्मणकथनं ।


| | |
|---|---|
| १ „ ध्यानात्मकसावित्राग्निविद्याभिधानं .. .. .. | ७४९ |
| २ „ विधिस्थितमन्त्रद्वयविषयनिर्णयोक्तिः.. .. .. | ७४९ |
| ३ „ होमादूर्द्ध्वमपामुपसर्पणं .. .. .. .. .. | ७५० |
| ४ „ सावित्राग्निचयनविषयकविद्याकथनार्थमाख्यायिकोक्तिः .. .. .. .. .. .. .. | ७५० |
| ५ „ उक्ताख्यानान्तर्गतब्रह्मचारिप्रश्नोत्तरपरम्परादर्शनं.. .. .. .. .. .. .. . | ७५१ |
| ६ „ सावित्राग्निदेवताविषये मात्सर्यपूर्वकसंवादकरणनिषेधः .. .. .. .. .. .. .. | ७५२ |
| ७ „ विपक्षे बाधकोपन्यासमुखेन संवादनिषेधप्रशंसा .. | ७५३ |
| ८ „ शुक्लपक्षस्याहोरात्रनामप्रतिपादकयोः प्रथमतृतीयानुवाकयोस्तात्पर्य दर्शितं .. .. .. .. | ७५३ |

| | विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|---|
| ९ मन्त्रे | कृष्णपक्षाहोरात्रप्रतिपादकपञ्चमसप्तमानुवाकतात्पर्यदर्शनं .. .. .. .. .. .. .. | ७५४ |
| १० ,, | उक्तानुवाकतात्पर्यनिगमनं .. .. .. .. | ७५४ |
| ११ ,, | शुक्लकृष्णपक्षीयाहरादिगतमुहूर्तानां सावित्राग्निस्वरूपदर्शनं .. .. .. .. .. .. | ७५४ |
| १२ ,, | द्वादशशुक्लकृष्णपक्षत्रयोदशमासानां सावित्राग्निरूपत्वदर्शनं.. .. .. .. .. .. .. | ७५४ |
| १३ ,, | एजत्का इत्यनुवाकोक्तसिकतानां सावित्राग्निरूपत्वदर्शनं .. .. .. .. .. .. .. | ७५५ |
| १४ ,, | यज्ञक्रतुसंवत्सरर्तूनां सावित्राग्निरूपत्वदर्शनं .. | ७५५ |
| १५ ,, | मुहूर्तविशेषाणां सावित्राग्निरूपत्वदर्शनं .. .. | ७५५ |
| १६ ,, | सावित्राग्निवेदनफलनिर्वचनार्थमुपाख्यानोक्तिः .. | ७५५ |
| १७ ,, | स्वयमेव तद्वेदितुः फलप्राप्तिकथनं .. .. .. | ७५६ |
| १८ ,, | पुनरप्युक्तफलस्य विशदीकरणार्थं कस्यचिदृषेर्वृत्तान्तकथनं .. .. .. .. .. .. .. | ७५६ |
| १९ ,, | सावित्राग्न्युपासकफलविशदीकरणं .. .. .. | ७५६ |
| २० ,, | उक्तफलस्योपाख्यानान्तरेण दृढीकरणं .. .. | ७५७ |
| २१ ,, | उपाख्यानदृढीकृतफलोपसंहारोक्तिः.. .. .. | ७५८ |
| २२ ,, | ऋगुदाहरणद्वारा सावित्रवेदनप्रशंसा .. .. | ७५८ |
| २३ ,, | उक्ताया ऋचः सङ्क्षेपेण तात्पर्यदर्शनं.. .. .. | ७६० |
| २४ ,, | वेदनीयस्वरूपदर्शनं.. .. .. .. .. .. | ७६० |
| २५ ,, | उक्तवेद्यस्वरूपवेदितुस्तत्प्राप्तिरूपफलदर्शनं .. .. | ७६० |

## १० अनुवाके सावित्राग्निविद्यावयवविशेषवेदनोक्तिः ।


| विषयः । | | पृष्ठे । |
|---|---|---|
| १ | मन्त्रे उक्तविद्यावयवस्य मधुत्वसम्पादनपूर्वककिञ्चिद्वेदनदर्शनं .. .. .. .. .. .. .. | ७६१ |
| २ | ,, उक्तवेदनाभावे तत्फलाभावदर्शनं .. .. .. | ७६२ |
| ३ | ,, अनुवाकचतुष्टयोक्ताहोरात्रनामधेयवेदनविधानं .. | ७६२ |
| ४ | ,, द्वितीयचतुर्थषष्ठाष्टमानुवाकोक्तमुहूर्त्तनामधेयवेदनविधानं .. .. .. .. .. .. .. | ७६३ |
| ५ | ,, शुक्लकृष्णपक्षार्द्धमासचैत्रादिमासनामधेयविज्ञानफलं | ७६३ |
| ६ | ,, चतुर्दशाद्यनुवाकोक्तयज्ञादिनामवेदनविधानं .. | ७६३ |
| ७ | ,, त्रयोदशानुवाकोक्तक्षुद्रमुहूर्त्तनामवेदनविधानं .. | ७६४ |
| ८ | ,, उक्ततत्त्ववेदनस्य प्रशंसा .. .. .. .. .. | ७६४ |


---

## ११ अनुवाके विद्याप्रशंसा ।


| | | |
|---|---|---|
| १ | ,, विवेक्यविवेकिपुरुषद्वयोपन्यासः .. .. .. | ७६५ |
| २ | ,, आत्मज्ञानरहितपुरुषद्वयदर्शनं.. .. .. .. | ७६५ |
| ३ | ,, उक्तोभयविधपुरुषयोर्विवेकिन एव पुरुषार्थदर्शनं | ७६६ |
| ४ | ,, विद्यारहितस्य सम्यक्फलाभावरूपव्यतिरेकदर्शनं | ७६६ |
| ५ | ,, विद्यावतः सम्पूर्णफलावाप्तिदर्शनं .. .. .. | ७६७ |
| ६ | ,, उक्तविद्याप्रशंसार्थमुपाख्यानदर्शनं .. .. .. | ७६८ |
| ७ | ,, उक्तविद्याज्ञस्यान्यस्याप्युक्तफलदर्शनं .. .. .. | ७६९ |
| ८ | ,, उक्तफलाधिकशङ्कावारणं.. .. .. .. .. | ७६९ |
| ९ | ,, सावित्राग्निसम्बन्धिसर्वदेवप्राप्तिरूपफलस्य दर्शनं | ७७० |
| १० | ,, सावित्रनामप्रशंसा .. .. .. .. .. .. | ७७० |

## ११ प्रपाठके नाचिकेताग्निचयनोक्तिः ।

### १ अनुवाके इष्टकोपधानप्रकारकथनं ।


| विषयः । | पृष्ठे । |
|---|---|
| १—२१ मन्त्रेषु एकविंशतीष्टकानां क्रमेणोपधानं .. .. | ७७२ |


### २ अनुवाके होमविशेषमन्त्रोक्तिः ।


| | |
|---|---|
| १ मन्त्रे शतरुद्रीयप्रतिनिधीभूतमन्त्रविशेषोक्तिः .. .. | ७७९ |


### ३ अनुवाके होमविशेषमन्त्रोक्तिः ।


| | |
|---|---|
| १ ,, वसोर्धाराप्रतिनिधीभूतमन्त्रविशेषोक्तिः .. .. | ७८२ |


### ४ अनुवाके होमविशेषमन्त्रोक्तिः ।


| | |
|---|---|
| १ ,, अन्नहोमकथनं .. .. .. .. .. .. | ७८३ |


### ५ अनुवाके होमविशेषमन्त्रकथनम् ।


| | |
|---|---|
| १ ,, विश्वप्रीनामकहोमविधानं.. .. .. .. .. | ७८५ |

## ६ अनुवाके अग्न्युपस्पर्शनादिमन्त्रविशेषोक्तिः ।


| विषयः । | पृष्ठं । |
|---|---|
| १ मन्त्रे अग्न्युपस्पर्शनं .. .. .. .. .. .. .. | ७८७ |
| २,३ मन्त्रयोरिष्टकोपधानं .. .. .. .. .. .. .. | ७८८ |
| ४—८ मन्त्रेषु चितिस्पर्शः .. . .. .. .. .. | ७८९ |
| ९ ,, चात्वालाहृतपुरीषस्य वैश्वानर्य्यर्चा चितावध्यूहनं .. | ७९१ |


## ७ अनुवाके नाचिकेताग्निदेवतोपासनोक्तिः ।


| | |
|---|---|
| १ मन्त्रे नाचिकेताग्निदेवताध्यानं .. .. .. .. .. .. | ७९२ |
| २ ,, चयनतद्ध्यानयोः समानफलदर्शनं .. .. .. | ७९२ |
| ३ ,, तदग्नेराधारत्वेन हिरण्यध्यानविधानं.. .. .. | ७९३ |
| ४ ,, हिरण्यशरीरत्वेनाग्नेर्ध्यानं .. .. .. .. | ७९३ |
| ५ ,, हिरण्यध्यानफलान्तरदर्शनं .. .. .. .. | ७९३ |
| ६ ,, अग्निचित्तदुपासकप्राप्यलोकविभागदर्शनं .. .. | ७४९ |
| ७ ,, नाचिकेताग्निचयनकर्तुस्तदुपासकस्य च उपरितन-लोकप्राप्तिदर्शनं .. .. .. .. .. .. | ७९५ |
| ८ ,, ब्रह्मलोकं गतस्य कालपारतन्त्र्याभावदर्शनं .. .. | ७९५ |


## ८ अनुवाके ब्रह्मलोकप्राप्तिलक्षणमृत्युराहित्यरूपतत्-फलस्योपाख्यानेन दर्शनं ।


| | |
|---|---|
| १ ,, नाचिकेतसः प्रश्नदर्शनं .. .. .. .. .. .. | ७९५ |
| २ ,, तदीयप्रश्नोत्तरदर्शनं .. .. .. .. .. .. | ७९६ |
| ३ ,, वागनुग्रह प्रकार दर्शनं .. .. .. .. .. .. | ७९७ |

| विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|
| ४ मन्त्रे वाग्देवताकर्तृकं नाचिकेतसः बुद्धिप्रदानं .. .. | ७९७ |
| ५ ,, नाचिकेतसो वाग्देवताशिक्षानुसारेणाचरणदर्शनं | ७९८ |
| ६ ,, नाचिकेतः सत्कारदर्शनं .. .. .. .. .. | ७९८ |
| ७—८ मन्त्रयोर्नाचिकेतोवृतवरद्वयदर्शनं .. .. .. .. | ७९९ |
| ९ मन्त्रे श्रौतस्मार्तकर्माक्षयफलदर्शनं .. .. .. .. | ७९९ |
| १० ,, प्रश्नोत्तररूपेण नाचिकेतःप्राप्ततृतीयवरदर्शनं .. | ८०० |
| ११ ,, प्रजापतिवृत्तान्तकथनमुखेन दक्षिणाप्रशंसा .. .. | ८०० |
| १२ ,, महर्षिवृत्तान्तेन पुनर्दक्षिणाप्रशंसा .. .. .. | ८०२ |


---

## ९ अनुवाके नाचिकेताग्निचयनप्रयोगोक्तिः।


| | |
|---|---|
| १ ,, अग्निचयनदेशविशेषदर्शनं .. .. .. .. | ८०३ |
| २ ,, नाचिकेताग्निचयनकर्तुः फलबाहुल्यप्रपञ्चः .. .. | ८०४ |
| ३ ,, द्रव्यादिसमृद्धिलक्षणफलदर्शनं .. .. .. .. | ८०४ |
| ४ ,, पशुफलार्थं प्रकारान्तरदर्शनं .. .. .. .. | ८०५ |
| ५ ,, ज्यैष्ठ्यादिफलार्थं प्रकारान्तरदर्शनं .. .. .. | ८०६ |
| ६ ,, केवलज्यैष्ठ्यफलस्य प्रकारान्तरदर्शनं .. .. .. | ८०७ |
| ७ ,, स्वर्गार्थं प्रकारान्तरदर्शनं .. .. .. .. | ८०७ |
| ८ ,, तेजआदिप्राप्त्यर्थकप्रयोगे किञ्चिद्विशेषविधानं .. | ८०८ |
| ९ ,, विश्वासबाहुल्यं दक्षिणाबाहुल्यं च कामयमानस्य किञ्चिद्विशेषविधानं .. .. .. .. .. | ८०८ |
| १० ,, सर्वप्रयोगसाधारणानुष्ठानविशेषदर्शनं .. .. | ८०९ |

## १० अनुवाके नाचिकेताग्निचयनप्रयोगप्रशंसा ।


| विषयः । | पृष्ठे । |
| --- | --- |
| १ मन्त्रे इष्टकाप्रशंसा.. .. .. .. .. .. .. | ८१० |
| २ ,, नाचिकेताग्निचयनतद्वेदनप्रशंसा .. .. .. | ८१० |
| ३ ,, नाचिकेताग्नेः प्रकारान्तरेण ध्यानविधानं .. .. | ८११ |
| ४ ,, पुनरपि प्रकारान्तरेणोक्ताग्निध्यानविधानं .. .. | ८१२ |


---

# १२ प्रपाठके चातुर्होत्रवैश्वसृजचयनद्वयोक्तिः ।

## १ अनुवाके चातुर्होत्रचयनविध्युक्तिः ।


| | |
| --- | --- |
| १ मन्त्रे दिवःश्येनीष्टिसम्बन्धियाज्यानुवाक्याप्रतीकोक्तिः .. | ८१३ |


---

## २ अनुवाके दिवःश्येनीष्टिकथनं ।


| | |
| --- | --- |
| १ मन्त्रे दिवःश्येनीष्टिविधानार्थं स्तुतिः .. .. .. .. | ८१५ |
| २ ,, प्रथमेष्टिविधानं .. .. .. .. .. .. | ८१६ |
| ३ ,, उपहोमविशेषविधानं .. .. .. .. .. | ८१८ |
| ४ ,, द्वितीयेष्टिविधानं .. .. .. .. .. .. | ८१८ |
| ५ ,, तृतीयेष्टिविधानं .. .. .. .. .. .. | ८१८ |

| विषयः। | पृष्ठे। |
|---|---|
| ६ मन्त्रे चतुर्थेष्टिविधानं .. .. .. .. .. .. | ८१९ |
| ७ ,, पञ्चमेष्टिविधानं .. .. .. .. .. .. | ८२० |
| ८ ,, षष्ठेष्टिविधानं .. .. .. .. .. .. | ८२१ |
| ९ ,, सप्तमेष्टिविधानं .. .. .. .. .. .. | ८२१ |
| १० ,, उक्तेष्टिसङ्घातरूपकर्मोक्तिः .. .. .. .. | ८२२ |


---

२ अनुवाके आपाद्याख्येष्टियाज्यानुवाक्याकथनं।


| | |
|---|---|
| १ ,, तपसे चरुमित्यस्य हविषः पुरोऽनुवाक्योक्तिः .. | ८२३ |
| २ ,, उक्तहविषो याज्याकथनं.. .. .. .. .. | ८२४ |
| ३ ,, श्रद्धायै चरुमित्यस्य हविषः पुरोऽनुवाक्योक्तिः .. | ८२४ |
| ४ ,, उक्तहविषो याज्याकथनं.. .. .. .. .. | ८२५ |
| ५ ,, सत्याय चरुमित्यस्य हविषः पुरोऽनुवाक्योक्तिः .. | ८२६ |
| ६ ,, उक्तहविषो याज्याकथनं.. .. .. .. .. | ८२६ |
| ७ ,, मनसे चरुमित्यस्य हविषः पुरोऽनुवाक्योक्तिः .. | ८२६ |
| ८ ,, उक्तहविषो याज्याकथनं.. .. .. .. .. | ८२७ |
| ९ ,, चरणाय चरुमित्यस्य हविषः पुरोऽनुवाक्योक्तिः .. | ८२८ |
| १० ,, उक्तहविषो याज्याकथनं .. .. .. .. .. | ८२८ |
| ११ ,, अथाग्नेयमष्टाकपालमित्यस्य हविषो याज्यानुवाक्ययोः प्रतीकद्वयदर्शनं .. .. .. .. | ८२९ |
| १२ ,, अथानुमत्यै चरुमित्यस्य हविषो याज्यानुवाक्ययोः प्रतीकद्वयदर्शनं .. .. .. .. .. | ८२९ |
| १३ ,, स्विष्टकृतः याज्यानुवाक्ययोः प्रतीकद्वयदर्शनं .. | ८२९ |